₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जून 2016

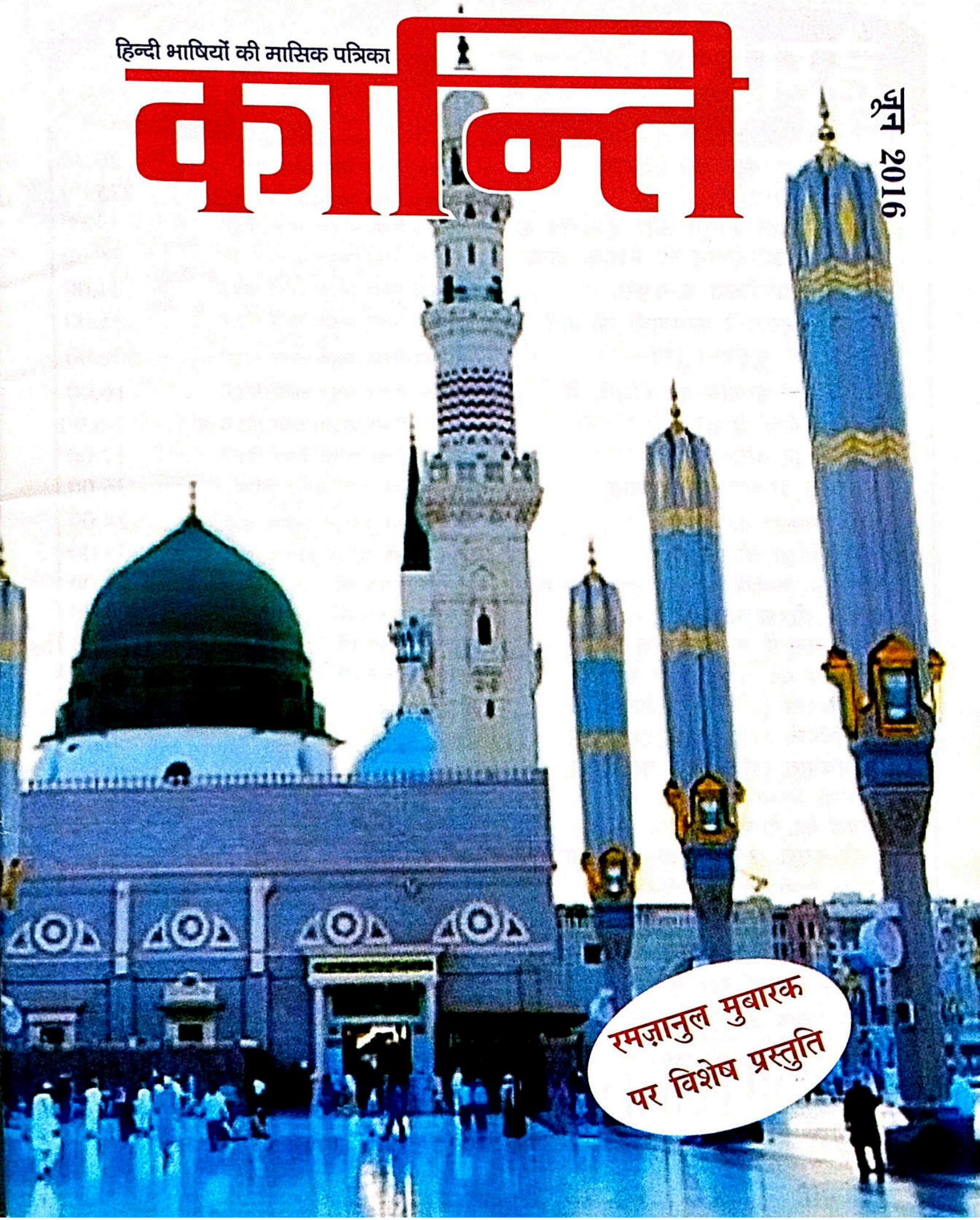

रमज़ानुल मुबारक
पर विशेष प्रस्तुति

हमारी नई पुस्तकें

कुरआन का ख़ानदानी निज़ाम	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	26.00
इस्लाम की दावत	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	275.00
मानव-रचित क़ानून और ईश्वरीय क़ानून	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	14.00
इस्लामी आन्दोलन के नैतिक आधार	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	25.00
इस्लामी तज़किया-ए-नफ़्स	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	24.00
तहरीके-इस्लामी कामयाबी की शर्तें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	35.00
तफ़हीमुल कुरआन (भाग-२)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	500.00
झाड़-फूँक इस्लाम की रौशनी में	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम कैसे फैला?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	36.00
कुव्वत का असल राज़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
सन्तुलन इस्लाम का स्वाभाव	डा० मुहम्मद सउद आलम क़ासिमी	36.00
समलैंगिकता का फ़ितना	डा० मुहम्मद रज़ीयुल-इस्लाम नदवी	24.00
घरेलू हिंसा और इस्लाम	डा० मुहम्मद रज़ीयुल-इस्लाम नदवी	38.00
रमज़ानः तब्दीली और इन्क़िलाब का महीना	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	25.00
हदीस सौरभ भाग-५	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	160.00
सूफ़ी बुज़ुर्गों की अनमोल बातें	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	20.00
अध्यात्म का महत्व और इस्लाम	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	20.00
सहाबियात (रज़ि०) के हालात-१	तालिब हाशमी	66.00
सहाबियात (रज़ि०) के हालात-२	तालिब हाशमी	66.00
सहाबियात (रज़ि०) के हालात-३	तालिब हाशमी	66.00
जन्नती बच्चा	माइल ख़ैराबादी	20.00
नीयत का फल	माइल ख़ैराबादी	35.00
प्यारे रसूल (सल्ल०) के प्यारे साथी	माइल ख़ैराबादी	22.00
रूदाद जमाअते इस्लामी-६		115.00
पैग़म्बर (सल्ल०) की बातें	अब्दुर्रब करीमी	25.00
अच्छी बातें अच्छे काम	मतीन तारिक़ बाग़पती	110.00
हक़ की दावत और ग़ैर मुस्लिम	मतीन तारिक़ बाग़पती	16.00
एकेश्वरवाद और न्याय की स्थापना	मौलाना मुहम्मद जरजीस करीमी	56.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 12 जून 2016

ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें ईशपरायणता का गुण पैदा होगा । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

नअत

क्या बताए कोई मर्तबा[1] आपका
मद्हख़्वां[2] है ख़ुदा, मुस्तफ़ा आपका

फ़तहे-मक्का[3] भी इक मोजिज़ा[4] आपका
कुफ़्र मुंह देखता रह गया आपका

रहबरी[5] है तो बस रहबरी आपकी
रास्ता है तो बस रास्ता आपका

उम्मते-मुसलिमा[6] कुछ मक़ामी[7] नहीं
कायनाती[8] है ये दायरा आपका

आपको क़त्ल करने जो आया था वो
आपको देखकर हो गया आपका

आज की उलझनों में फंसी ज़िन्दगी
पूछती फिर रही है पता आपका

देख लो मुंह के बल गिर पड़ा वो निज़ाम[9]
जो उड़ाता रहा मुज़हका[10] आपका

एक लम्हा न ठहरेंगे झूटे नबी
नाम तो लीजिएगा ज़रा आपका

आपकी नुक्तासंजी[11] से ऐसा लगा
मस्अले[12] मानते हैं कहा आपका

इक कसक इक तड़प मांगता है 'हफ़ीज़'
दे के अल्लाह को वास्ता आपका ।

1. दर्जा 2. प्रशंसक 3. मक्का-विजय 4. चमत्कार 5. नेतृत्व, रहनुमाई 6. मुस्लिम समुदाय 7. स्थानीय 8. विश्वव्यापी 9. जीवन-व्यवस्था 10. खिल्ली, उपहास, हंसी 11. किसी चीज़ के मर्म और बारीकियों को समझना 12. समस्याएं ।

● हफ़ीज़ मेरठी



कहां क्या है ?

नअत	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
रमज़ान के रोज़े (हदीस मंजरी)		6
ईश्वरीय आदेशों का अनुपालन आवश्यक (संपादकीय)		7
एक अनुभव ऐसा भी (आपके पत्र)		9
अनुशासन की महत्ता (लघुकथा)	–रामस्वरूप झैवर	11
परलोक की अवधारणा (आस्था)	–मौलाना फ़ारूक़ ख़ां	13
पारलौकिक जीवन	–मुफ़्ती तंज़ीम आलम क़ासिमी	15
नेता (कविता)	–आचार्य राकेश बाबू 'ताबिश'	17
डॉ॰ अम्बेडकर और जोगेन्द्रनाथ मंडल (दृष्टिकोण)	–अ॰ रशीद ख़ान	18
साइकिल (कहानी)	–जयप्रकाश वाल्मीकि	19
लोकलुभावन बाल कविताएं (पुस्तक-समीक्षा)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	24
हम रमज़ान कैसे गुज़ारें ? (विशेष आयोजन)	–मौलाना अली मियां नदवी	26-27
रोज़े की विशिष्ट महत्ताएं	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	30
रमज़ान के रोज़े और चरित्र निर्माण	–डॉ॰ मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान	31
रोज़े के सामाजिक प्रभाव	–डॉ॰ परवेज़ अख़्तर वारसी	34
शिक्षा का महत्व (ज्ञान-विज्ञान)	–मुहम्मद निज़ामुद्दीन	35
मुमताज़ महल (अतीत के झरोखे से)		37
ओलंपिक खेलों का इतिहास (खेल-खिलाड़ी)	–ए॰ एन॰ शिब्ली	41
बाल श्रम (कविता)	–ओमप्रकाश बजाज	43
शीतल पेय लें, मगर संभलकर (स्वास्थ्य चर्चा)	–विद्या प्रकाश	44
रोज़गार साइबर विंडो (कैरियर)		45
शोर के ख़िलाफ़...(पर्यावरण)	–शबाना अली	47
ज़िम्मेदारी (बालवीथी)	–पी॰ जे॰ सिंह	49
दिल्ली का गुड़ियाघर	–गरिमा	50

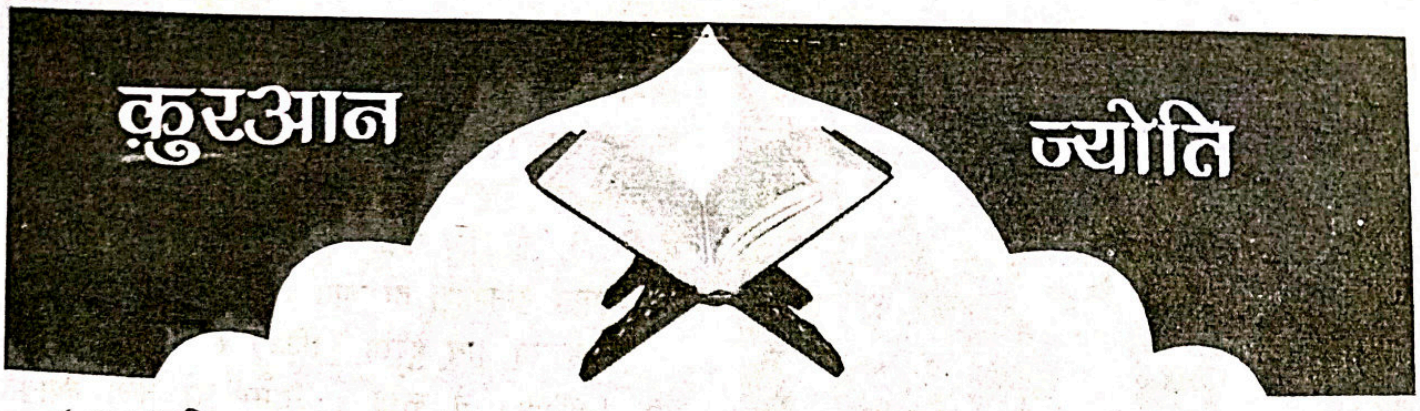

(109) फिर तुम्हारा क्या विचार है कि अच्छा इन्सान वह है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह के डर और उसकी प्रसन्नता की चाहत पर रखी हो या वह जिसने अपनी इमारत की नींव एक घाटी की खोखली कमज़ोर कगार पर[103] उठायी और वह उसे लेकर सीधी जहन्नम की आग में जा गिरी ? ऐसे ज़ालिम लोगों को अल्लाह कभी सीधी राह नहीं दिखाता।[104] (110) यह इमारत जो उन्होंने बनायी है, सदैव उनके दिलों में अनिश्चितता की जड़ बनी रहेगी (जिसके निकलने की अब कोई शक्ल नहीं) अलावा इसके कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएं।[105] अल्लाह सर्वज्ञ और तत्वदर्शी है।

(111) वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान और उनके माल जन्नत के बदले में ख़रीद लिए हैं।[106]

–क़ुरआन, 9 : 109-111

---

103. अरबी में शब्द 'जुरूफ़' प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ किसी नदी या दरिया के उस किनारे के लिए प्रयुक्त होता है जिसके नीचे की मिट्टी को पानी ने काट-काटकर वहा दिया हो और ऊपर का हिस्सा बेसहारा खड़ा हो। जो लोग अपने कर्म का आधार अल्लाह के प्रति निर्भयता और उसकी प्रसन्नता से विमुखता पर रखते हैं उनकी ज़िन्दगी के निर्माण को यहां उस इमारत से उपमा दी गयी है जो नदी के ऐसे खोखले अस्थिर किनारे पर उठायी गयी हो।

104. 'सीधी राह' अर्थात वह रास्ता जिससे मनुष्य का मनोरथ पूरा होता है और वह वास्तविक सफलता की मंज़िल पर पहुंचता है।

105. अर्थात उन लोगों ने निफ़ाक़ भरे छल-कपट का इतना बड़ा अपराध करके अपने दिलों को सदा-सर्वदा के लिए ईमान की क्षमता से वंचित कर लिया है और बेईमानी का रोग इस तरह उनके दिलों के एक-एक नस में घुस गया है कि जब तक उनके दिल बाक़ी हैं, यह रोग भी उनमें मौजूद रहेगा।

106. यहां ईमान के उस मामले को जो अल्लाह और बन्दे के बीच तय होता है, 'क्रय-विक्रय' कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि ईमान वास्तव में एक समझौता है जिसके अनुसार बन्दा अपने प्राण और अपना धन अल्लाह के हाथ बेच देता है और उसके मुआवज़े में अल्लाह की ओर से इस वादे को क़बूल कर लेता है कि मरने के बाद दूसरी ज़िन्दगी में वह उसे जन्नत प्रदान करेगा। इस महत्वपूर्ण विषय के निहित अर्थों को समझने के लिए आवश्यक है कि सबसे पहले इस क्रय-विक्रय की वास्तविकता को अच्छी तरह मन-मस्तिष्क में बिठा लिया जाए। जहां तक मूल वास्तविकता का ताल्लुक़ है, उसके अनुसार तो इन्सान की जान व माल का स्वामी सर्वोच्च अल्लाह ही है, इसलिए यह क्रय-विक्रय इस अर्थ में नहीं है कि जो चीज़ इन्सान की है, अल्लाह उसे ख़रीदना चाहता है। बल्कि इस मामले का सही रूप यह है कि जो चीज़ अल्लाह की है और जिसे उसने अमानत के तौर पर इन्सान के हवाले किया है और जिसमें अमानतदार रहने या ख़ियानत करने वाला बन जाने की स्वतंत्रता उसने इन्सान को दे रखी है, उसके बारे में वह इन्सान से मांग करता है कि तू राज़ी-ख़ुशी से (न की मजबूरी से) मेरी चीज़ को मेरी ही चीज़ मान ले और ज़िन्दगी-भर उसमें साधिकार स्वामी की हैसियत से नहीं, बल्कि अमानतदार होने की हैसियत से ख़र्च करना स्वीकार कर ले। क्रय-विक्रय की इस वास्तविकता को समझ लेने के बाद अब उसमें अन्तर्निहित अर्थ का जायज़ा लीजिए :

(जारी)

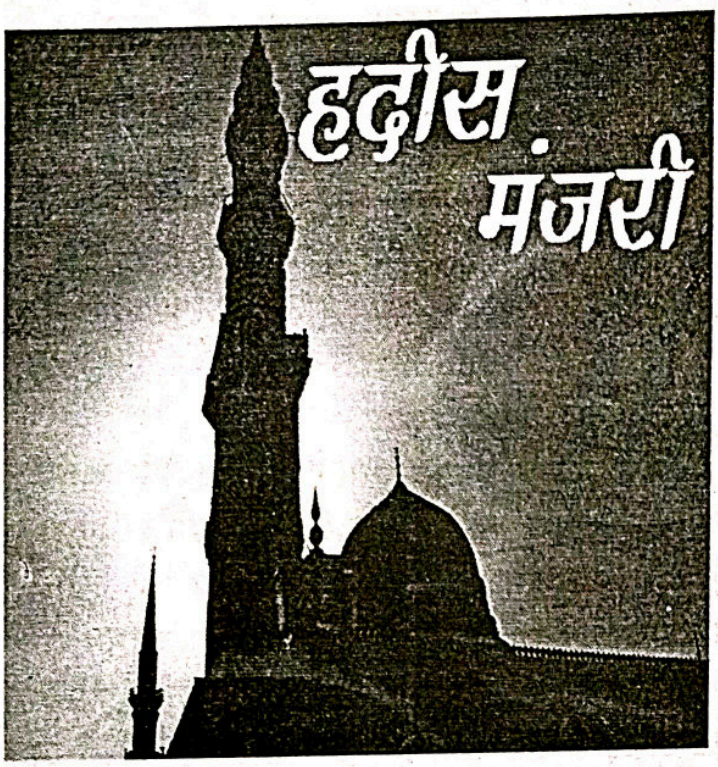

रमज़ान के रोज़े की अनिवार्यता और उनसे संबंधित चीज़ों का महात्म्य

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब रमज़ान आता है, तो जन्नत के द्वार खोल दिये जाते हैं, और दोज़ख़ के द्वार बन्द कर दिये जाते हैं और शैतानों को जकड़ दिया जाता है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "चांद देखकर रोज़ा रखना शुरू करो और (ईद का) चांद देखकर रोज़ा रखना समाप्त करो । और यदि (बादल आदि के कारण) 'शाबान' की 29 तारीख़ का चांद तुम्हें दिखायी न दे, तो 'शाबान' के तीस दिन पूरे कर लो ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम । ये शब्द बुख़ारी के हैं । मुस्लिम की रिवायत में आया है : "यदि बादल छाये हों, तो तीस दिन के रोज़े रखो ।"

● हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) लोगों में सबसे बढ़कर दानशील थे । और रमज़ान में जबकि आप जिबरील (अलै॰) से मुलाक़ात करते, तो आपकी दानशीलता और भी बढ़ जाती थी । जिबरील (अलै॰) रमज़ान की हर रात में आपसे मुलाक़ात करते और आपके साथ क़ुरआन का पठन-पाठन करते । और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब जिबरील (अलै॰) से मिलते, तो आप नेकी में वर्षा लाने वाली हवा से भी बढ़कर दानशील हो जाते । –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "तुममें से कोई व्यक्ति रमज़ान से पहले एक या दो दिन के रोज़े न रखे सिवाय इसके कि कोई व्यक्ति पहले से उस दिन रोज़ा रखता रहा हो, तो वह रोज़ा रख ले ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत एकज़ान अम्मार बिन यासिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि जिस किंसी ने सन्देह वाले दिन रोज़ा रखा, उसने अबुल क़ासिमी (सल्ल॰) की अवज्ञा की ।

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) जब नया चांद देखते, तो कहते : "अल्लाहुम्मा अहिल लहू अलैना बिल अम्ने वल ईमान, वस्सलामति वल इस्लाम, रबी व रब्बुकल्लाह हिलालो रुशदिंव व ख़ैर ।"

अर्थात, ऐ अल्लाह, इस चांद को हम पर निश्चिंतता, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ उदय कर । (ऐ चांद) मेरा रब और तेरा रब अल्लाह है । (ऐ अल्लाह) यह हिदायत और भलाई वाला चांद हो ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

ईश्वरीय आदेशों का अनुपालन आवश्यक

अल्लाह की प्रसन्ता और लोक-परलोक की सफलता प्राप्त करना प्रत्येक मानव को अभीष्ट होना चाहिए । यह उसी एक जीवन-प्रणाली के द्वारा हो सकती है जो मानवजाति के संगठन को अस्त-व्यस्त नहीं करती और जो उसके विचार व व्यवहार को द्वंद्वात्मक संघर्ष में ग्रस्त नहीं करती और जो अंततः मानव-प्रकृति और जगत-प्रकृति से नहीं टकराती । यही इस्लामी जीवन प्रणाली है । ईश्वर की ओर से अवतरित प्रत्येक धर्म मानव के लिए धारणा एवं आस्था संबंधी आधार प्रस्तुत करता है, जिस पर उसके आत्मिक एवं व्यावहारिक जीवन की स्थापना होती है । ईश्वरीय धर्म मानव को उसके पालनकर्ता प्रभु की ओर वापस बुलाने और उसके जीवन-व्यवस्था को एक विशिष्ट प्रणाली में परिणत करने आता है ताकि वह लोगों की अंतरात्मा और उनके व्यवहार, उनकी आंतरिक अनुभूति और कार्यकलाप एवं उसकी गतिविधि तथा प्राकृतिक नियमों के बीच एकरूपता और एकरसता पैदा करे । ईश्वर की ओर से अवतरित प्रत्येक धर्म इसलिए आता है कि वह व्यावहारिक जगत में कार्यान्वित हो और लोग जीवन के समस्त कार्यकलापों में उसका अनुपालन करें । वह इसलिए नहीं आता कि वह लोगों की अंतरात्मा में मात्र चेतना व अनुभूति बनकर रहे और न उसके आने का उद्देश्य यह होता है कि केवल नैतिक क्षेत्र में आत्मा को संवारे, वह इसलिए भी नहीं आता कि उपासना-गृहों और मस्जिदों में केवल उपासना-पद्धति बनकर रह जाए और न उसका अवतरण केवल निजी मामलों के लिए होता है, जो मानव-जीवन का केवल एक पहलू है । कुरआन में है–"और हमने जो रसूल भी भेजा इसी लिए भेजा कि ईश्वर की अनुज्ञा से उसके आदेशों का पालन किया जाए" (कुरआन, 4:64)। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उसी इस्लाम को लेकर आये जो दूसरे पैग़म्बर लाए थे । आपने भी अपने से पहले की आसमानी शरीअतों (ईश्वरीय धर्म-विधानों) का खंडन नहीं किया, बल्कि उनकी पुष्टि और उनका संरक्षण किया, क्योंकि आपकी रिसालत अंतिम और संपूर्ण मानवजाति के लिए है ।

वह मानव की भलाई और मार्ग-जीवन की घोषणा और उन आधारों की पूर्ण व्याख्या करती है जिन पर मानव-जीवन की उस व्यवस्था की स्थापना होती है जो लोगों को अज्ञान से निकालकर ईश-भक्ति और ईश-विधान की ओर ले जाती है और उनके हृदयों को ईश-भय की ओर प्रेरित करती है । कुरआन में है–"और हमने तुम्हारी ओर यह किताब हक़ के साथ उतारी है, अपने से पहले की किताब की पुष्टि करने वाली है, और उसकी संरक्षक है, तो तुम लोगों के बीच उनके अनुसार फ़ैसला करो जो ईश्वर ने उतारा है, और जो सत्य तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़कर उनकी इच्छाओं का अनुपालन न करना । हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक धर्म-विधान और एक कर्म-पथ निश्चित किया । और यदि ईश्वर चाहता तो तुम सबको एक गिरोह बना देता । परन्तु उसने ऐसा नहीं किया ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारी परीक्षा ले । तो भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो । तुम सबको ईश्वर की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जिसमें तुम विभेद करते रहे हो । और यह कि तुम उनके बीच उनके अनुसार फ़ैसला करो जो ईश्वर

(शेष पृष्ठ 14 पर)

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीवाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

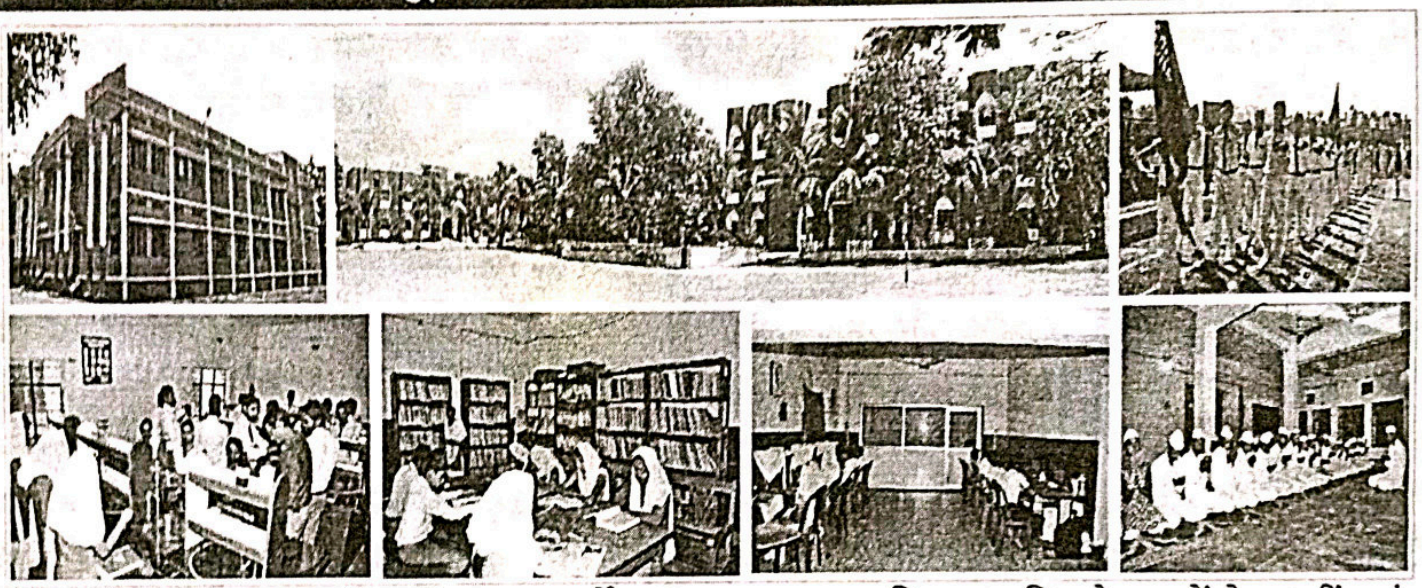

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोवाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

एक अनुभव ऐसा भी

ज़िंदगी में हार मानना सबसे आसान होता हैं, कमियों की दुहाई देना बहुत आसान होता हैं। कोई भी इंसान अपने आप में परिपूर्ण नहीं होता, हम सबमें कोई न कोई कमी होती हैं और इंसान में कोई न कोई ख़ूबी भी ज़रूर होती हैं, जैसे जौहरी को हीरे की परख होती हैं। सुनार को सोने की, वैसे ही ज़िंदगी भी अपनी ही कसौटी पर आदमी को परखती हैं, कुछ लोग ज़िंदगी की मुसीबतों से घबराते नहीं हैं। कुछ लोग हर हाल में एक खुशहाल और आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं, वास्तव में एक ''हैप्पी इंडिया'' उनमें बसता है ? क्योंकि कुछ लोगों में ही होती हैं आम से ख़ास बनने की चाहत ? एक उड़ान भरने की चाहत।

हैदराबाद अपने आप में एक बहुत ख़ूबसूरत शहर है, निज़ामों का शहर, देश की सांस्कृतिक धरोहर का शहर, चारमीनार और हुसैन सागर हैदराबाद की ख़ूबसूरती में चार चांद लगाते हैं, तो गोलकुंडा क़िला यहां की विरासत है,

वैसे कुछ ऐसा भी है इस शहर में जिसे जानकर आपको सिर्फ़ शहर पर ही नहीं बल्कि यहां के लोगों पर भी गुमान होगा, यहां का इनऑर्बिट मॉल और वहां का एक ख़ास रेस्टोरेंट ''डाइलोग इन दा डार्क'' जहां सिर्फ़ अंधेरा है, वहां रोशनी की एक किरण भी नहीं है, रेस्टोरेंट जाते ही आपको सारा सामान, पर्स मोबाइल फ़ोन कैमरा सब कुछ एक लॉकर में रखवा दिया जाता है, आपके पास लॉकर की चाबी होती है और कोई सामान नहीं। रेस्टोरेंट में जाने से पहले काउंटर पर आपकी पसंद शाकाहारी खाना या नॉन वेज खाना आपसे पूछ लिया जाता है, काउंटर पर ही आप बिल पे कर देते हैं।

उसके बाद आप रेस्टोरेंट में जाते हैं, जहां बिलकुल अंधेरा है वहां आपको गाइड करते हैं रेस्टॉरेंट के एम्प्लाइज वो आपको आपकी टेबल चेयर तक लेकर जाते हैं। टेबल चेयर पर जब आप हो हाथो से छुकर महसूस कीजिए आपको उतनी ही सफ़ाई महसूस होगी जितनी और रेस्टॉरेंट में होती हैं। रेस्टोरेंट में कितने ही गेस्ट क्यों न हो यह काम करने वाले किसी को टकराने नहीं देते, उनके काम में आप निपुणता को देखिए आपकी टेबल पर खड़े रहकर आपको गाइड करते हैं कि कहां क्या रखा है, आपको टेबल पर टिशू, चम्मच, फोक सब कुछ मिलता है, पानी के लिए वाटर बॉटल आपके हाथ में मिलती है, उसके बाद आपको खाना सर्व किया जाता है। आपकी पसंद का वेज या नॉन वेज। आपकी थाली में क्या-क्या होगा वो आपको बताया जाता है ? रेस्टोरेंट की टीम में से ही आपको कोई एक गाइड करता है वेज थाली में कौन-कौन-सी डिश है और नॉन वेज थाली में कौन-कौन सी डिश है। अंधेरे में खाना खाना यह बिल्कुल अलग अनुभव होता है। कुछ ऐसा जो आपने पहले कभी महसूस न किया हो। खाने को खुशबू से पहचाना वास्तव में एक हुनर ही तो है जिसकी परख आप इस ''रेस्टोरेंट'' में ज़रूर कर पाएंगे। हमें बचपन से सिखाया जाता की अगर सब्र हो तो काम अच्छा होता है, आप खाना बिना देखे कितनी अच्छी तरह से खा सकते हैं, इसकी परख आपको यहां पर होगी।

जब आप खाना खा लेते हैं उसके बाद आपकी टेबल को क्लीन कर दिया जाता है, आपको बोल्स सर्व किये जाते हैं ताकि आप हाथ धो सके, उसके बाद आपको मीठा खिलाया जाता है और जैसे की आप बिल पहले ही दे चुके हैं। सिर्फ यह कहना होता है कि हमने खाना खा लिया अब हमें रेस्टोरेंट से बाहर जाना है, कोई टिप नहीं लेते वो आपसे। आपको बाहर लेकर आते हैं।

गेट पर आते ही जहां थोड़ी रोशनी है वहां वो पूछते हैं आपसे आपके अनुभव के बारे में और आप से आपका फीडबैक मांगते हैं, हमारी तरह सब उनसे एक ही सवाल पूछते हैं कि वो अपना काम इतनी अच्छी तरह से कैसे कर लेते हैं ? वो सिर्फ़ एक बात कहते हैं कि उनकी ''मेहनत'' और लगन और वो आंखों से देख नहीं सकते ?

सच कितना अलग है यह रेस्टोरेंट जो ज़िंदगी जीना सिखाता हैं, रेस्टोरेंट से निकलते समय हमें एहसास हुआ की वास्तव में कितनी ख़ुशी और जोश से वो सब लोग अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ कर रहे थे ? हमें एहसास भी

नहीं हुआ की जो अंधेरे में हमें गाइड कर रहे हैं, रास्ता दिखा रहा है वे आंखों से देख नहीं सकते ? कभी सोचा है हमने की जब "ईश्वर" ज़िंदगी का एक रास्ता बंद करता है, तो दूसरे की उम्मीद ज़रूर देता है । आप कभी समय निकाल कर इस रेस्टोरेंट में ज़रूर जाइए ? जहां लोग आपसे किसी दया की उम्मीद नहीं रखते ?

वास्तव में यह है सच्चे नागरिक जो मुश्किलों की नहीं ज़ज़्बे की बात करते हैं ? उनकी कमी के बारे में हमें पता भी नहीं चला । ज़्यादातर रेस्टोरेंट में हम सब टिप देकर आते हैं, पर ये लोग आपसे किसी दया की उम्मीद ही नहीं करते? यह तो बस आपको ज़िंदगी का एक अलग अनुभव सिखाते हैं ? कुदरत ने इन्हें आंखें नहीं दी तो क्या पर ज़िंदगी जीने का सलीक़ा तो दिया है । क्या आपने कभी सोचा है ? ईश्वर को तो किसी ने नहीं देखा न सुना न महसूस किया पर फिर भी हम अपनी हर मुराद हम उस तक पहुंचाते हैं ।

ठीक वैसे ही आंखों से न दिखायी दे तो कोई बात नहीं । पर ज़िंदगी में कभी भी अंधे बनकर न जिये ? क्योंकि अकसर धोखा आंखों के होते हुए भी मिलता है । इस रेस्टोरेंट को देख यहां खाना खाने के बाद आपका नज़रिया ज़रूर बदलेगा ? अगर कभी भी इस ज़िंदगी में थोड़ा भी मौक़ा मिले, तो इन अनमोल पलों को महसूस ज़रूर कीजिए।

दीप्ति सक्सेना
405, अपर्णा साइबर कम्यून, हैदराबाद

पर्यावरण सुरक्षा

अभी हमने पृथ्वी दिवस बनाया । यह पृथ्वी जीव-जंतुओं के निवास का मुख्य स्थान है । जीव-जंतुओं का जीवन इसी के प्राकृतिक संसाधनों पर पूर्णतः निर्भर करता है । मानव ने जैसे-जैसे अपना विकास किया वैसे ही पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों में बिगाड़ भी किया । हमें मालूम है कि पृथ्वी जीव ज़ंतुओं के जीवन को पानी और वृक्षों से संजोये रख़ती है । लेकिन आज उन्हीं वृक्षों की अंधाधुंध कटाई ने विशेषकर वर्षा और ग्रीष्म ऋतुओं के संतुलन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है, फलस्वरूप ज़ल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है ।

दूसरी ओर शासकीय नियंत्रण के अभाव में मनमाने ढंग से व्यापक क्षेत्रफलों में बहुमंज़िला इमारतों का निर्माण हो रहा है, प्रत्येक इमारत में बोरवेल और उसके साथ वहां जल का मनमाना इस्तेमाल और उसकी बर्बादी की जा रही है । वहां शावर और निजी स्नान टब में स्नान के समय जल का बहुत अधिक अनुचित इस्तेमाल देखा जा सकता है । फिर ऐसी इमारतों में रेन हार्वेस्टिंग स्टोरेज का भी कोई प्रबंधन नहीं होता और न ही इमारतों की परिधि में अनुमानित वृक्ष लगाये जाते हैं न ही इस परिधि के पास कोई नये जलाशय बनाये जाते हैं । विदित हो कि इन्हीं इमारतों और पहुंच मार्ग के निर्माण में वहां के पुराने वृक्षों को जड़ सहित इस प्रकार काट दिया जाता है, मानो कि इन्सान उनके दुश्मन हैं । देश के बहुत से क्षेत्रों में नवनिर्मित ऐसी सोसाइटीज़ पार्क-गार्डन और हरियाली से मुक्त होती हैं ।

डॉ॰ एम॰ ए॰ रशीद
(ई-मेल से)

भ्रष्टाचार उन्मूलन

हमारे देश की राजनीतिक पार्टियों में जनता को अधिक से अधिक मूर्ख बनाने की होड़ चल रही है । जनता को आपस में लड़वाया जा रहा है । एक ग़रीब को दूसरे ग़रीब के विरुद्ध उकसाया जा रहा है । वर्ण, जाति और धर्म के नाम पर शोषित एवं पीड़ित जनता को एक नहीं होने दिया जा रहा है । धार्मिक असहिष्णुता और हिंसा राजनीति द्वारा प्रायोजित हैं । देश की संस्कृति और लोगों की जीवनशैली की हत्या की जा रही है ।

राजनीति के भ्रष्टाचार ने देश को हर स्तर पर नुक़सान पहुंचाया है । धर्म और जाति के नाम पर लोगों को विभाजित किया जा रहा है । ऐसे में ज़रूरी है कि संत और मौलाना मिलकर भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ अलख जगाएं । साथ ही विदेशी रहन-सहन, खान-पान और सोच-विचार के ख़िलाफ़ भी अलख जगानी होगी । भ्रष्टाचार के मिटाने के लिए नैतिकता के स्तर को ऊंचा उठाना होगा ।

रामस्वरूप झैवर
शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा, राजस्थान

शराब-सरकार और जनता

शराब सेवन किसी भी धर्म में करने की अनुमति नहीं दी गयी है । फिर भी लोग इसका सेवन कर कर धर्म की शिक्षा पर नहीं चलते । शराब से सरकार को राजस्व प्राप्त होता है इसलिए सरकार अपना राजस्व नहीं खोना चाहती भले ही इससे सामाजिक अपराध बढ़े । शराब से घरों की शांति भंग होती है और घर बिखर जाते हैं । इतना होने पर भी जनता इसे पीती है, इस विडंबना ही कहा जाएगा ।

ग़ैरतलब बात यह है कि गांधी जी ने तो शराब से आमदनी नहीं करने को कहा था लेकिन कांग्रेस ने उसकी अनदेखी की जिसके परिणामस्वरूप इसका प्रचार-प्रसार होता गया और लोगों को कैंसर जैसे घातक रोगों से ग्रसित होना पड़ा है जिस पर सरकार को चिकित्सा के नाम पर करोड़ों ख़र्च करने पड़ते हैं । आश्चर्य तो यह भी कि धर्म शराब सेवन की अनुमति नहीं देता और साधु-संत भी इसका विरोध करते हैं, लेकिन मानव ऐसा ढीट बन गया है कि वह किसी की नहीं सुनता । ऐसे में इसका सरल उपाय है कि शराब बनाने पर ही पूर्ण पाबन्दी लगायी जाए । जिससे न रहेगा बांस और फिर न बजेगी बांसूरी ।

लघुकथा

अनुशासन की महत्ता

एक गांव में एक विधवा स्त्री रहत थी । महर्षि कपिल नित्य ही उनके घर के आगे से होते हुए गंगा स्नान के लिए जाया करते थे । वह हमेशा सूत कातते या धन कूटते दिखायी देती थी । महर्षि ने गांव वालों से पूछा । पता लगा वह अकेली है तथा उसके अतिरिक्त घर में कार्य करने वाला और कोई नहीं है । महर्षि को उस पर दया आयी । उन्होंने उस स्त्री से कहा, 'देवी ! यदि आप कहें तो राज्य परिवार से कहकर आपकी आजीविका की स्थायी व्यवस्था करवा दूं । मैं आश्रम का कुलपति हूं ।' ब्राह्मणी ने कहा, 'हे देव ! आपके इस दयाभाव के लिए धन्यवाद । आपने मेरा मूल्यांकन करने में भूल की है । मैं चाहूं तो राजाओं जैसा जीवन व्यतीत कर सकती हूं । मेरे पास पांच श्रेष्ठ रत्न हैं ।' महर्षि कपिल को बहुत आश्चर्य हुआ । कहा, 'देवी ! मुझे उन रत्नों को दिखाने का कष्ट करेंगी ।' देवी ने थोड़ी देर प्रतीक्षा करने को कहा । उसके पांचों पुत्र विद्यालय से आये । चरणस्पर्श कर बोले, 'मां ! हमने किसी को कटु वचन नहीं कहा । गुरुदेव ने हमें जो पढ़ाया हमने उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा है ।' कपिल मुनि को और कुछ कहने या पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी । उन्होंने कहा, 'देवी ! बहुत ही सुन्दर-श्रेष्ठ बहुमूल्य रत्न हैं । आपके पास ! जिसके पास ऐसे अनुशासित बच्चे हैं वह कभी भी अभावग्रस्त नहीं हो सकता ।'

रामस्वरूप झैवर
भीलवाड़ा (राज०)

गुरमुखी में पवित्र क़ुरआन

दुनिया में सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला पवित्र ग्रंथ क़ुरआन की पंजाबी कॉपी मिली है, जिसे दो हिन्दुओं और एक सिख ने मिलकर छपवाया । शायद आपको यह बात असंभव लग रही होगी, लेकिन है सच । पंजाब में एक इतिहासकार के पास क़ुरआन की पंजाबी कॉपी है, जो 1911 में छापी गयी थी । 105 वर्षों से यह किताब एक सिख के हाथ से गुज़रकर एक मुसलमान के हाथों में पहुंची और जब एक हिन्दू शिक्षक के पास है । इन सबके लिए अपने पास पंजाबी क़ुरआन की कॉपी होना किसी बहुमूल्य चीज़ के होने जैसा है ।

पंजाब सेन्ट्रल यूनीवर्सिटी के म्यूजियॉलजी डिपार्टमेंट से रिटायर हुए सुभाष परिहार पंजाबी क़ुरआन की डिटेल्स सूफ़ी इन्साइक्लोपीडिया में डालने की योजना बना रहे हैं, जिसकी वे तैयारी कर रहे हैं । फ़िलहाल कोटकापुरा के प्राइवेट कॉलेज में पढ़ा रहे परिहार कहते हैं, 'क़ुरआन की इस प्रति को निर्मल सिख संत वैद्य गुरदित सिंग अलमहरी ने अरबी से गुरमुखी में अनुवाद किया था । इस क़ुरआन की छपाई का ख़र्च भगत बुधमल अदालती मेवजत और वैद्य भगत गुरादिता मल नाम के दो हिन्दुओं और सिख मेला सिंह अत्तर वज़ीराबाद ने उठाया था ।

अमृतसर की गुरमत प्रेस में बुध सिंह ने इसकी 1000 कॉपियां छापीं थी । परिहार ने बताया, 'संत अलमहरी अलग-अलग धर्मों के लोगों के बीच क़ुरआन का संदेश पहुंचाना चाहते थे । छपाई के लिए हिन्दुओं और सिख का सहारा भी इसी उद्देश्य को देखते हुए लिया गया था ।'

परिहार कहते हैं, '20 सदी की शुरुआत में मुझे हिन्दू-मुस्लिम-सिख सद्भावना का इससे बेहतर उदाहरण नज़र नहीं आता । इन्हें ही सच्चे शब्दों में धार्मिक कहा जा सकता है ।'

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Chairman
Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

परलोक की अवधारणा

■ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

क़ुरआन कहता है कि एक समय आएगा जब वर्तमान विश्व का विनाश हो जाएगा । इसके बाद एक दूसरे लोक का नये सिरे से निर्माण होगा । मरे हुए लोग ज़िन्दा किये जाएंगे । उनके कर्म और विश्वासों का निरीक्षण किया जाएगा । लोग अपने कर्म और विश्वासों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाएंगे । ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के विनाश को 'प्रलय' कहा जाता है । प्रलय की सूचना क़ुरआन और बाइबल के अतिरिक्त भारत के ग्रंथों में भी दी गयी है । उदाहरणार्थ श्रीमद्भगवत (4:14-18) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि न धरती रहेगी, न आकाश होगा, केवल ब्रह्मा रह जाएगा । इसके बाद परलोक की अवस्था आएगी । परलोक का जीवन, वेद के अनुसार, अत्यंत शानदार होगा । वेद में इसे 'दिव्य जन्म' कहा गया है और कहा गया है कि यह जीवन उनको प्राप्त होता है जो अपने जीवन में हर समय ईश-प्रियता को अपनाए रहते हैं । उनके जीवन की पवित्रता और उच्चता का रहस्य भी यही है कि जीवन की हर क्रिया-कलाप में ईश्वर उनके सामने रहता है यह चीज़ सिर्फ़ बाहरी रस्मों और आडंबरों को पूरा करने से कभी प्राप्त नहीं हो सकती । वेद का कथन है–

"दिव्य जन्म हवन करने वालों के लिए नहीं, प्रतिक्षण विश्व-मित्र (प्रभु) को धारणा करने वालों के लिए है ।"

परलोक एक परिपूर्ण लोक है, जहां मानव पूरी तरह जाग्रत अवस्था में होगा । कठ उपनिषद में इसका स्पष्टीकरण करते हुए कहा गया है कि पितरलोक में आत्मा की स्थिति स्वप्न के समान होती है । वर्तमान संसार में जो हालत है, वह जागरण की अवस्था है लेकिन पूर्ण जाग्रतावस्था परलोक में ही प्राप्त होगी ।

परलोक में अच्छे लोगों को स्वर्ग में जगह मिलेगी, जबकि बुरे लोगों का ठिकाना नरक होगा । वेदों में 'जन्नत' को 'स्वर्ग' और 'दोज़ख़' को 'नरक' कहा गया है । स्वर्ग केवल किसी कैफ़ीयत या हालत का नाम नहीं, जो वर्तमान संसार में किसी पर छा जाती है, जैसा की कुछ विचारक समझते हैं, बल्कि स्वर्ग वस्तुतः नित्य रहने वाला 'लोक' है । यही कारण है कि स्वर्ग और उसके समानार्थक शब्द सकर तस्यः सकरताम, देव, नाकम् के साथ लोक शब्द वेदों में प्रयुक्त हुए हैं ।[1] अर्थात इन्हें देवलोक, नाकम् लोकम् इत्यादि कहा गया है । स्वर्ग, सकर निरुक्त, नाका, देव आदि शब्द जीवन के परमानन्द को प्रकट करते हैं । नाका का अर्थ 'निरुक्त' के इस कथन से स्पष्ट होता है कि इस स्थान को पाने वाले को कुछ भी दुख नहीं होता । (निरुक्त, अध्याय 2, खण्ड 14) ब्राह्मण ग्रंथ में भी यही बात कही गयी है कि इस स्थान पर पहुंचने वाले को कुछ भी दुख नहीं होगा । ब्राह्मण ग्रंथ वस्तुतः वेदों के व्याख्यान हैं ।

'कम्' का अर्थ ख़ुशी और सुख है । इस पर दो नकारात्मक अक्षर 'न' और 'अ' मिलने से 'नाकम' शब्द बना है । 'कम्' में एक नकारात्मक अक्षर मिलाने से 'अकम्' बना, जिसका अर्थ 'दुख' हुआ । फिर इसमें 'न' नकारात्मक अक्षर जोड़ने से 'नाकम्' बना, जिसका अर्थ सुख या राहत है । 'देव' शब्द का अर्थ भी सुख है । अतः निरुक्त का कथन है–

"देव सुख का नाम है ।"

स्वर्ग, नाकम् देव इत्यादि वास्तव में सुख के स्थान का नाम है । उसी निरुक्त का कथन है–

"जिनके कर्म अच्छे होते हैं, वही वहां जाते हैं ।"

–निरुक्त, अध्याय 2, खंड 14

मनुस्मृति में भी स्वर्ग के जो प्रयोग मिलते हैं, उनसे साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह एक विशेष स्थान का नाम है । उदाहरणार्थ मनु में इस प्रकार के कथन मिलते हैं–

"स्वर्गं स गच्छति ।" –मनुस्मृति, 3:18

अर्थात वह स्वर्ग को जाता है ।

"स गच्छति परं स्थानं ।" –मनुस्मृति, 3:93

1. देखिए : यजुर्वेद अध्याय 15, मंत्र 10-14, अथर्ववेद काण्ड 4, सूक्त 34, मंत्र 2, 5-7; अथर्ववेद काण्ड 9, सूक्त 5, मंत्र 18; अथर्ववेद काण्ड 2, सूक्त 10, मंत्र 7; वही, काण्ड 9, सूक्त 5, मंत्र 9; वही, काण्ड 18, सूक्त 3, मंत्र 71 इत्यादि ।

अर्थात वह ऊपर उच्च स्थान को जाता है ।

''गच्छत्यमरलोकताम् ।'' –मनुस्मृति, 2:5

अर्थात वह अमर लोक को जाता है ।

वेदों और शास्त्रों में लोक शब्द प्राय: स्थान और जगह के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । ऋग्वेद में यह शब्द 28 बार प्रयुक्त हुआ है । दो बार बहुवचन के रूप में भी आया है । यजुर्वेद में लगभग 50 बार यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । सायन आचार्य ने उन स्थानों पर इसका अनुवाद प्राय: 'स्थान' ही किया है । उनसे कोई कैफ़ियत या मनोदशा का अर्थ लेना सही नहीं होगा ।

कर्म-तुला

स्वर्ग या जन्नत उन्हीं लोगों के हिस्से में आएगी, जो सही अर्थों में इसके पात्र होंगे । संसार में लोग अच्छे या बुरे जैसे भी कर्म करते हैं, उनका रिकार्ड सुरक्षित किया जा रहा है । हिन्दुओं के पवित्र ग्रंथों के अनुसार ये कर्म देवताओं द्वारा लिखे जा रहे हैं । मनु में है–

मन्यन्ते वै पापकृतो व कश्चित्पश्यतीति न: ।
तांस्तु देवा: प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तरपूरुष: ।।

–मनुस्मृति, 8:85

''पाप करने वाले सोचते हैं कि यहां अकेले में हमें पाप करते कोई नहीं देखता, हालांकि देवता उनको देखते हैं और अन्तरात्मा पापों को देखती रहती है ।''

कर्म को सुरक्षित रखने वाले को पुराणों में 'चित्रगुप्त' की संज्ञा दी गयी है । कर्म के लिखने वालों को कुरआन में 'किरामन कातिबीन' कहा गया है । परलोक में कर्मपत्र के तौलने का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में भी मिलता है–

आने वाली दुनिया में भी वह उसके भले और बुरे कर्म को तराजू में रखते हैं । उन दोनों में से जो भारी होगा, उसी के पीछे आदमी जाएगा, चाहे वे भले हों या बुरे । अब जो व्यक्ति इस बात को मानता है वह अपने आपको इस दुनिया में तराजुओं पर रखता है और परलोक में हिसाब से छूट जाता है ।''

–काण्ड 11, प्र पाठक 2, ब्राह्मण 7, कण्डिका 33

तात्पर्य यह है कि जो कर्मतुला पर विश्वास रखता है, वह इस वर्तमान संसार में अपने कर्मों को नापता रहता है, ताकि आगामी जीवन में बुराइयों का पलड़ा भारी न होने पाए और वह ईश-प्रकोप से बच जाए ।

ईश्वरीय आदेशों का अनुपालन...

(पृष्ठ 7 का शेष)

ने उतारा है, और इनकी इच्छाओं का पालन न करो, और उनसे सजग रहो कि कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारी ओर भेजा है उसके किसी आदेश से वे तुम्हें बहका दें । फिर यदि वे मुंह मोड़ें, तो जान लो कि ईश्वर ही उन्हें उनके कुछ गुनाहों के कारण, संकट में डालना चाहता है । और बहुत से लोग अवज्ञाकारी हैं । क्या वे अज्ञान (कुफ़्र) का फ़ैसला चाहते हैं ? विश्वास रखने वालों के लिए ईश्वर से अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन है'' (कुरआन, 5:48)। प्रत्येक धर्म जो ईश्वर की ओर से आया, उसका उद्देश्य लोगों को एक ईश्वर की प्रभुता और एक ईश्वरीय प्रणाली की ओर ले जाना था । इसी तौर पर निरंतर रसूल आते रहे, जिनके बीच धर्म-विधान के कुछ आंशिक ब्योरों में विभेद पाया जाता है, परन्तु मूल व्यवस्था एवं धारणा और मूल एवं मुख्य लक्ष्य में वे सब के सब एकमत रहे और यह लक्ष्य था–लोगों को बन्दों की दासता से निकालकर ईश्वर और केवल ईश्वर का दास बनाना और अन्य नाशवान प्रभुओं और स्वामियों का इस प्रकार निषेध करना कि दासता और प्रभुता केवल ईश्वर ही के लिए रहे । आइए, हम सब अपने रब (पालनकर्ता-प्रभु) को पहचानें और उसका रंग धारण करें ।

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand



पारलौकिक जीवन

■ मुफ़्ती तंजीम आलम क़ासिमी

इस्लाम जिन अक़ीदों की शिक्षा देता है उनमें आख़िरत (परलोक) पर ईमान का अक़ीदा बहुत अहम और स्पष्ट है । इस्लाम ने धारणा पेश की एक तयशुदा वक़्त पर । दुनियाका मौजूदा सिस्टम ख़त्म हो जाएगा । सूरज, चांद, सितारे, पहाड़, खुशकी, समुद्र, आसमान और ज़मीन और इसके सारे प्राणी ख़त्म कर दिये जाएंगे फिर उसके बाद अल्लाह तआला जब चाहेगा इन्सानों को दोबारा पैदा करेगा और फिर तमाम लोग एक जगह जमा किये जाएंगे, जहां अल्लाह तआला की अदालत क़ायम होगी ।

हरेक का लेखा-जोखा पेश किया जाएगा और बहुत ही इन्साफ़ के साथ हिसाब-किताब होगा । जिसके काम अच्छे और नेक होंगे उसे उनका अच्छा बदला मिलेगा और ऐसी जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल किया जाएगा जिसकी नेमत और ख़ूबियों की हम कल्पना भी नहीं कर सकते और जो बुरा होगा उसको जहन्नम (नरक) में डाल दिया जाएगा, जहां सख़्त अज़ाब होगा और दर्दनाक सज़ा दी जाएगी ।

आख़िर के बारे में इस तरह की जानकारी सही हदीसों में मौजूद है, जिस पर ईमान लाना हर मुसलमान के लिए लाज़िम है । आख़िरत का यह ईमान जितना पक्का और मज़बूत होगा उतना ही इबादत का शौक़ पैदा होगा । अच्छी ख़ूबियां और बेहतरीन आचरण पैदा होगा और बुराइयों, बेहयाइयों और तमाम तरह की बदकारियों से आदमी सुरक्षित रहेगा । ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी, ख़ून-ख़राबा और अनैतिक हरकतों से बचेगा, इसलिए कि आख़िरत में अच्छे काम पर अच्छे नतीजे की उम्मीद और बुरे काम पर सज़ा व अज़ाब का ख़ौफ़ इन्सान को क़ाबू में रखता है । कोई भी बुरा क़दम उठाने से पहले आदमी यह सोचने पर मज़बूर होगा कि यद्यपि इस दुनिया में कोई नहीं देख रहा, लेकिन मेरे पीछे एक असाधारण ताक़त है जिसकी नज़र और पकड़ से छुटकारा नहीं मिल सकता, इसलिए वह हर हाल में सही रास्ते पर चलने की कोशिश करेगा । लेकिन जिस व्यक्ति को आख़िरत पर यक़ीन न हो उसे किसी पकड़ का ख़ौफ़ न होगा, वह अपने मन की-इच्छा का कहना मानेगा, इस्लामी क़ानून और शिक्षाओं की अनदेखी करते हुए शैतानी कामों में सदैव लिप्त रहेगा, इसलिए कि जिस व्यक्ति को अल्लाह के सामने जवाबदेही का एहसास और पकड़ का ख़ौफ़ न हो वह कभी ईमानदारी के रास्ते पर चल ही नहीं सकता । इसलिए इस्लाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) और रिसालत के बाद सबसे ज़्यादा ज़ोर आख़िरत के हक़ीदे पर दिया है ।

अरब के इतिहास से पता चलता है कि इस्लाम से पहले वहां बुराइयों का एक तूफ़ान उठा हुआ था बदकारी व ज़िनाकारी आम थी । ख़ून-ख़राबा, चोरी, डकैती, ज़ुल्म व नाइन्साफ़ी और आपसी दुश्मनी की इन्सानी इतिहास में कोई मिसाल नहीं मिलती थी, यह इसलिए कि उनका आख़िरत पर ईमान नहीं था, मौत के बाद की ज़िन्दगी और अल्लाह के सामने पेश होने की धारणा ख़त्म हो चुकी थी । वे समझते थे कि हम मिट्टी से पैदा हुए हैं और इसी मिट्टी में मिल जाएंगे, दोबारा हमें पैदा नहीं किया जाएगा । इस्लाम आया और उसने उनके सामने आख़िरत की धारणा पेश की इससे उनकी ज़िन्दगी में असाधारण बदलाव आया, वही लोग जो पहले इज़्ज़त के लुटेरे थे उसके रक्षक बन गये, जो बुराइयों को स्रोत थे उससे वे ऐसे नफ़रत करने वाले बन गये कि उनके ज़िक्र से भी उनका दिल कांप जाता था । ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी करने वाले पूर्ण न्याय करने वाले बन गये, दूसरों के माल लूटने वाले खुद अपना माल लुटाने वाले बन गये, झगड़े और दुश्मनी ख़त्म होकर वे एक ख़ानदान और एक घर के सदस्यों की तरह बन गये, हमदर्दी और मेहनत ऐसी कि खुद भूखे रहकर दूसरों की खिलाने वाले बन गये । इस तरह अचानक पूरे अरब में एक क्रांति आ गयी । इसकी बुनियादी वजह यही आख़िरत का अक़ीदा है जिसने इनकी ज़िन्दगी के रुख़ को बदल दिया था । अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाने के बाद हिसाब-किताब पर उन्हें यक़ीन हुआ क़ियामत, जन्नत (स्वर्ग) व जहन्नम (नरक) वग़ैरह की धारणा इसी तरह उनके ज़ेहन में बैठ गयी जैसे रात के बाद दिन के आने की कल्पना हर व्यक्ति

में पायी जाती है, इसकी वजह से अचानक शैतानियत के बादल छट गये और एक बेहतरीन और मिसाली समाज बनकर तैयार हो गया ।

वे लोग जिनका सहाबा (रज़ि॰) के बीच ऊंचा दर्जा हासिल था और नबी (सल्ल॰) ने जिनकी तारीफ़ की है वे तो अल्लाह से डरने वाले थे ही लेकिन जो मुसलमानों में कोई ख़ास रुत्बा नहीं रखते थे और न उनकी कोई अलग पहचान थी फिर भी इस्लाम ने उनको ऐसा बदला था कि कहीं एकांत में भी उनका ज़ेहन गुनाह की तरफ़ नहीं जाता था और इन्सान होने की वजह से कभी कोई गुनाह हो भी गया तो फ़ौरन वे आख़िरत के ख़ौफ़ से कांपने लगते और अपने आपको सज़ा के लिए पेश कर देते । जैसे–एक बार हज़रत माइज़ असलमी (रज़ि॰) से ज़िना हो गया, कोई देखने वाला नहीं था कि ख़बर फैलने और रुसवाई का डर हो और न गवाह थे जिनसे जुर्म के सुबूत और सज़ा मिलने का ख़तरा हो ।

वे चाहते तो इस गुनाह को छिपा सकते थे लेकिन आख़िरत की पकड़ ने उन्हें बेचैन कर दिया, वे सोच रहे थे कि लोगों की नज़र से अगर बच भी गए तो क्या हासिल ? अंधेरे, उजाले हर हाल में देखने वाली अल्लाह तआला की नज़र से नहीं बचा जा सकता । इसलिए वे नबी (सल्ल॰) के सामने हाज़िर हुए और अपने आपको सज़ा के लिए पेश कर दिया यहां तक कि उन्हें संगसार कर दिया गया और सारी दुनिया को आख़िरत के ख़ौफ़ का सबक़ दे गये ।

(सहीह बुख़ारी : 6824)

आख़िरत पर ईमान और क़ियामत पर यक़ीन ने उनके दिलो-दिमाग़ को बदल दिया था । वे अल्लाह और उसके हिसाब एवं सवाल-जवाब से ऐसा डरते थे कि पुलिस और दुनिया की सज़ा और पकड़ से भी लोग ऐसा नहीं डरा करते । यहां तक कि जंगल में बकरियां चराने वालों में भी आख़िरत की धारणा ऐसे रच बस गयी थी कि शहर से दूर पहाड़ों के बीच भी वे गुनाह की कल्पना से भी कांप उठते थे ।

एक बार हज़रत इब्ने-उमर (रज़ि॰) सफ़र के दौरान जंगल से गुज़र रहे थे, रास्ते में एक चरवाहे पर नज़र पड़ी जो बकरियां चरा रहा था, धूप बहुत तेज़ थी, इब्ने-उमर (रज़ि॰) ने उस चरवाहे से कहा, आओ मेरे साथ खाना खाओ, चरवाहे ने कहा मैं रोज़े से हूं । इब्ने-उमर (रज़ि॰) ने बड़े आश्चर्य से कहा, तुम इस सख़्त गर्मी में पहाड़ों के बीच बकरियां चराते हुए रोज़ा भी रखते हो ! उसने कहा हां, अल्लाह तआला का करम है कि धूप की सख़्ती का मुझे एहसास नहीं होता । हज़रत इब्ने-उमर (रज़ि॰) ने चरवाहे के ईमान व परहेज़गारी को आज़माने के लिए कहा कि एक बकरी मेरे हाथ बेच दो, उसकी क़ीमत भी दूंगा और उसका गोश्त भी दूंगा जिससे तेरे लिए इफ़्तार का इन्तिज़ाम होगा । चरवाहे ने जवाब दिया ये बकरियां मेरी निजी संपत्ति नहीं है, बल्कि मेरे मालिक की है । इब्ने-उमर (रज़ि॰) ने कहा कि तेरा मालिक जब बकरी के बारे में सवाल करे तो जवाब देना कि उसे भेड़िया खा गया । उस चरवाहे ने आसमान की तरफ़ उंगलियां उठाते हुए जवाब दिया, 'तो फिर अल्लाह कहां है'। इब्ने उमर (रज़ि॰) चरवाहे का मज़बूत ईमान देखकर बहुत ख़ुश हुए और उन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया और वे सारी बकरियां भी ख़रीद कर उसे दे दीं ।

(बैहक़ी, शअबुल ईमान, 4908)

यह चरवाहा किसी बड़े और ऊंचे ख़ानदान का नहीं था और न उसे मुसलमानों में कोई ख़ास रुत्बा ही हासिल था, लेकिन वह मुसलमान था और आख़िरत पर ईमान रखता था, इसी यक़ीन ने उसे इस बेईमानी से रोका, ऐसी जगह जहां उसे कोई देखने वाला नहीं था और भेड़िए के खाने की भी बड़ी संभावना थी लेकिन आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह के सामने जवाब देने का एहसास इतना ज़्यादा था कि एक क़दम भी ग़लत राह पर न उठ सका ।

आज की दुनिया में झूठ, बेईमानी, ज़ुल्म व नाइन्साफ़ी, लूट-खसोट, शराबख़ोरी, ज़िनाकारी, बेशर्मी, ख़ून-ख़राबा और दूसरी जितनी भी बुराइयां चरम पर हैं उसकी वजह आख़िरत पर यक़ीन का कम होना है । बहुत से लोग बस ख़ानदानी मुसलमान हैं, उन्हें आख़िरत का वह पूरा यक़ीन और समझ नहीं जो इस्लाम चाहता है, इसलिए वे गुनाहों में सख़्त हैं, मुसलमान होने के बावजूद बड़े-बड़े गुनाह करते हैं और ज़रा भी ख़ौफ़ पैदा नहीं होता और जिनको आख़िरत पर ईमान ही नहीं उनका गुनाह और जुर्मों से रुक जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता ।

दुनिया की सज़ा और पकड़ से बचते हुए उनके लिए खुली आज़ादी है जो चाहे करें । ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में अपराध पर क़ाबू नहीं पाया जा सकता । देश में चाहे कितना ही सख़्त क़ानून बना लें और उसे लागू भी कर दें

तब भी देश भ्रष्टाचार और अपराधों से मुक्त नहीं हो सकता । अत: बलात्कार के ख़िलाफ़ बहुत सख़्त क़ानून लागू किया गया, लेकिन कोई ऐसा दिन नहीं जब औरतों की इज़्ज़त न लूटी जाती हो यहां तक कि नाबालिग़ बच्चियां भी इस दौर में महफ़ूज़ नहीं रहीं । यही हाल दूसरे अपराधों का है । इन सारे अपराधों और बुराइयों पर क़ाबू पाने का एक ही रास्ता है वह है उनमें आख़िरत का ख़ौफ़ पैदा करना, अगर यह माहौल बना दिया जाए कि हमारे हर काम का क़ियामत के दिन हिसाब होगा और उस दिन की सख़्तियों और आख़िरत के अज़ाब से बचने के लिए बुरे कामों से बचना ज़रूरी है तो कोई व्यक्ति भी इसकी हिम्मत न कर सकेगा ।

क़ुरआन ने सब लोगों को इस बात से भी ख़बरदार किया है कि वे इस दुनिया की ज़िन्दगी में जो भी काम कर रहे हैं वे सब रिकार्ड में महफ़ूज़ हैं, एक चीज़ भी ऐसी नहीं जो महफ़ूज़ होने से रह गयी हो । यह रिकार्ड क़ियामत के दिन पेश होगा जिसमें हर इन्सान की पूरी ज़िन्दगी की साफ़ तस्वीर होगी, रात के अंधेरे में किसी ने किसी ने कोई काम किया होगा, जहां कोई देखने वाला न हो वह भी इसमें मौजूद होगा, राज़दारी में कोई नेकी या बुराई की होगी वह भी इसमें मौजूद होगी ।

ख़ुद आदमी अपने इस आमालनामे (रिकार्ड) को देखकर आश्चर्य में होगा और सोचेगा कि बारीक से बारीक और छोटी से छोटी बात भी इसमें रिकार्ड है जिसको मेरे सिवा कोई नहीं जानता । मुमकिन है पहले ज़माने में इस पर लोगों को हैरत और आपत्ति हो लेकिन आज साइंस और टेक्नोलॉजी से यह बात साफ़ हो गयी है कि हर बात का रिकार्ड महफ़ूज़ किया जा सकता है, आज वीडियो ग्राफ़ी और कैमरों के ज़रिए से पूरा प्रोग्राम महफ़ूज़ रखा जाता है, और जब दिल चाहता है पूरा दृश्य आंखों के सामने होता है, तो जब अल्लाह का पैदा किया हुआ एक इन्सान ऐसी चीज़ तैयार कर सकता है तो अल्लाह जो हर चीज़ और हर काम कर सकता है उसके लिए यह नामुमकिन या आश्चर्यजनक क्यों ? इसी तरह पहले समझा जाता था कि जो आवाज़ हमारे मुंह से निकलती है वह हवा में थोड़ी-सी लहर पैदा करके ख़त्म हो जाती है मगर अब पता चला कि हर आवाज़ अपने आसपास की चीज़ों पर अपना असर छोड़ जाती है जिसको दोबारा पैदा किया जा सकता है, तो फिर क्या बड़ी बात है कि फ़रिश्तों के ज़रिए से हमारे हर काम और हर हरकत को एक ख़ास रजिस्टर में महफ़ूज़ करने का इन्तिज़ाम हो, जिस पर हिसाब-किताब, जज़ा (अच्छा बदला) और सज़ा का आधार हो ।

नेता

नेता और भुजंग में, कोई अन्तर नाय
दाव परै चूकै नहीं, पालौ दूध पिलाय
पालौ दूध पिलाय, मात्र विष ही बढ़ता है
भरनी भरते रहो, मगर ऊपर चढ़ता है
दूध पिलाने वाले का जीवन से लेता
'ताबिश' सर्प समान सदा होता है नेता

चाटा सारे देश को, नेता ने बन सांप
मगर आज तक देश की, जनता सकी न भांप
जनता सकी न भांप बिछें षड्यंत्र मंत्र को
क़ैद कर लिया नेताओं ने लोकतंत्र को
भ्रष्टाचारी षड्यंत्रों से भारत पाटा
बाल न 'ताबिश' जमे देश नेता ने चाटा

जातिवाद की खोद दी, खायी अति मज़बूत
स्वास्थ्य में अंधे हुए, ये नेता अवधूत
ये नेता अवधूत गजब का जाल बिछाते
टुकड़े फेंक-फेंक के बन्दर ख़ूब लड़ाते
कोई गतिविधि नहीं यहां पर बिन विवाद की
राजनीति ने खायी खोदी जातिवाद की

राजनीति ने कर दिया, लोकतंत्र बदनाम
सत्ता की कुर्सी हुई, अब गुंडों के नाम
अब गुंडों के नाम कर रहे हैं मनमानी
चारों ओर आज कुर्सी की खींचातानी
सत्ता से कर लिया किनारा नीति प्रीति ने
दिया हलाहल घोल विषैली राजनीति ने ।

आचार्य राकेश बाबू 'ताबिश'
द्वारिकापुरी कोटला रोड, मंडी समिति के सामने,
फ़ीरोज़ाबाद-283203

डॉ॰ अम्बेडकर और जोगेन्द्रनाथ मंडल

अ॰ रशीद ख़ान

भारतीय संविधान के निर्माता भारत रत्न डॉ॰ अम्बेडकर की 125वीं जयंती पूरे देश में उत्साहपूर्वक मनायी जा रही है । लोकसभा और राज्यसभा में सभी राजनीतिक दलों ने डॉ॰ अम्बेडकर के विचारों और कामों की प्रशंसा की । सभी नेताओं ने माना कि उन्होंने भारत में वर्ण,व्यवस्था, भेदभाव और सामाजिक असमानता के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी । वे दलितों, पिछड़े वर्गों के मसीहा थे ।

सभी राजनेताओं में मुक़ाबला हो रहा है कि वे अम्बेडकर को सबसे ज़्यादा चाहते हैं । उन्होंने ही डॉ॰ अम्बेडकर के बताये गये रास्ते पर चलकर दलितों, पिछड़े वर्गों के विकास के लिए कार्य किया है । सरकारें बदलती रहती हैं सभी राजनीतिक दलों को सत्ता में आने के लिए दलितों व पिछड़े वर्गों के वोट की ज़रूरत पड़ती है । चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे करते हैं । दलितों व पिछड़े वर्गों के लिए सरकार योजनाएं बनाती है मगर उस पर ईमानदारी से अमल नहीं किया जाता है । लालीपॉप देकर खुश किया जाता है ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी डॉ॰ अम्बेडकर के जन्म स्थान महु (मध्य प्रदेश) पहुंचे और अम्बेडकर का जन्मदिन मनाया उन्होंने कहा मैं प्रधानमंत्री डॉ॰ अम्बेडकर के कारण ही बना हूं । डॉ॰ अम्बेडकर सभी नेताओं के लिए इतने प्रिय कैसे हो गये? वह सभी देशवासियों के महानायक बन गये । आज डॉ॰ अम्बेडकर संघ के आंखों के तारे कैसे बन गये ? जिसका वह जीवन भर मुखर विरोध करते रहे ?

जब संसद में डॉ॰ अम्बेडकर के कारनामों पर बहस चल रही थी उस समय किसी सांसद को यह इतिहास की सच्चाई बताने की याद क्यों नहीं आयी ? डॉ॰ अम्बेडकर किस तरह लोकसभा का चुनाव जीत कर संसद पहुंचे ? 1946 में डॉ॰ अम्बेडकर लोकसभा का चुनाव लड़ना चाहते थे मगर कांग्रेस ने उन्हें टिकट नहीं दिया । सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इसका विरोध किया ।

मुंबई से वह आज़ाद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े, वह हार गये । तब बंगाल की मुस्लिम लीग के मंत्री जोगेन्द्रनाथ मंडल ने दलित नेता थे वह डॉ॰ अम्बेडकर को बहुत चाहते थे । उन्होंने मुहम्मद अली जिन्ना और सोहरवरदी से सलाह मशविरा कर डॉ॰ अम्बेडकर को मुस्लिम लीग की लोकसभा सीट जसवर (खलना) (अब बंगलादेश में है) से चुनाव लड़ाने का फ़ैसला किया । वहां से डॉ॰ अम्बेडकर चुनाव जीत कर संसद पहुंच गये । यह सीट ख़ासतौर पर डॉ॰ अम्बेडकर के लिए ख़ाली करायी थी । डॉ॰ अम्बेडकर को "संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी का चेयरमैन सर्वसम्मति से चुन लिया गया । डॉ॰ अम्बेडकर को यह महत्वपूर्ण स्थान सिर्फ़ जोगेन्द्रनाथ मंडल जो की मुस्लिम लीग के मंत्री थे, सहयोग से मिला ।

अगर जोगेन्द्रनाथ मंडल डॉ॰ अम्बेडकर की मदद नहीं करते तो वह संसद के सदस्य नहीं बनते और न ही संविधान की डाफ्टिंग कमेटी के चेयरमैन बनते, न ही वह संविधान लिख पाते । क्या किसी सांसद को जोगेन्द्रनाथ मंडल की याद आयी, यह भारत इतिहास की सच्ची घटना है । मगर हम समाज को यह सच्चाई बताना नहीं चाहते यह हमारी राजनीतिक मजबूरी है । भारत में बड़े-बड़े इतिहासकार व पत्रकार हैं क्या उन्होंने इस सच्ची घटना को सही तरीक़े से लिखा है ? क्या यह राजनेताओं की राजनीतिक मजबूरी है?

डॉ॰ अम्बेडकर ने संविधान का मसौदा पार्लियामेंट में पेश करते हुए कहा था इन्सान का बनाया हुआ क़ानून संपूर्ण नहीं होता, क़ानून कितना ही अच्छा हो, मगर क़ानून पर अमल करवाने वाले ईमानदार और सच्चे लोग होने चाहिए । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि संविधान को लागू करने के बाद 1952 में देश का पहला चुनाव हुआ, मगर कांग्रेस ने डॉ॰ अम्बेडकर को टिकट नहीं दिया । डॉ॰ अम्बेडकर आज़ाद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े, मगर वह हार गये । 1954 में वह भंडारा से आज़ाद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े मगर फिर हार का सामना करना पड़ा ।

संघ परिवार नहीं चाहता था कि डॉ॰ अम्बेडकर चुनाव जीत कर संसद में पहुंचे । आज वे सभी लोग उनकी 125वीं जयंती मना रहे हैं । इससे क्या साबित करना चाहते हैं ? क्या उन्होंने अपना इतिहास भुला दिया है और अपने स्वार्थ के लिए राजनीति की रोटियां सेक रहे हैं ।

साइकिल

■ जय प्रकाश वाल्मीकि

लंच का समय था । मैं भी कार्यालय से निकल कर गुनगुनी धूप का आनन्द लेने को चाय की दुकान पर आकर बैठ गया । वहां पहले से ही दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर रहे थे ।

"अरे मनोहर बाबू! दिसम्बर की बजाय आप जनवरी में रिटायर होते तो कितना अच्छा होता । एक डी०ए० का लाभ और मिल जाता ।"

"बात तो सही है, महेश जी! पर नियम तो नियम है।"

"चलो...कोई बात नहीं, अब आगे की क्या योजना है?"

"सोच रहा हूं, एक स्टेशनरी की दुकान खोल लूं, घर में बातचीत चल रही है ।" मनोहर बाबू की बात सुनकर महेश जी बोले, "विचार तो अच्छे हैं, आधा समय दुकान को देखो, आधा समय घूमो-फिरो । समाज में, रिश्तेदारों में। नौकरी में रहकर आप यही कहते रहते थे, "कहीं आना-जाना ही नहीं होता । अब तो मुक्त हो गये । आधा काम, आधी घुमाई-फिराई ।"

मनोहर बाबू ने निराशा भरे स्वर में कहा, "हां, शुरू से इच्छा तो मेरी भी यही रही । समाज में, रिश्तेदारी में जगह बनाऊं । पर अब साइकिल से घुमाई-फिराई नहीं हो सकती।" महेश ने समझा शायद बढ़ती उम्र के कारण मनोहर बाबू ऐसा कह रहे हैं । इसलिए उन्होंने संक्षिप्त-सा सुझाव दिया, "बाइक ले लो ।"

"बाइक चलाना मुझे नहीं आता । फिर रात को आंखों से भी परेशानी होती है, भय्या! ज़माना इतना आगे बढ़ गया है कि साइकिल चलाने वाले को लोग हीन भावना से देखते हैं । इसलिए चाह कर भी कहीं आने-जाने का मन नहीं होता।" मनोहर बाबू ने फिर रुक कर आगे कहा, "अब तो लोग यह भी कहने लगेंगे कि यह कितना कंजूस है । रिटायरमेंट के बाद भी एक बाइक नहीं ख़रीद सकता। अभी भी साइकिल को ही घसीटता रहता है ।"

उन दिनों मित्रों की बातों से मुझे साइकिल से जुड़ी और अपने मित्र अमर सिंह जी की स्मृतियां ताज़ा हो गईं । मैं और अमर सिंह जी एक ऐसे समुदाय से हैं जो दलितों में भी अति दलित जाति है । अमर सिंह जी अपने काम-धंधे से समय निकाल कर समाज में जन-जागरण के कार्य में लगे रहते । परिवार की हालत इतनी ख़स्ता कि पत्नी को बच्चों सहित माह में आधे समय पीहर में रहना पड़ता है । पर अमर सिंह जी तो सदा ही समाज की दीनहीन दशा के प्रति चिन्तित रहते और समाज के लोगों में जन-जागृति के लिए बस्ती-बस्ती घूमते हैं, लोगों को समझाते हैं । कई लोग उनसे तर्क के बजाय कुतर्क करते पर वे हताश नहीं होते और अपने मक़सद में लगे रहते । एक बार उन्होंने मुझे मेरी बस्ती के लोगों को इकट्ठा कर विचार गोष्ठी आयोजित करने का दायित्व सौंपा । इस दायित्व को पूरा करने के लिए मैं दो-चार दिन से प्रयास करता रहा । नियत समय पर उस दिन सौ-डेढ़ सौ परिवारों की मेरी बस्ती से दस-बारह लोग आये। बस्ती के पार्क में बिछाई दरियां ख़ाली पड़ी रहीं । सड़क की फुटपाथ पर कुछ लोग ताश-पत्ती खेल रहे थे । मैंने उन्हें देखकर उनके पास जाकर विचार गोष्ठी में बैठने का आग्रह किया । उन्होंने हामी तो भरी पर वे अपने खेल में ही लगे रहे । जो दस-बारह लोग थे वे भी खिसकने को हो रहे थे । मैं उनसे थोड़ी देर और बैठे रहने का आग्रह करूं, इतने में अमर सिंह जी आ गये । वे कोई राजनीतिक नेता तो थे नहीं । अत: वे उन्हें देखकर प्रफुल्लित हो गये । परन्तु मैं अपने आप में लज्जित-सा हो रहा था । अमर सिंह जी क्या सोचेंगे ? कमल के मुहल्ले में उसका आदर नहीं है । कोई इनकी बात मानकर घंटा-आधा घंटा बैठकर विचार सुनना भी नहीं चाहता ।

लोगों की उदासीनता देखकर मैं भी अचंभित था । लगन-सगाई जैसे कार्यों में एक को बुलाओ दो साथ आते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में इन्हें बुलाया जाए तो बहुत ही गौरवान्वित होते हैं । तथा अपने लिए सामाजिक प्रतिष्ठा मानते हैं । ख़ैर, अमर सिंह जी ने शायद मेरी उद्विग्न मुखमुद्रा से जान लिया था कि मैं उनके आगे स्वयं को लज्जित-सा महसूस कर रहा

हूं । बड़े ही आत्मीय ढंग से मेरे कंधे पर हाथ रखकर वे बोले– ''कमल जी! जितने आये, यही बहुत हैं । इनमें से यदि पांच लोग भी मेरी बातों से जागरूक होते हैं तो वे पांच और जागरूक करेंगे । जैसे एक दीपक से अनेक दीपक प्रज्ज्वलित हो जाते हैं । महात्मा बुद्ध ने भी बुद्धत्व प्राप्ति के बाद प्रथम बार पांच लोगों को ही धम्म दीक्षा दी थी । आज उनका धम्म विश्व में तीसरे स्थान पर है ।'' फिर वे सभी को स्नेह से पास बिठाकर बहुत-सी बातें समाज की भलाई की बताने लगे । प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, वे बोलते रहे । जब वे चले गये तो पीछे से लोग कहने लगे थे, ''हमारे उत्थान की बात करने वाला स्वयं तो साइकिल पर रोता फिरता है, पहले स्वयं का तो उत्थान कर लेता ।'' फिर हंसते हुए वे अपनी-अपनी दिशा की ओर चल दिये । मैं ठगा–सा उन्हें जाते देखता रहा और अकेला ही दरियां समेटने लगा ।

अमर सिंह जी ने जो बातें बताईं, वे सत्य होते हुए भी इसलिए अप्रासंगिक लग रही थीं कि इस समय महात्मा बुद्ध के समकालीन लोग हैं कहां । पुराना आदर्श आज के लोगों के आगे बुरी तरह से भोथरा गये हैं । इस घोर अराजक समय में भी अमर सिंह जी का आशाओं से सराबोर नज़रिया मुझे ज़रूर प्रभावित करता था । किन्तु एक अकेली कोयल को कूकने से वसंत ऋतु तो आ नहीं जाती । अमर सिंह को कौन कैसे समझाये कि लोग चमक-दमक से प्रभावित होते हैं । कूल्हे के नीचे गाड़ी हो, दस-पांच चापलूस लोगों का साथ हो । ऐसी चकाचौंध से लोग इतने चुंधिया जाते हैं कि सही और हितैषी व्यक्ति की पहचान ही नहीं कर पाते । परन्तु अपनी धुन के अमर सिंह जी जाति-जागरण के लिए मारे-मारे फिरते । परन्तु उनकी सही बातों पर उनका पहनावा और साइकिल की सवारी पानी फेर देती । ठेलों पर बिकने वाले उनके कपड़े ऐसे होते कि पैंट फ़िट तो शर्ट ढीला कभी शर्ट फ़िट तो पैंट कमर से खिसकती रहती । आंखों पर मोटा चश्मा तो दाढ़ी बढ़ी हुई होती साइकिल भी उनकी ऐसी की पहियों के तार टूटे होते, परन्तु वही उनके मिशन की सच्ची साथी भी थी और एक तरह से बाधक भी थी।

उनकी तरह ही मेरे पास भी आने-जाने की सवारी के रूप में साइकिलत ही थी । मेरी दो बच्चियां किशोरावय को पार कर जब युवा हुईं तो मुझे उनके विवाह की चिन्ता होने लगी । उनका रिश्ता तय करवाने के लिए, रिश्ता ढूंढने हेतु

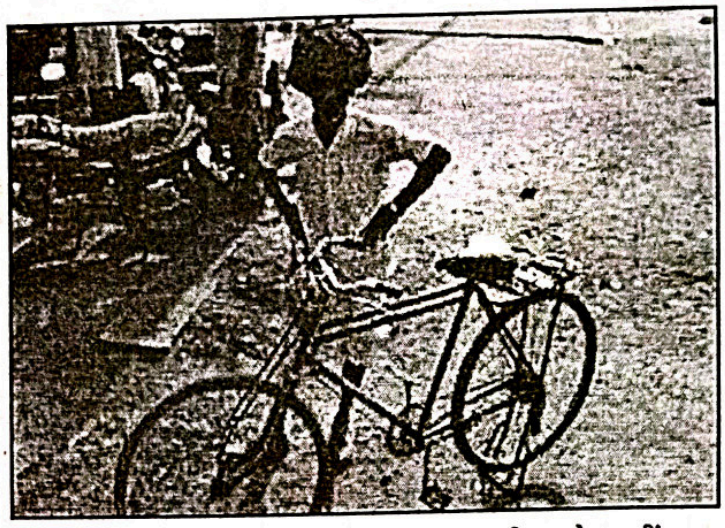

मैंने अपने मित्रों और रिश्तेदारों से बात की । वे कहीं बात चलाते तो लोग पूछते– ''लड़कियां किस की हैं ।''वे मेरा नाम आदि बताते तो लोग दिमाग़ पर ज़ोर डालते फिर धीरे-धीरे गर्दन हिलाकर बोलते, अच्छा-अच्छा अब समझ में आया । वो ही ना, जो साइकिल से आते-जाते हैं । ''एक मित्र ने मुझे यह बात बताते हुए समझाया था, ''यार! थोड़ा अपना स्टेट्स (जीवन स्तर) सुधारो ।'' मित्र के जाने के बाद मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । मेरा सच्च चरित्र सज्जनता आदि सभी दर किनार होकर समाज के लोगों के बीच मेरी शख़्सियत साइकिल सवार होकर रह गई थी ।

ख़ैर, तुरंत-फुरत मैं साइकिल को छोड़ नहीं सकता । उधर मित्रों और रिश्तेदारों के प्रयास जारी थे । कुछ दिनों बाद एक रिश्तेदार का फ़ोन आया कि लड़का देखने आ जाओ । मैंने उनका विवरण जानना चाहा तो वे बोले, ''आ तो जाओ, वहीं पर जानकारी ले लेना ।'' मुझे एक कच्ची बस्ती में लेकर गये । दो फ़िट की गली से गुज़रते हुए हम लड़के वाले के यहां गये । लोहे की चादर से ढका उनका घर दो चारपाई बिछ जाय इतना-सा आंगन जो गीला था । शायद वे वहीं पर नहाते-धोते थे । वे मुझे बिठाने की व्यवस्था करने लगा । हम आंगन में ही खड़े थे कि उनकी पत्नी कबाड़ बीन कर एक बोरा लादे हुए घर में प्रवेश किया। हमें देखकर वो घूंघट निकालकर आगे बढ़ी और अन्दर जाकर घर को व्यवस्थित-सी करने लगी । लेकिन सामान से अटा पड़ा वो घर कुछ ही मिंटों में कैसे सज-संवर सकता था । फिर हम दोनों अन्दर पड़ी चारपाई पर बैठ गये।

मेरे रिश्तेदार ने पूछा, ''लड़का कहां है ?''

वे बोले, ''अभी तो काम पर गया हुआ है, आता ही होगा ।''

"पढ़ा-लिखा कितना है ?"

"यही कोई पांचवीं-छठी ।"

हालांकि मेरा घर भी छोटा-सा पचास गज़ का है । उसमें दो कमरे हैं, छोटी-सी रसोई, स्नान घर और शौचालय है । घर के सामने चौड़ा रोड और स्वच्छ वातावरण । इस तरह उस वातावरण में बैठना मेरे लिए अटपटा-सा हो रहा था । मैंने अपने रिश्तेदार से कहा । अभी तो चलते हैं, फिर कभी बाद में आ जाएंगे ।" उन्हें मेरा यह कहना शायद ठीक न लगा । वे मुझे विस्फारित नेत्रों से देखने लगे । परन्तु मेरी मनोदशा को समझकर वे भी लड़के के पिता से बोले, "इन्हें और भी ज़रूरी कार्य है, समय निकालकर फिर आएंगे।" और मेरे पीछे-पीछे बाहर आ गये । रास्ते में मैंने उलाहना दिया, "मेरी पढ़ी-लिखी बच्चियों के लिए आपको यही घर दीखा क्या ? "वे निरुत्तर हो गये थे । और भी सोचनीय बात मेरे लिए यह रही कि कुछ मित्रों ने मेरी बच्चियों के लिए ऐसे रिश्ते भी लाए, उनमें एक की आंख में भेंगापन था । दूसरे के पांव में लचक थी । यह सब मेरे छोटे-से घर में रहना और आने-जाने में साइकिल पर सवारी करने का ही परिणाम था । इन दोनों कारणों से ही समाज ने मेरी विपन्नता का आकलन कर लिया था । उन्हें लगता था कि मैं भारी दहेज और शादी में हज़ारों रुपयों की देनदारी नहीं कर सकूंगा । जिस तरह अमीरी व्यक्ति के सौ अवगुणों को ढांप लेती है और उसे प्रतिष्ठा के शिखर पर आरूढ़ कर देती है । उसी तरह ग़रीबी व्यक्ति की शिक्षा, इन्सानियत और अनेक गुणों की अनदेखी करा कर उसे हाशिए पर ला देती है । वैसे भी समाज में सीधे, सहज-सरल और निर्मल व्यक्तियों को भोंदू (बुद्धु) समझ जाता है ।

मुझे आज भी वो ज़माना याद है । जब साइकिल की भी प्रतिष्ठा थी । दहेज में भी साइकिल दी जाती थी । अब बाइक का देना दहेज का अनिवार्य अंग बन गया है । अब इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ रहा है कि लड़का शिक्षित है या अशिक्षित । रोज़गार करता है या नहीं । इसलिए बहुतों को दहेज में बाइक मिल गई । कई लड़कों को उनके माता-पिता ने प्यार में बाइक दिलवा दी । अब मेरे शहर की बस्तियां साइकिल मुक्त बस्ती बनती जा रही हैं । मित्र और रिश्तेदार भी साइकिल मुक्त हो गए । उन्हीं को देख-देखकर मेरी लड़की भी मुझसे बार-बार आग्रह करती– "पापा, आप भी गाड़ी ले लो न!" पत्नी भी कहती– "सब लोग शादी-ब्याह, ग़मी-खुशी में शान से जाते हैं । एक हम हैं कि ..."किन्तु मेरी परिस्थिति गाड़ी ख़रीदने और ख़रीदने के बाद उसे पेट्रोल से चलाने की नहीं थी और मैं उनकी बातों को अनसुनी कर जाता था । उसके बाद भी सच तो यह है कि मेरा शहर महानगर और मेट्रो सिटी का रुतबा प्राप्त कर चुका है । अब यहां साइकिल चलाना बड़ा ही दुरूह कार्य हो गया है । दुपहिया वाहन बलखाते, निकलते और कई बार कट मारकर गिरा देते हैं । सामने कोई वाहन आता तो साइकिल वाले को ही उतरना पड़ता है । रात्री में तो साइकिल का चलाना नव्वे प्रतिशत स्वयं के साथ दुर्घटना घटाने का सामान हो गया ।

मैं परिवार सहित कहीं रिश्तेदारी में जाता तो मिनी बसों में धक्के खाते दस-दस क़दम पर सवारियों को लेने कंडक्टर बस को रुकवाता । सवारियां व्यंग्य भाव में कहती, "अरे भय्या! कमी रह गई हो तो छत पर भी बिठाले ।" पर जैसे उसने सुना ही नहीं । लेकिन जैसे ही आगे–कोई साइकिल पर चलता मुझ-सा निरीह व्यक्ति जाता तो वह पायदान पर अधझूलता चिल्लाता– "साइकिल-साइकिल!, अरे मरेगा क्या ?" साइक़िल चलाने वाले का कोई अलग से वजूद न होकर मानो वह पूरे का पूरा जैसे साइकिल में ही रूपांतरित हो गया हो । कंडक्टर की चिल्लाहट और ड्राइवर के हॉर्न की पों-पों बेचारे साइकिल वालों को हड़बड़ा देती । वह फूर्ती से साइकिल को किनारे पर लेता और कई बार उतर जाता । मेरा भी इन घटनाओं से सामना होता रहता है ।

एक बार मैं, पुत्र और पत्नी साहित एक विवाह समारोह में जा रहे थे । पत्नी ने सुझाया– "टेक्सी कर लो ।" मैंने साहस बटोरकर कहा– "अभी कोई ज़्यादा समय थोड़े ही हो गया है । बस से ही चलते हैं ।" उसने मेरे कहे को मन मारकर स्वीकार तो कर लिया । परन्तु धीरे से बुदबुदाई, लड़का बड़ा हो गया है, वरना उसे साइकिल के डन्डे पर और मुझे पीछे बिठाकर ले जाते ।" उसका यह ताना सुनकर भी मैं चुप था ।

उस दिन बस में जैसे-तैसे पत्नी जी को तो सीट मिल गई । पर हम पिता-पुत्र बस की गैलरी में बस की छत के डंडे को पकड़े खड़े थे । कभी आगे, कभी पीछे हो रहे थे। ड्राइवर बस की गति बढ़ाकर फिर अचानक ब्रेक लगाता तो गैलरी में खड़ी सवारियों का संतुलन बिगड़ जाता । ऐसे ही

ब्रेक जब ड्राइवर ने लगाया तो वे एक-दूसरे पर गिरे ।

एक दिन प्रातः नौ बजे का समय था । मैं तैयार होकर अपने काम धंधे पर रवाना होने के लिए घर से निकला । पर दरवाज़े की दीवार से सटी उस दिन वहां साइकिल न थी। सुबह होते ही मैं रोज़ाना उसे घर से निकाल कर वहीं खड़ी कर देता था । मैं हैरान-परेशान आस-पास साइकिल को तलाशने लगा । पत्नी और बच्चे भी बाहर आ गये । पूछा, "ताला लगाया नहीं था क्या ?" मैंने उन्हें चाबी दिखाई । पड़ोसी आस-पास के लोग सभी इकट्ठा हो गये । सभी हतप्रभ से बोले, "कमाल है, ताला टूटा आवाज़ भी नहीं आई ।" राह चलता एक वृद्ध जन पूरी बात सुन-समझकर बोले, "भय्या! आस-पास के कबाड़ियों के यहां तलाश करो । दारूबाज़ लोग इन्हीं के यहां चुराया हुआ माल बेचकर अपना जुगाड़ करते हैं ।" इस काम में एक पड़ोसी ने मेरी मदद की । वह एरिये के चार-पांच कबाड़ियों की दुकानों पर मुझे ले गये । सभी ने अनभिज्ञता प्रकट की । उन्हीं में से एक कबाड़ी बोला, "बड़े बेवक़ूफ़ हो! इसी इलाक़े से चुराकर, इसी इलाक़े का आदमी इसी इलाक़े की दुकान पर कोई कैसे बेचेगा । उसे मरना है क्या ?" बात भी सही थी। मैं और मेरा पड़ोसी मुंह लटकाए वापस आ गये । साइकिल की खोजबीन में उस दिन काम-धंधे की छुट्टी हो गई । मन में विचार आया कि पुलिस थाने जाकर रिपोर्ट कर दूं । पर मेरे पास तो दुकान से ख़रीद की पक्की रसीद न थी । न मेरे पास कहीं फ़्रेम नं० लिखे हुए थे ।

सप्ताह भर बाद ही मुहल्ले का एक नौजवान लड़का घर आकर बोला, "अंकल! पीछे की लाइन के मकानों में एक आदमी घर की बांउडरी से साइकिल निकालता पकड़ा गया है, कहीं आपकी साइकिल भी वही तो नहीं उठा ले गया । जाकर मालूम कर लो ।" मेरे मन में अपनी खोई हुई साइकिल फिर से मिलने की एक हल्की-सी किरण प्रस्फुटित हुई । मैं उस लड़के को साथ लेकर घटना स्थल की ओर रवाना हुआ । मुहल्ले के दो-चार युवा भी साथ हो लिए । वह चोर हम सभी को रास्ते में मिल गया । नशे में मदहोश वह चोर लड़खड़ाता बच्चे और लोगों के झुंड के साथ आ रहा था । उसके शरीर पर जगह-जगह ख़ून बह रहा था । ज़ाहिर है, जिन लोगों की वह साइकिल चुरा रहा था उन्होंने उसे रंगे हाथों पकड़कर ज़ोरदार ढंग से मारा-पीटा था। उस घर के पड़ोसियों ने भी अपने दिल की भड़ास उसपर निकलाली थी । ख़ैर, मुझे पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि मेरी साइकिल भी यही उठाकर ले गया है । हम सभी उसे अपने मुहल्ले में ले आए । घर के बाहर रोड पर बने चबूतरे पर बिठाकर उससे पूछताछ करने लगे । मुहल्ले के बच्चों के साथ-साथ बड़ों की भी भीड़ जुट गयी । कोई गाली देता तो कोई मारने को दौड़ता । पर वह नशे में इस क़दर धुत्त था कि हम पूछते कुछ वह जवाब कुछ और देता । घंटे भर की माथा-पच्ची के बाद भी वह लाइन पर नहीं आ रहा था भीड़ में से किसी ने कहा, "अरे, इसके घर वालों को बुलाओ । पास ही की कच्ची बस्ती में ही तो रहता है ।"

एक ने समझाया, "साइकिल तो अब यह कहां से देगा घर वालों से बात कर, कुछ पैसे ले लो ।" इस बात पर विचारों का आदान-प्रदान हो ही रहा था कि संयोग से चोर के मुहल्ले से एक स्त्री पुरुष हमारे पास से निकल रहे थे। भीड़ को देखकर रुक गये । किसी ने कहा, "ये लोग इसी की बस्ती में रहते हैं ।" मैंने उन्हें पास बुलाकर पूछा, "आप इसे जानते हैं क्या ?"

आदमी बोला, "हां, जानते हैं । इसका तो काम ही चोरी करना दारू पीना है ।" मैंने उसे समझाते हुए सारी बात बताई और कहा, "देखो भाई इसके घर वालों को भेजना । नहीं तो हम इसे पुलिस थाने लेकर जाएंगे ।"

अब की बार उस आदमी की औरत बताने लगी, "घर में है कौन इसके बीवी और बच्चे दो छोटे बच्चे हैं ।"

मैंने कहा, "ठीक है, उसे ही भेज देना ।"

वे लोग 'हां' में सिर हिलाकर चले गये । दो घंटे बाद भी उसकी बीवी नहीं आयी। अब भीड़ भी छंटने लगी थी। मेरे पास बैठे दो-तीन लोगों ने कहा, "कमल जी! छोड़ दो इसे ।" बीवी के पास कौन से रुपये होंगे जो इसे लेने आएगी।" एक ने कहा, चलो, इसे पुलिस थाने ले चलते हैं।" उन्हीं में से एक बोला, "थाने जाकर कमल जी आप ही फंसोगे ।" मैंने उसे प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा तो वह समझाने लगा, "देख नहीं रहे, आप इसकी हालत । शरीर पर जगह-जगह चोट के निशान हैं । जिन लोगों की यह साइकिल चुराता पकड़ा गया, उन लोगों ने इसकी यह गत बनाई है । पुलिस वाले तो यह कहेंगे कि तुम ही ने इसे इतना मारा-पीटा है । साइकिल की बात बाद में होगी । पहले तुम पर मार-पिटाई का केस दर्ज होगा ।"

मैं उस व्यक्ति को आश्चर्य से देखता-सा रह गया ।

सच बात तो यह है कि मैंने इस बारे में कुछ सोचा ही नहीं था, लोग धीरे-धीरे जा रहे थे । उन्हीं जाते हुए लोगों में कोई कह रहा था, "साइकिल की बात करते हैं, कारों तक का तो पता नहीं लगता ।" अब उस चबूतरे पर मैं और वह चोर रह गया था । मैं उस चबूतरे से नीचे उतार कर उसका मुंह उसके घर जाने वाले रास्ते की ओर करके अपने घर में आकर बैठ गया । पन्द्रह-बीस मिनट के बाद मैंने यूं ही घर का दरवाज़ा खोलकर बाहर देखा । वह चोर थोड़ी दूर जाकर बैठ गया था तथा आने-जाने वाले लोगों को गालियां दे रहा था ।

एक साल बाद मैं अपने मित्र पवन के साथ बाज़ार गया हुआ था । वहां आठ-दस दुकानें साइकिल की भी थी । मुझे साइकिल तो लेनी ही थी । इसलिए मोल-भाव का पता लगाने के लिए हम दोनों एक साइकिल की दुकान पर चले गये । दुकानदार ने हमें साइकिल दिखाई । सभी चार-साढ़े हज़ार रुपये तक की थी ।

दुकानदार ने पूछा, "आपको कौन-सी साइकिल पसन्द आई ?"

मैंने कहा अभी तो हम क़ीमत जानने आए थे, बाद में आकर ख़रीदेंगे ।" उसने कहा, "ठीक है, पर जब कभी भी आएं तो आइ०डी० प्रूफ़ ज़रूर साथ लेकर आना ।

"क्यों ?" मैंने आश्चर्य से पूछा। उसने समझाया- "आजकल ख़रीदार से आइ०डी०प्रूफ़ लेकर ही बेचने का नियम है ।

हम दोनों दुकान से बाहर आ गये । मैंने पवन से कहा, "यह कौन-सा नियम आ गया ?"

पवन बोला, "याद है, कुछ दिन पहले साइकिल में बम लगाकर कई जगह विस्फोट करने की घटनाएं हुई थीं । शायद इसीलिए सरकार ने ऐसा नियम बना दिया हो ।" हां, मुझे वो घटना याद आ गयी । मन अन्दर से कांप उठा । मेरी पहले ही दो साइकिलें चोरी हो गई थीं । कहीं तीसरी को भी कोई चोर चुराकर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज होने से पहले ही कोई उसका दुरुपयोग कर डाले तो, मैं तो गया...इस आशंका से मैंने साइकिल ख़रीदने का विचार ही त्याग दिया । लेकिन साइकिल की कई ख़ूबी मेरे मन में हिलोरें लेती थीं । महीनों तक साइकिल की मरम्मत करवाने की ज़रूरत ही न होती और वह चलती रहती । आने-जाने का ख़र्च बच जाता था। मेरे स्वस्थ शरीर को देखकर भी लोग मेरा साइकिल चलाना ही बताते थे । ट्रेफ़िक पुलिस का कोई डर नहीं होता था । और सर्व हिताय की बात यह कि साइकिल से प्रदूषण भी नहीं फैलता था । मेरी यही चाहत मुझे कई कबाड़ियों की दुकानों से लेकर साइकिल मरम्मत करने वाली दुकानों तक ले गयी । परन्तु पुरानी साइकिल की मेरी खोज विफल ही रही ।

घर-परिवार में कई ऐसे आपात काम आए कि आने-जाने के साधन की कमी अखड़ने लगी । पत्नी, बच्चे सभी कहते- "छोड़ो न, साइकिल की ज़िद! गाड़ी ही ले लो ।"

मित्र और रिश्तेदार भी कहते, कमल बाबू उम्र हो गयी, साइकिल चलाते-चलाते, गाड़ी ही ले लो ।

अंततोगत्वा मुझे दो पहिया वाहन (स्कूटी) लेने का मन बनाना ही पड़ा । धनतेरस का दिन था । घर में सभी ख़ुश थे । आज उनके घर में गाड़ी आएगी और शाम होने से पहले गाड़ी आ ही गयी । सभी उल्लास से भरे थे पड़ोसियों को भी मिठाई बांटी गई । वे भी गाड़ी को देखने आए । मेरे जीवन में से एक तरह से साइकिल हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो गई थी । लेकिन दिल के एक कोने में अभी भी चाह है ।

सोचता हूं-चलो, अच्छा हुआ गाड़ी आ गई । परिवार की वर्षों की मनोकामना पूरी हो गई । समय-असमय, देर रात, हारी-बीमारी में तथा शहर में दूर-दराज़ दो जने आराम से आ-जा सकेंगे । किन्तु अब अकेले मुझे भी गाड़ी का ही उपयोग करना पड़ेगा और अब पैसा तथा स्वास्थ्य दोनों का नुक़सान होगा । मुझ जैसे मध्यमवर्गीय व्यक्ति को इसलिए साइकिल की चाह रहती है । परिवार के लिए और आपातकाल के लिए गाड़ी भी सही है । किन्तु अकेले के लिए आज भी मुझे साइकिल की चाह है । कहते हैं, जहां चाह है, वहां राह है । यह राह मुझे मिलेगी की नहीं । कह नहीं सकता ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

लोक-लुभावन बाल-कविताएं

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

बाल-साहित्य बाल-विकास के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर लिखा जाता है । बाल-साहित्यकार बच्चों के अंदर साहस, सत्य, उमंग, उत्साह, मानव-प्रेम, देश-प्रेम इत्यादि मानवीय गुणों का विकास करना चाहता है । बच्चे सच्चे बनें, अच्छे बनें और आदर्श विश्व नागरिक बनें, हर दुख-संकट का साहस और वीरतापूर्वक सामना करना सीखें, यही बाल-साहित्यकार के लेखन का उद्देश्य होता है । बाल-मन स्लेट की भाँति बिलकुल सादा होता है । माता-पिता, परिवार और समाज उसके मन पर मनचाहा रंग भरते है । परिवार प्रथम पाठशाला है, इसलिए उसका प्रभाव बच्चों पर पड़ता ही है । बड़े जो कुछ करते हैं बच्चों की नज़र उन पर होती है, उससे बच्चों का व्यवहार और आरचण दोनों प्रभावित होता है । बड़ों के क्रिया-कलापों और गतिविधियों को देखकर ही बच्चे सीखते हैं, बनते-बिगड़ते हैं । लेखिका बच्चों से कहती हैं, "हम बड़ों में से अधिकतर लोग अपने अमार्यादित व्यवहार से, अपने बुरे कार्यों से और अपने अनीतिपूर्ण आचरण से आप जैसे संवेदनशील और नादान बच्चों का भविष्य अंधकारमय बना देते हैं । इसलिए दोष बड़ों का ही है, बच्चों नहीं । बाल-मन की अनुभूति उसे बार-बार यह सोचने पर विवश करती है कि क्यों नहीं हम सब प्रेमपूर्वक मिल-जुलकर रहते, हिंसा और आतंक के समर्थक भक्षक बने लोग एक दूसरे के रक्षक क्यों नहीं बन जाते ? क्यों नहीं सब अच्छे, सच्चे और बच्चों के समान निर्मल मन के हो जाते ?"

'अच्छे सब बन जाएं मां' (बाल कविता-संग्रह) में कीर्ति भटनागर की 37 कविताएं संकलित हैं । सुश्री भटनागर ने बड़े मनोयोग और बड़े जतन से इनका सृजन किया है और मां के ममतामय हृदय को, मन की सदाकांक्षा को शब्दों का अत्यन्त मनोहारी जामा पहनाया है । हर मां की अभिलाषा होती है कि उसका बच्चा अच्छा-सच्चा इन्सान बने, आदर्श विश्व नागरिक बने, मानवता उपकारक बने, जग में अपना नाम रौशन करे । लेकिन हर मां इतनी सौभाग्यशालिनी

पुस्तक	: अच्छे सब बन जाएं मां (बाल कविता-संग्रह)
कवयित्री	: कीर्ति भटनागर
पृष्ठ	: 60 मूल्य : 75.00
प्रकाशक	: संगम पब्लिकेशंज़, पटियाला-147001 (पंजाब)
मोबाइल	: 09915103490

नहीं होती, कुछ ही बच्चे सफलता की, महानता के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ पाते है, जग में अपना नाम रौशन कर पाते हैं ।

'अच्छे सब बन जाएं मां' इस संग्रह की पहली कविता है । बच्चा निर्मल और निश्छल मन होता है । वह कहता है–

मैं तो छोटा बच्चा हूं,
अभी अक़्ल का कच्चा हूं ।
जो भी हूं, जैसा भी हूं,
मन सीधा सच्चा हूं ।।

बाल-मन पर समाज का प्रभाव पड़ता है और बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है । आज समाज विभिन्न विरोधी भावों से प्रदूषित हो गया है, अलगाव, रिसते घाव, परायापन, विभिन्न विरोधी भावों, छल-कपट, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार इत्यादि से भर गया है । ऐसे में एक नेकदिल बच्चा अपनी मां से कहता है–

अच्छे सब बन जाएं मां,
सच्चे सब बन जाएं मां ।
सरल आरचरण हो सबका,
बच्चों सम बन जाएं मां ।।
तब धरती यह महकेगी,
चिड़िया जैसी चहकेगी ।
विपदाओं की ज्वाला में,
नहीं कभी फिर दहकेगी ।।

(पृ॰ 11)

हमारा समाज विभिन्न प्रकार की विषमताओं से भरा है । ऊंच-नीच, सम्पन्नता-विपन्नता, भेदभाव इत्यादि सबसे

ख़तरनाक तरह की विषमता हैं । एक वर्ग के कुत्ते दूध-मलाई पर पलते हैं और एसी॰ रूम में रहते हैं, हर प्रकार के मज़े करते हैं और दूसरे वर्ग के बच्चे एक जून की रोटी को तरसते हैं, भीषण गर्मी और चिलचिलाती धूप में, जानलेवा लू में फूटपाथ पर मर-मर कर जीते हैं । 'मेरा छोटा सा घर हो' कविता में एक निर्धन बच्चे के इसी मनोभाव का बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है ।

सफ़ाई अभियान पर एक बहुत ही सुन्दर कविता है– 'नित त्योहार मनाएं' । त्योहार आते ही हर चीज़ की सफ़ाई की जाती है । इसमें बच्चे और ख़ासकर बच्चियां घर-बाहर, कपड़े, बर्तन इत्यादि की सफ़ाई करती हैं । इस्लाम तो सफ़ाई-सुथराई को आधा ईमान कहा गया है । एक बच्चा सफ़ाई अभियान की सोचता है–

सोच रहा मैं, हम सारे ही,
यह अभियान चलाएं ।
साफ़ रखें घर-बाहर अपना,
नित त्योहार मनाएं ।।

(पृ॰ 15)

बच्चों को पशु-पक्षियों से बहुत प्यार होता है । वे चाहते हैं कि कोई पशु या पक्षी उसका अभिन्न मित्र बनकर उसके अकेलेपन को दूर करे । एक बच्चे के इसी मनोभाव का चित्रण 'चिड़िया रानी आओ न' शीर्षक कविता में बड़े ही सरस, चपल और मधुर शब्दों में किया गया है । देखिए–

चिड़िया रानी आओ न,
मुझसे तो घबराओ न ।
आंगन में पानी रखा,
आ उसको पी जाओ न ।।

(पृ॰ 16)

मां जैसा ही ध्यान रखूंगा,
नहीं दूर कभी जाऊंगा ।
बहुत अके मैं भी चिड़िया,
मित्र मेरी बन जाओ न ।।

(पृ॰ 17)

जात-पात की प्रथा भारत में हज़ारों वर्ष पुरानी है । समय के साथ इसमें कमी तो आई है, लेकिन यह आज भी भारतीय समाज के रग-रग में रचा-बसा है । इसे दूर करना टेढ़ी खीर के समान दुस्साध्य है । 'बस यही बताना है' में एक बच्चा जात-पात की दिल दहलाने वाली दीवार को ढहाकर विश्व-बन्धुत्व की मिसाल क़ायम करना चाहता है–

यह सारा जग ही अपना,
हम सबके बन जाएं ।
जात-पात को बिसरा कर,
सबको गले लगाएं ।।

(पृ॰ 13)

जात-पात की बेड़ी को,
हम सब तोड़ गिराएंगे ।
सभी एक हैं इस जग में,
सबको गले लगाएं ।
सभी जिएंगे घर-घर में,
साहस और सम्मान से ।।

(हम बालक हिन्दुस्तान के, पृ॰ 30)

भारतीय समाज में बेटा-बेटी के बीच भेदभाव की भावना बहुत गहरी है । इस भावना का मार्मिक चित्रण कवयित्री ने 'मां मुझको भी गले लगा लो' शीर्षक कविता में किया है । एक बेटी के मन की व्यथा को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है –

मां बोलो क्यों भैया तुझको,
मुझसे ज़्यादा प्यारा है ?
नहीं लाडली क्या मैं तेरी,
वही आंख का तराह है ?

(पृ॰ 35)

बोलो न मां, उसमें, मुझमें,
भेदभाव क्यों करती हो ।
उसे प्यार से गले लगाती,
मुझपर सदा बरसती हो ।
आ मुझको भी गले लगा लो,
मन से तो अपना लो, मां ।
प्यार भरे आंचल में अपने,
आकर मुझे छिपा लो, मां ।।

(पृ॰ 36)

कुल मिलाकर कीर्ति भटनागर का यह कविता-संग्रह भाषा और भाव दोनों दृष्टि से एक सशक्त संग्रह है । इसमें बाल-मन का अत्यन्त मनोहारी और सरस चित्रण हुआ है । भाषा सरल, सरस, चपल, मधुर और प्रवाहमयी है । प्रूफ़ की दृष्टि से यह संग्रह बहुत ही साफ़-सुथरा है । पतिव्रता कवयित्री इस संग्रह में कविताव्रता हो गई हैं । इंशाअल्लाह, समय-शिला पर इस संग्रह की कई कविताएं अपना नाम शानदार ढंग से अंकित कराने में सफल होगी ।

हम रमज़ान कैसे गुज़ारें ?

■ मौलाना अली मियां नदवी (रह०)

एक बार नबी करीम (सल्ल०) ने कहा कि मिम्बर के क़रीब हो जाओ । आपके प्यारे साथी (रजि०) मिम्बर के क़रीब हो गए । जब आप (सल्ल०) मिम्बर के पहले दर्जे पर पहुंचे तो 'आमीन' (ऐसा ही हो) कहा । दूसरे पर पहुंचे तो 'आमीन' कहा और तीसरे पर पहुंचे तो 'आमीन' कहा । जब खुतबा (धार्मिक अभिभाषण) देकर नीचे उतर आए तो सहाबा (रज़ि०) ने पूछा कि हमने आज आप (सल्ल०) से मिम्बर पर चढ़ते समय ऐसी बात सुनी, जो पहले कभी नहीं सुनी । आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : उस समय जिबरील (अलैहि०) मेरे सामने आए थे । जब मैंने पहले दर्जे पर क़दम रखा तो उन्होंने कहा : तबाह व बरबाद हो जाए वह आदमी जिसने रमज़ान का पवित्र महीना पाया, फिर भी उसकी मग़फ़िरत (छुटकारा) न हुई । मैंने कहा : आमीन । फिर जब मैं दूसरे दर्जे पर चढ़ा, तो उन्होंने कहा : तबाह व बरबाद हो जाए वह आदमी जिसके सामने आप (सल्ल०) का ज़िक्र हो और उसने दुरूद न पढ़ा । मैंने कहा : आमीन । मैं जब तीसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा कि तबाह व बरबाद हो जाए वह आदमी जिसके सामने उसके मां-बाप या उनमें से कोई एक बुढ़ापा को पाये और वह उसकी ख़िदमत करके जन्नत में न दाख़िल हो जाये । मैंने कहा : आमीन ।

रमज़ान ऐसा सुनहरा मौक़ा है कि कोशिश करे तो एक रमज़ान सारे गुनाह माफ़ करवाने के लिए काफ़ी है । जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े रखे और इस विश्वास के साथ रखे कि अल्लाह तआला के सारे वादे सच्चे हैं और सारे अच्छे कर्मों पर बेहतर बदला देगा । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े ईमान और एहतिसाब के साथ रखे, उसके अगले-पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे । ईमान और एहतिसाब का मतलब यह है कि बन्दे को अल्लाह तआला के तमाम वादों पर पूरा भरोसा हो और हर काम पर सवाब और पुण्य की नीयत करे और पूरी

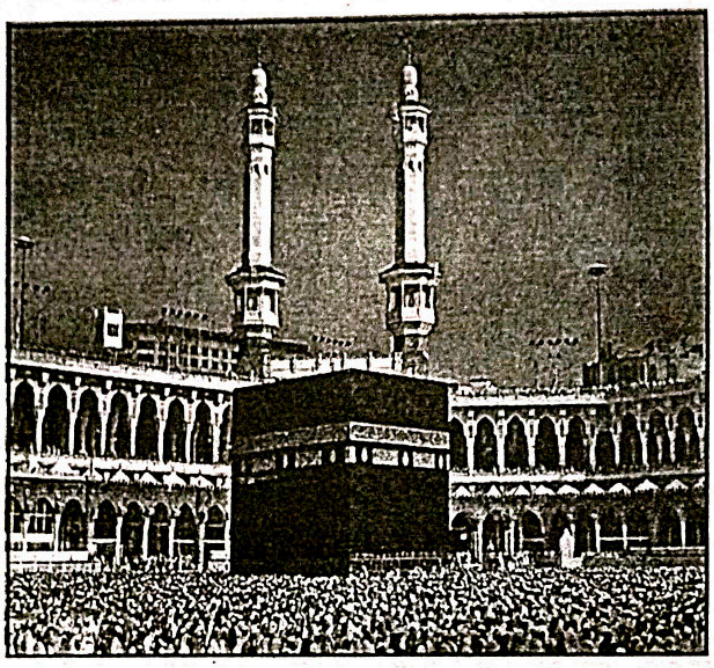

ईमानदारी के साथ अल्लाह को ख़ुश और राज़ी करने का लक्ष्य सामने हो । हर कर्म के समय अल्लाह की मर्ज़ी को देखे । ईमान व एहतिसाब ही है जो इन्सान के कर्म को ज़मीन से आसमान यानी अल्लाह तआला तक पहुंचा देता है । अस्ल में अइसी की कमी है । मुसलमानों का असल रोग बुरी नीयत नहीं, बल्कि नीयत की कमी है यानी वे सिरे नीयत ही नहीं करते । हम वज़ू करते हैं, लेकिन उसमें नीयत नहीं करते । हम दीन (धर्म) के दूसरे अरकान (रस्म) अदा करते हैं, मगर ईमान और एहतिसाब हमारी नज़र के सामने नहीं रहता । जब बहुत-से लोग किसी काम को करते हैं, तो वह रस्म बन जाती है ।

रोज़े का एक आम माहौल होता है । ऐसे में कोई इस अंदेशे से रोज़ा रखे कि हम रोज़ा न रखेंगे तो छुपकर खाने-पीने से क्या लाभ? यह विचार आया तो रोज़े की रूह निकल गई । बीमारियों में भी अक्सर भूखा रहना पड़ता है । रोज़े की हक़ीक़त है कि अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में जो चीज़ें छोड़ने को कही गयीं हैं उनको छोड़ देना । पहले हम यह भावना पैदा करें कि अल्लाह तआला ही हक़ (सत्य) है, सवाब की लौ लगी हो और दिल को

रोज़ों की अनिवार्यता

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक कर्म उसके लिए है सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा, और रोज़ा ढाल है । अत: जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात ज़ुबान पर लाए और न शोर व हंगामा करे अगर कोई उससे गाली-गलौज करे या लड़ाई पर आमादा हो तो रोज़ेदार यह कह दे कि मैं रोज़े से हूं । और उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्ल॰) की जान है, रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है । रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं जो उसे प्राप्त होंगी : जब वह रोज़ा खोलता है तो उसे ख़ुशी प्राप्त होती है और जब अपने रब से मिलेगा, तो उसे अपने रोज़े के कारण ख़ुशी होगी ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

ये शब्द बुख़ारी की रिवायत के हैं और उन्हीं की एक रिवायत में है : "वह अपने खाने-पीने और अपनी कामेच्छा को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा और नेकी का बदला दस गुना मिलेगा ।"

मुस्लिम की एक रिवायत में है : "आदम के बेटे के हर कर्म का सवाब दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है । अल्लाह तआला कहता है : किन्तु रोज़े की बात और है क्योंकि वह मेरे ही लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । वह अपनी कामेच्छा और अपने खाने को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं : एक ख़ुशी तो रोज़ा खोलने के समय होती है और एक अपने रब से मुलाक़ात करते समय होगी । और उसके मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है ।"

● हज़रत सहल बिन सआद (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जन्नत में एक द्वार है जिसे 'रैयान' कहते हैं । क़ियामत के दिन उसमें से रोज़ेदार प्रवेश करेंगे । उनके सिवा कोई और उससे प्रवेश न करेगा । कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? वे उठेंगे । उनके सिवा कोई और उससे प्रवेश न करेगा । फिर जब वे दाख़िल हो जाएंगे, तो उस द्वार को बन्द कर दिया जाएगा, फिर कोई उससे प्रवेश न करेगा ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू सईद अल-ख़ुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो बन्दा एक दिन अल्लाह की राह में रोज़ा रखता है, तो अल्लाह उस दिन के बदले उसके चेहरे को अवश्य ही आग से सत्तर साल की यात्रा के फ़ासले तक दूर कर देता है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने रमज़ान का रोज़ा ईमान के साथ और सवाब के लिए रखा उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

इत्मीनान हो कि सवाब मिल रहा है । इसी में आनन्द आये ।

कर्मों के क़बूल होने की निशानियां और लक्षण

किसी इबादत (उपासना) की विशेषता और उसके क़बूल होने की दलील यह है कि दिल के अंदर दया, नर्मी, आदर-सत्कार और विनम्रता की भावना पैदा हो । लेकिन जब इसके विपरीत घमंड और अहंकार पैदा हो तो समझ लेना चाहिए कि हमारी इबादत क़बूल नहीं हुई । उसमें कमी रह गयी है । इसलिए इन चीज़ों को दूर करने के लिए ईमान और एहतिसाब को नज़र के सामने रखना और उससे बचना ज़रूरी है । बेसोचे-समझे नीयत के बिना रोज़े रख लेना कोई और इबादत है, रोज़ा नहीं है । ऐसा करना बेकार है । एक साहब कहने लगे : मैं इसलिए रोज़े रखता हूं कि जो मज़ा इफ़्तार के समय आता है, वह दुनिया की नेमत में नहीं । हालांकि उनका अल्लाह तआला पर ईमान भी नहीं था । हमें चाहिए कि हम दिन में कई बार नीयत को ताज़ा कर लिया करें । हर समय अभिमान से बचें । अल्लाह के रसूल

(सल्ल॰) ने फ़रमाया कि आदम की औलाद के हर कर्म पर उसको दस से 700 गुना तक पुण्य मिलेगा । अल्लाह ने फ़रमाया : सिवाय रोज़ा के कि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । यह बन्दा सारी रुचिकर चीज़ें मेरे लिए छोड़ता है, इसलिए मैं ख़ुद ही बदला दूंगा ।

रोज़े अच्छे काम करने की शक्ति पैदा करते हैं

दूसरी बात यह है कि दीन-धर्म के जितने भी अरकान (आवश्यक विधान) हैं, वे ताक़त पैदा करते हैं । यानी इबादत दूसरी इबादत के लिए मददगार साबित होती है और उसके लिए शक्ति का कारण बनती है । जिस तरह एक भोजन दूसरे भोजन के लिए मददगार साबित होता है । इस तरह एक फ़र्ज़ की अदायगी दूसरे फ़र्ज़ों की अदायगी में सहायक साबित होती है और उसको शक्ति या ऊर्जा उपलब्ध कराती है । यह बात नहीं है कि हर रुक्न (इबादत का अंग) अलग-अलग है । हर एक का अनिवार्यता और उसका महत्ता बहरहाल अपनी जगह है । मगर एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि एक-दूसरे की मदद के लिए है । इस तरह रोज़ा साल के पूरे ग्यारह महीने की इबादत के लिए ताक़त पैदा करता है । रोज़े की वजह से दूसरी इबादत की अदायगी में ज़ौक़ो-शौक़ पैदा होता है और ऊर्जा मिलती है ।

रोज़ का उद्देश्य इंद्रियों पर क़ाबू पाना है

तीसरी बात यह है कि रोज़े का उद्देश्य यह है कि इंद्रियों और मन पर क़ाबू पाया जाये और रोज़े की वजह से इंद्रियों (नफ़्स, मन) पर क़ाबू पाना आसान हो जाये, दीन का ज़ौक़ व शौक़ पैदा हो, इबादत की अदायगी में अभिरुचि पैदा हो । अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : ऐ ईमानवालो, रोज़े तुमपर फ़र्ज़ किए गये, जैसे तुमसे पहलों पर फ़र्ज़ किए गये थे, ताकि तुम तक़वा वाले हो जाओ । 'तक़वा' का अनुवाद कुछ लोगों ने 'लिहाज़' किया है । यानी हर काम को करते समय इस बात का लिहाज़ रखा जाए कि यह काम अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ है या नहीं । हलाल और हराम की तमीज़ हो जाए और इस तरह अभ्यास हो जाए कि स्वभाव बन जाए । जिस तरह ईद के दिन आप खाने-पीने में झिझक महसूस करते हैं, इस वजह आपको खाना-पीना आदत के ख़िलाफ़ मालूम होता है, हालांकि यह क्षणिक चीज़ थी । इसी तरह गुनाहों से बचना, खाने-पीने से परहेज़, चुग़ली और बुराई करना, गुस्से और जलन से परहेज़ इस तरह हो कि आपकी आदत बन जाए । जो चीज़ें हमेशा के लिए हराम हैं, उनको करने में तो और भी ज़्यादा आपको चौकन्ना रहना चाहिए । रोज़े से ज़िन्दगी में बदलाव आना चाहिए । आप रोज़ा रखें, लेकिन गाली देना, चुग़ल करना, बुराई करना, गुस्सा व जलन न छोड़ें तो रोज़े से कोई फ़ायदा नहीं ।

असल बात तो यह है कि रोज़ा आपकी ज़िन्दगी को साफ़-साफ़ बदल दे । रोज़े में आपने खाने-पीने और दूसरे चीज़ों से बचते हैं तो उसपर क़ायम रहिए और उन चीज़ों को दोबारा न कीजिए जिनको, आपने रोज़े की वजह से छोड़ दिया था । अगर रोज़े के ख़त्म होते ही सभी चीज़ों में फिर मुब्तला हो गए हैं तो इससे यही बात समझ में आयेगी कि आपने रोज़ा तो रखा, मग़र रोज़ा क़बूल नहीं हुआ ।

आप इस तरह से रोज़ा रखिए कि कोई ग़ैर मुस्लिम देखे तो समझे कि सचमुच रोज़ा रखते हैं और ये रमज़ान के दिन हैं, पूरे एहतिमाम को ध्यान में रखा जाए और तमाम तक़ाज़ों को पूरा किया जाए ।

एक बार अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : जब तुममें से कोई शख़्स रोज़ा रखे और उससे कोई उलझने लगे तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं । मन की तमाम कमज़ोरियों को दूर करे । रोज़ा इस तरह से न रखे कि गुस्से से भरा बैठा रहे और लोग उससे केवल इस वजह से बातचीत करने से डरे कि भाई, इनसे बातचीत न करो वरना ये बिगड़ जाएंगे । खाने में ज़र्रा बराबर भी नमक की कमी हो तो गुस्से की हद कर दे । इन चीज़ों से परहेज़ करें । अगर रोज़े के तमाम तक़ाज़ों का ख़्याल रखा गया तो उसका असर ग्यारह महीनों पर पड़ेगा और उसकी ज़िन्दगी में एक स्पष्ट बदलाव आएगा ।

चौथी बात यह कि रोज़ा में जिन चीज़ों से बचने को कहा गया है और जिन चीज़ों के करने का हुक्म दिया गया है उनका लिहाज़ रखें । रोज़े का यह मंशा मालूम होता है कि अल्लाह तआला की तरफ़ ज़्यादा से ज़्यादा लौ लगाया

जाए । न तिलावत की, न सदक़ा, न ख़ैरात किया, न तरावीह पढ़ी, सिर्फ़ रोज़ा रख लिया, इससे कोई फ़ायदा नहीं । तौबा व इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम हो, दुआ की तरफ़ ज़्यादा ध्यान रहे, रात के आख़िरी पहर एहतिमाम से उठें, क्योंकि उसकी ज़्यादा अहमियत है । अल्लाह तआला उस समय पुकारता है कि है कोई मेरा बन्दा, जो मुझे पुकारे और मैं उसको सुनूं । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) इसका बहुत एहतिमाम करते थे ।

ख़ैरात और सदक़ा का महीना

इस महीने ख़ैरात और सदक़ा (दान-पुण्य) भी ज़्यादा करें । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस माह को नेकी और हमदर्दी का महीना बताया है । इसका मतलब यह है कि अल्लाह की तरफ़ ज़्यादा ध्यान हो और सदक़ात और ख़ैरात में ज़्यादा हिस्सा लें । लोगों के हालात का सुराग़ लगा कर पता चलाएं और तोहफ़े आदि भेजें । अल्लाह के कितने बन्दे ऐसे हैं जिनको सिर्फ़ रोज़ा इफ़्तार करने के लिए मस्जिद में मिल जाता है । वे भूखे रहते हैं । इसलिए ऐसे ज़रूरतमंद लोगों का पता लगाकर उनकी मदद की जाए । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) इसका बड़ा ही एहतिमाम करते फ़रमाते थे । आप (सल्ल०) के बारे में आता है कि लोगों में सबसे ज़्यादा दानी थे । दूसरे मौक़े पर आता है कि तूफ़ान की तरह दान करते थे और उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे और दिल खोलकर ग़रीबों, बेवाओं और यतीमों की मदद करते थे ।

तौबा-इस्तिग़फ़ार का महीना

इन्सान को समझना चाहिए कि हमारी इबादत क्या, हम तो अल्लाह तआला के लायक़ कुछ भी इबादत नहीं कर सकते । हम तौबा-इस्तिग़फ़ार यानी अपनी ग़लतियों की माफ़ी भी अच्छी तरह नहीं मांग सकते । इसलिए हमें भूखों, लाचारों और असहायों ही की मदद करनी चाहिए, ताकि संभव है कि अल्लाह के किसी बन्दे का दिल खुश हो जाए तो अल्लाह तआला उसी को क़बूल फ़रमा ले और हमारा मक़सद पूरा हो जाए । हमारी इबादत तो क़बूल होने के लायक़ नहीं, लेकिन अल्लाह की राह में कुछ ख़र्च करने से संभव है अल्लाह इसी को क़बूल कर ले । इस महीने में हमें पूरी तरह ख़ैरात व सदक़ात की तरफ़ अपना ध्यान लगाना चाहिए और कमर कस लें कि इस महीने पूरा फ़ायदा उठाना है । हदीस शरीफ़ में आता है, "ऐ ख़ैर के चाहने वाले, आगे बढ़ और ऐ बुराई के चाहने वाले पीछे हट ।" एक दूसरी हदीस में आता है है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन बन्दे से पूछेगा कि ऐ बन्दे, मैं बीमार था, तूने मेरी ख़बर-ख़ैरियत नहीं पूछी । मैं भूखा था, तूने मुझे खाना नहीं खिलाया । बन्दा जवाब में कहेगा : ऐ अल्लाह पाक ! तू कैसे बीमार हो सकता है ? तू कैसे भूखा हो सकता है ? तो अल्लाह तआला फ़रमायेगा : मेरा फ़लां बन्दा बीमार था, अगर तू उसकी देख-भाल करता तो तू मुझे वहां पाता । फ़लां बन्दा भूखा था, अगर तू उसे खाना खिलाता, तो तू मुझे वहां पाता ।

हमदर्दी और भलाई का महीना

इसलिए यह ज़रूरी है कि जो लोग मुहताज व बेवाएं, ग़रीब और मजबूर हैं उनकी मदद की जाए । ग़रीबों की जो लड़कियां हैं, उनकी शादी करा दी जाए । अगर हमने ऐसा न किया तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन हम सबसे हिसाब लेगा और बड़ा कठोर पूछगछ करेगा ।

यह हमारा माल नहीं है, जिसे हम ख़र्च करते हैं, बल्कि यह अल्लाह की अमानत है । हम अगर उसको विभिन्न समारोहों या उत्सवों के अवसर पर ख़र्च करते हैं तो ग़लत करते हैं । अगर उसको ग़लत मौक़ों पर ख़र्च करते हैं तो नाजाइज़ करते हैं । हमारे लिए सही नहीं कि हम ख़र्च करें । हमें इसकी फ़िक्र करनी चाहिए कि कितनी बेवाएं और यतीम हैं, कितने मुहताज और मजबूर हैं, जिन्हें ज़रूरत हैं । हमें उन तमाम जगहों पर ख़र्च करना चाहिए, जहां दूसरों की मदद और सहायता हो सके और अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो सके ।

भाई, कलाम पाक (पवित्र क़ुरआन) में आज भी वही प्रभावकारी गुण है, अगर हमारे पास ज़बान नहीं, हमारे सीनों में दिल नहीं, जिससे सहाबा (रज़ि०) और अल्लाह वाले तिलावत (क़ुरआन पाठ) करते थे । इसलिए पहले अपनी ज़बान को पाक करो और दिल साफ़ करो । उसके बाद अल्लाह के कलाम (क़ुरआन) की तिलावत करोगे तो उसका असर होगा, अल्लाह वालों की ज़बान में असर होता है ।

रोज़े की विशिष्ट महत्ताएं

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

रोज़े के अनेक लाभ हैं । इस्लाम में इसकी महत्ता स्पष्ट है । यह इसका चौथा स्तंभ है । रोज़े के इतने लाभ हैं कि इन पर पूरी किताब लिखी जा सकती है । आपकी जानकारी के लिए हम यहां रोज़ों के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाल रहे हैं ।

रोज़ा ईश परायणता और ईशभय का स्रोत है । इसके द्वारा इन्सान के भीतर तक़्वा (ईश परायणता) का गुण उत्पन्न होता है । इस बारे में क़ुरआन, सुन्नत (हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की जीवनचर्या) आदि में उल्लेख किया गया है । अल्लाह ने रोज़ा को इन्सानों के लिए अनिवार्य ठहराया है ।

क़ुरआन में लिखा है, "ऐ ईमान वालों । तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस प्रकार तुम से पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे आशा है कि तुममें तक़्वा (ईशपरायणता) का गुण पैदा होगा ।"

इसी प्रकार अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा है "रोज़ा (दुनिया में गुनाहों से और आख़िरत में नरक से बचाने वाला) ढाल है ।"

एक हदीस में लिखा है, "अतः जब तुममें से किसी का रोज़ा हो तो चाहिए कि वह अश्लील बातें न करें, न ही शोर मचाए और यदि कोई उससे गाली-गलौच करे या लड़ने भिड़ने पर उतर आये तो (उससे भी और अपने मन में भी) कहे कि मैं रोज़े से हूं, मैं रोज़े से हूं ।"

यूं तो प्रत्येक मुसलमान के लिए बुरी बात कहने और गाली-गलौच करने तथा लड़ने-भिड़ने से बचना हर हाल में आवश्यक है लेकिन जब वह रोज़े से हो तो उसके लिए शांति की इस नीति की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है । सामान्य दशा में वह यदि इस तरह की कमज़ोरियों से पूरी तरह सुरक्षित नहीं रह पाता तो कम से कम रोज़े की दशा में तो उसे इनके निकट कदापि नहीं जाना चाहिए ।

तक़्वा (ईशपरायणता) अल्लाह की नाराज़गी से बचने के उस गहरे एहसास का नाम है, जो इन्सान को प्रत्येक भले कार्य के लिए उभारता और हर बुरे कार्य से रोकता रहता है । यह हृदय की एक विशिष्ट दशा है, जिससे एक विशेष प्रकार की व्यावहारिक नीति अस्तित्व में आती है । यह नीति अल्लाह के आज्ञापालन और उसकी प्रसन्नता की प्राप्ति की नीति है । इस दशा से जो हृदय आपूरित होता है, वह प्रत्येक समय यह देखता रहता है कि मेरा ईश्वर कहीं मुझ से नाराज़ न हो जाए और मैं कोई ऐसा कार्य न कर बैठूं, जिसे वह पसन्द न करता हो और कोई ऐसा काम करने से रुक न जाऊं, जिसे वह पसन्द करता हो ।

रोज़े की महत्ता यह भी है कि तक़्वा (ईशपरायणता) सही अर्थ में रोज़े के बिना पैदा ही नहीं हो सकता । निस्संदेह ऐसी बहुत-सी चीज़ें हैं, जो तक़्वा के विकास में सहायक हैं मगर रोज़ा इस सिलसिले में जो भूमिका निभाता है, वह इसी का भाग है । दूसरा कोई कर्म इसका विकल्प नहीं बन सकता । तक़्वा के अपेक्षित गुण रोज़ों के द्वारा ही परवान चढ़ते हैं । रोज़े की एक विशिष्ट महत्ता यह भी है कि यह कुछ दृष्टियों से इस्लाम के मूल स्वभाव का सबसे बड़ा प्रतिबिंब है और इस्लाम की जो धारणा क़ुरआन ने दी है, उसकी विशिष्ट रूप-रेखा रोज़े के आईने में सबसे अधिक स्पष्ट रूप में दिखायी देती है ।

इसका अर्थ यह है कि रोज़ा इन्सान को केवल कर्म से ही परहेज़गार नहीं बनाता बल्कि सोच व दृष्टि का भी परहेज़गार बनाता है । वह इन्सान को तक़्वा ही नहीं प्रदान करता अपितु इसका व्यापक अर्थ भी प्रदान करता है । नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया है, "जिसने जीवन भर लगातार रोज़े रखे, उसका रोज़ा, रोज़ा नहीं ।"

एक सफ़र के दौरान नबी (सल्ल॰) ने देखा कि लोगों की भीड़ इकट्ठी है और एक व्यक्ति के ऊपर इन लोगों ने छाया करके रखी है । नबी (सल्ल॰) ने पूछा, "यह सब क्या मामला है ?"

उन्हें बताया गया कि यह एक रोज़ेदार है तो नबी (सल्ल॰) ने कहा, "यह कोई नेकी का काम नहीं है कि सफ़र में (इस प्रकार का, जिसकी कठिनाइयां सामान्य रहन शक्ति से बाहर हो) रोज़ा रखा जाए ।" अल्लाह से हमारी यही दुआ है कि रोज़ा सभी रोज़ेदारों भीतर अपेक्षित गुण पैदा करे ।

रमज़ान के रोज़े और चरित्र-निर्माण

■ डॉ॰ मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

रोज़ा को अरबी में सौम कहते हैं, जिसका अर्थ है रुक जाना अर्थात रोज़ा रखने वाला भोर से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने तथा संभोग से रुक जाता है । रोज़ा वास्तव में अपनी इंद्रियों को अपने वश में रखने का उत्तम साधन है ।

अधिक खाने-पीने से मनुष्य की भोगेच्छा (शहवत) बढ़ती रहती है । और शैतान जो हमारे रक्त के साथ-साथ घूमता रहता है हमें सरलतापूर्वक पथभ्रष्ट कर सकता है । इसलिए रोज़ा भी भोगेच्छा को वश में रखने का उत्तम साधन है । इस्लाम से पहले भी लोगों पर रोज़ा अनिवार्य किया गया था परन्तु उन्होंने रोज़े को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया और फिर वे रहबानियत अथवा संन्यास की ओर निकल गये । इस्लाम चूंकि एक मध्यमार्गी धर्म है इसलिए इसने रोज़े को साधन तो बनाया, उद्देश्य नहीं, इसलिए जहां सदैव रोज़ा रखने से मना फ़रमाया, वहीं भिन्न-भिन्न अवसरों पर रोज़ा रखने का हुक्म भी दिया । यद्यपि अनिवार्य रोज़ा केवल रमज़ान के महीने का ही है ।

"ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े अनिवार्य किये गये हैं । जिस प्रकार तुमसे पहले लोगों पर अनिवार्य किये गये थे ।" (कुरआन सूरा-2, अल-बक़रा आयत : 183)

यहां रोज़े से अभिप्राय रमज़ान के रोज़े हैं, क्योंकि रमज़ान वह शुभ महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया । इसलिए इस महीने को रोज़े जैसी महान इबादत का महीना बना दिया गया ।

रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया जो लोगों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है, और जो ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली है । अत: अब से तुममें से जो भी इस महीने को पाये, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे । हां, जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो तो वह दूसरे दिनों में यह गणना पूरी करे । अल्लाह की इच्छा तुम्हारे साथ आसानी की है, कठोरता की नहीं, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा



है) और चाहता है कि तुम गणना पूरी कर लो और अल्लाह के प्रदान किये गये मार्गदर्शन के अनुसार उसकी महिमा का वर्णन करो एवं उसके कृतज्ञ रहो ।

(सूरा-2, अल-बक़रा, आयत-185)

रोज़ा क्या है ?

अल्लाह की प्रसन्नता के लिए भोर से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने तथा संभोग करने से अपने आपको बचाकर रखना रोज़ा कहलाता है । इस इबादत से इन्द्रियों को शुद्ध करने और उनको अपने वश में रखने में सहायता मिलती है । इसलिए उन लोगों की निंदा की गयी है जो भोर से सूर्यास्त तक भूखे प्यासे रहकर भी अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं कर पाते ।

नबी का फ़रमान है ।

"जिसने झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा, तो अल्लाह उसके भूखे-प्यासे रहने का मोहताज नहीं" (सहीह बुख़ारी 1903)

एक सहीह हदीस में रोज़े का महत्व बताते हुए नबी ने फ़रमाया–

"अल्लाह का कहना है कि हर कर्म का बदला मनुष्य को मिलता है सिवाय रोज़े के । चूँकि वह मेरे लिए (अर्थात मेरी प्रसन्नता के लिए) खाना-पीना छोड़ देता है, इसलिए इसका प्रतिफल मैं स्वयं दूंगा । रोज़ा (बुराइयों से रोकने की एक ढाल है तो जिसका रोज़ा हो उसे चाहिए कि निर्लज्जता की बातें और बकवास न करे और अगर उसे कोई गाली दे तो कह दे कि भाई मैं रोज़े से हूं । अल्लाह की क़सम, रोज़ेदार के मुंह से जो दुर्गंध निकलती है वह अल्लाह की नज़र में मुश्क की सुगंध से भी अच्छी है । रोज़ेदार के लिए दो खुशियां हैं, एक जब वह रोज़ा खोलता है (अर्थात शाम को) दूसरी जब वह अल्लाह से मिलेगा ।

(सहीह बुख़ारी 1904 तथा सहीह मुस्लिम 1151)

रमज़ान का रोज़ा बग़ैर उचित कारण के छोड़ना निषिद्ध है । परन्तु यह हदीस जिसमें कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति रमज़ान में बग़ैर कारण रोज़ा छोड़ दे तो पूरे जीवन के रोज़े भी उसका बदला नहीं हो सकते । यह हदीस सुनन की किताबों जैसे अबू दाऊद 2396, तिरमिज़ी 723, इब्ने माजा 1672 इत्यादि हदीस ग्रंथों में पायी जाती है, परन्तु एक मुहद्दिस के विचार में यह ज़ईफ़ है ।

यद्यपि रोज़े की हालत में खाना-पीना तथा संभोग आदि करना निषिद्ध है परन्तु यदि कोई खा-पी ले या संभोग कर ले तो उसे एक गुलाम आज़ाद करना पड़ेगा, ऐसा न कर सके तो दो महीने के रोज़े रखने पड़ेंगे । अगर यह भी न कर सके तो साठ मुहताजों को भोजन कराना पड़ेगा ।

(देखिए : बुख़ारी 1936 तथा मुस्लिम 1111)

यह उस दशा में है जबकि पति ने पत्नी की इच्छा के विरुद्ध संभोग किया हो । परन्तु दोनों ने अपनी इच्छा से संभोग किया हो तो दोनों पर कफ़्फ़ारा अनिवार्य होगा ।

परन्तु रात्रि में पति-पत्नी संभोग कर सकते हैं ।

अब कुछ ऐसे रोज़ों का वर्णन किया जाता हे जो अनिवार्य नहीं है ।

1. रमज़ान के बाद शव्वाल के छह रोज़े : सहीह हदीस में आया है कि जिसने रमज़ान के रोज़े रखे, और उसके बाद शव्वाल के छह रोज़े रखे तो वह ऐसा है जैसे कि उसने पूरे जीवन रोज़े रखे ।

(देखिए : सहीह मुस्लिम 1164)

2. अरफ़ात का रोज़ा : अर्थात उस दिन का रोज़ा जिस दिन हाजी अरफ़ात के मैदान में अल्लाह की इबादत के लिए इकट्ठा होते हैं, जो मक्का के अनुसार 9 जिलहिज्जा होता है । इस दिन का रोज़ा रखने वाले के एक वर्ष पिछले और एक वर्ष आने वाले में सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं । (देखें : सहीह मुस्लिम 1162)

परन्तु हाजियों के लिए उत्तम यही है कि वे यह रोज़ा न रखें ।

3. आशूरा का रोज़ा : अर्थात मुहर्रम की दस तारीख़ का रोज़ा । पहले तो यह रोज़ा अनिवार्य था, परन्तु जब रमज़ान का रोज़ा फ़र्ज़ हो गया तो यह नफ़्ल हो गया ।

4. प्रत्येक अरबी महीने की 13, 14 और 15वीं तारीख़ का रोज़ा : सहीह हदीसों में आता है कि नबी (सल्ल०) इन तीन दिनों के रोज़े रखना कभी नहीं छोड़ते थे ।

5. शाबान के रोज़े : नबी (सल्ल०) रमज़ान के अतिरिक्त जिस महीने सबसे अधिक रोज़े रखते थे वह शाबान का महीना था ।

(देखिए : बुख़ारी 1969 तथा मुस्लिम 1156)

6. सोमवार तथा वृहस्पतिवार का रोज़ा : नबी (सल्ल०) इन दोनों दिनों के रोज़े अवश्य रखते थे, क्योंकि इन दो दिनों में मनुष्य के कार्य का लेखा-जोखा अल्लाह के पास भेजा जाता है । एक दूसरी हदीस में आया है कि चूंकि मैं सोमवार को पैदा हुआ और उसी दिन मुझ पर क़ुरआन उतारा गया इसलिए मैं इस दिन रोज़ा रखता हूं ।

(देखिए : सहीह मुस्लिम 1162)

7. दाऊद का रोज़ा : एक दिन रोज़ा रखना एक दिन रोज़ा छोड़ना इसको सौमे दाऊद कहते हैं ।

(देखिए : बुख़ारी, 1153 तथा मुस्लिम 1159)

ये कुछ वे रोज़े हैं जो अनिवार्य तो नहीं हैं, परन्तु इन रोज़ों का सवाब और पुण्य बहुत है । इसमें पुरुष तथा स्त्री दोनों सम्मिलित हैं । परन्तु स्त्री को चाहिए कि अगर वह नफ़्ल रोज़े रखती है तो अपने पति से अनुमति ले ले । क्योंकि सहीह हदीस में आया है–

"किसी पत्नी के लिए उचित नहीं है कि पति के घर में होते हुए उससे अनुमति के बिना (नफ़्ल) रोज़ा रखे"

(देखिए : बुख़ारी 5192, मुस्लिम 1026)

अब कुछ ऐसे रोज़ों का वर्णन किया जाता है जिनका रखना मकरूह (नापसन्दीदा) है–

1. जीवन के रोज़े : अर्थात पूरे जीवन रोज़े रखना । इसको नापसन्दीदा (अप्रिय) कहा गया है । एक सहीह हदीस में आया है कि जिसने जीवन भर रोज़े रखे तो समझ लो उसने रोज़े रखे ही नहीं ।

(बुख़ारी 1979 तथा मुस्लिम 1159)

2. केवल शुक्रवार को रोज़ा रखना : जाबिर (रज़ि०) से प्रश्न किया गया कि क्या नबी (सल्ल०) ने शुक्रवार के रोज़े से मना फ़रमाया है ? तो उन्होंने कहा, हां ।

(देखिए : बुख़ारी 1984 तथा मुस्लिम 1143)

एक दूसरी हदीस में है कि केवल शुक्रवार का रोज़ा मत रखो । उससे पहले का दिन मिला लो, या उसके बाद का दिन मिला लो । (बुख़ारी 1986 तथा मुस्लिम 1144)

इसके नापसन्दीदा (अप्रिय) होने का एक कारण यह बताया गया है कि शुक्रवार ईद का दिन है, इसलिए अपने ईद के दिन को रोज़े का दिन मत बना लो । हां अगर उससे पहले एक दिन का रोज़ा रखना हो, या बाद के एक दिन का रोज़ा रखना हो तो कोई हरज नहीं ।

3. रमज़ान के स्वागत के लिए एक या दो दिन पहले रोज़ा रखना : नबी (सल्ल०) ने इससे मना फ़रमाया है । (देखिए : बुख़ारी 1914 तथा मुस्लिम 1082)

4. ईदैन (अर्थात ईदुल-फ़ित्र तथा ईदुल-अज़हा) को रोज़ा रखना : नबी (सल्ल०) ने इन दोनों ईदों के दिन रोज़ा रखने से मना फ़रमाया है ।

(देखिए : बुख़ारी 1197 तथा मुस्लिम 827)

5. तशरीक़ के दिनों के रोज़े : ज़िलहिज्जा की 11,12 और 13 तिथियों को तशरीक़ के दिन कहा जाता है । जिनमें क़ुरबानी की जाती है । इसलिए एक हदीस में नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"ये खाने-पीने और अल्लाह को स्मरण करने के दिन हैं । अर्थात रोज़ा रखने के नहीं ।"

(देखिए : मुस्लिम 1042)

साद बिन अबी वक़्क़ास का कहना है कि नबी (सल्ल०) ने मुझे हुक्म दिया कि मिना में मैं यह घोषणा कर दूं ।

"ये खाने पीने के दिन हैं । इन दिनों में रोज़ा नहीं होता ।" (मुस्नद अहमद 1:169)

इन दिनों में केवल वह हाजी रोज़ा रख सकता है जिस पर क़ुरबानी अनिवार्य हो, परन्तु वह कर न सकता हो, जिसकी ओर क़ुरआन संकेत करता है ।

तो जो कोई हज तक उमरे से लाभ उठाए (अर्थात तमत्तो हज करे) तो, वह जो क़ुरबानी कर सकता हो, करे और जिसे क़ुरबानी सुलभ न हो तो हज के दिनों में तीन दिनों के रोज़े रखे, और सात दिन के रोज़े जब तुम वापस हो, ये पूरे दस दिन हुए ।

(सूरा-2, अल-बक़रा, आयत 196)

अर्थात अगर वह तीन दिन हज से पहले रोज़ा न रख सका हो और तशरीक़ के दिनों में रखना चाहता हो तो रख सकता है । (देखिए : बुख़ारी 1999) यह विचार इब्ने उमर तथा आइशा (रज़ि०) का है और यही विचार दूसरे विद्वानों का भी है नबी (सल्ल०) से इस विषय में कोई सहीह हदीस नहीं आयी है ।

रोज़े के सामाजिक प्रभाव

■ डॉ॰ परवेज़ अख़्तर वारसी

"ऐ ईमान लाने वालो ! तुम पर राज़े अनिवार्य किये गये, जिस प्रकार तुम से पहले के लोगों पर किये गये थे, ताकि तुम डर रखने वाले बन जाओ । गिनती के कुछ दिनों के लिए–इस पर भी तुममें कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में संख्या पूरी कर ले । और जिन (बीमार और मुसाफ़िरों) को इसकी (मुहताजों को खिलाने की) सामर्थ्य हो, उनके ज़िम्मे बदले में एक मुहताज का खाना है । फिर जो अपनी ख़ुशी से कुछ और नेकी करे तो यह उसी के लिए अच्छा है और यह कि तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जानो ।"

(कुरआन, 2:183,184)

इस्लाम उसूल, अमन, शांति एवं सुरक्षा का धर्म है । वह जहां अपने मानने वालों को हुक्म देता है वहीं उन निर्देशों के अन्दर सुरक्षा व अनुशासन, व्यवस्थित कराता है । इस्लाम ने नमाज़ का हुक्म दिया है तो उसकी अदायगी में हुक्मे खुदाबंदी की बन्दगी में ज़िन्दगी को ताज़गी मिलती है । इस तरह रोज़ा जहां हुक्मे खुदाबंदी है, वहीं यह उनके मामलों में लाभदायक भी है । रोज़ा जीवन में अनुशासन लाता है । इन्साफ़ व ग़रीब परवरी सिखाता है । जब पेट भरा हुआ होता है तो दूसरों की भूख का एहसास नहीं होता और जब हमारी ज़ुबान पानी से तर होती है तो प्यास का हमें कहां एहसास होता है ?

रोज़ा मनुष्य को दयावान, रहमदिल, उदारवादी व ईमानदार बनाता है । इस्लाम सबका मज़हब है । इस्लाम अमीरों को अमन देता है । इस्लाम दौलत या दौलतमंदों का विरोधी नहीं है । बल्कि उसके मानने और ख़र्च करने के एहतियात बताता है । इस्लाम में रोज़ा रखने का तात्पर्य यह नहीं है कि सुबह से शाम तक भूखा-प्यासा रहना है । रोज़े रखने के अपने नियम है । रोज़े की हालत में परहेज़गारी अनिवार्य है । रोज़े की हालत में झूठ, चुग़ली, गाली, लड़ाई-झगड़ा, बेईमानी, गुस्सा, लालच, किसी औरत से नज़दीकी, किसी का दिल दुखाना सख़्ती से मना है । यदि कोई मनुष्य रोज़े की हालत में इसमें से कोई भी अमल कर गुज़रता है तो उसका रोज़ा नहीं माना जाता ।

रज़मान के पवित्र महीने में रोज़े के साथ अल्लाह की इबादत, मानसिक, रूहानी, शारीरिक पवित्रता, ज़कात के फ़र्ज़ को पूरा करते हुए ग़रीबों की आर्थिक मदद, रिश्तेदारों को उनका हक़ देना, अल्लाह के बन्दों से मुहब्बत करना, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति का हो, सबसे प्यार से बात करना, अपने गुनाहों से तौबा करना, रमज़ान में रोज़े रखकर ग़रीबों, भूखे, प्यासे यतीमों, बीमारों की तकलीफ़ों को महसूस करना उनकी मदद करना अपनी ज़िन्दगी को इन्सानियत की जीवनशैली में ढालना ही रोज़े का मुख्य उद्देश्य है ।

अल्लाह ने आप (सल्ल॰) के ज़रिये दुनिया के हर इन्सान को अच्छाई का रास्ता सिखाया । इस महीने में कुरआन मजीद नाज़िल हुआ । जिसमें इन्सान के लिए हिदायतें हैं । जीवन के हर पहलू पर ज़िन्दगी को गुज़ारने का सबक़ सिखाया जो केवल इन्सान की ही फ़लाह (बेहतरी) के लिए है ।

आज दुनिया में इस्लाम को बदनाम करने की साज़िश चल रही है, इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ा जाता है, इस्लाम को तलवार से जोड़ा जाता है । हमारे पास इसका कोई जवाब नहीं है क्यों ? इस्लाम की तारीख़ की जानकारी न हमें है न हमारे बच्चों को है । मदरसों में कुरआन ज़रूर पढ़ाया जाता है । मगर उसका अनुवाद कितने लोग जानते हैं ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की 63 साल की ज़िन्दगी के हर एक पल का हिसाब प्रमाणित रूप से दुनिया के हर शहर में मौजूद है । उनके पूरे जीवन में जिनकी वजह से आज इस्लाम ज़िन्दा है, कोई एक लम्हा यह साबित नहीं करता है कि इस्लाम किसी दूसरे धर्म से द्वेष की भावना रखता है । इस्लाम केवल प्यार, मुहब्बत, अमन व शांति का पेरूकार है ।

(शेष पृष्ठ 36 पर)

शिक्षा का महत्व

मुहम्मद निज़ामुद्दीन
(दरभंगा, बिहार)

शिक्षा प्राचीनकाल से ही रुचि का विषय रही है क्योंकि मनुष्य का जन्म एक जैविक प्राणी स्वरूप जिज्ञासु प्रवृत्ति के प्राणी के रूप में रहा है । शिक्षा का तात्पर्य सभी प्रकार के ज्ञान के संग्रह तथा मानव के चहुमुखी विकास से लिया जाता है । फिलिप्स कहते हैं–"शिक्षा वह संस्था है जिसका केन्द्रीय तत्व ज्ञान का संग्रह है ।" शिक्षा में पुरानी पीढ़ी द्वारा अपने ज्ञान को नयी पीढ़ी में हस्तांतरित करने के लिए प्रयास किया जाता है । यह एक सामाजिक व्यवस्था है जो व्यक्ति को उसके समाज से एकबद्ध करने और संस्कृति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । समाजशास्त्र की रुचि शिक्षा के अध्ययन में विशेष रूप से रही है विशेषत: इसके सामाजिक स्वरूप में समाजशास्त्री मुख्य रूप से शिक्षा पर सामाजिक स्थितियों के प्रभाव, शिक्षा की प्रकृति और सामाजिक परिवर्तनों में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं ।

शिक्षा का उद्देश्य समाज का बनाए रखना एवं व्यक्तियों के व्यक्तित्व को विकसित करना है । शिक्षा समाज में अज्ञान को दूर करती है एवं विभिन्न संस्कृतियों एवं रुचियों के लोगों में समझ का विकास कर उनमें व्याप्त भ्रम को दूर करती है । पारसंस स्कूल को समाजीकरण को केन्द्रीय मानते हैं जो परिवार एवं समाज के बीच कड़ी का कार्य करती है इसी तरह डेविस एवं मूर शिक्षा को सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया का अंग मानते हैं ।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के उपकरण का कार्य करती है आधुनिक शिक्षा लोगों की कट्टरता, रूढ़िवादिता, जड़ता जैसे दृष्टिकोा को तार्किकता दूरदर्शिता एवं गतिशीलता में परिवर्तित कर देती है । लोगों की सोच एवं दृष्टिकोण में होने वाला यह परिवर्तन समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना में भी परिवर्तन कर देता है । आधुनिक शिक्षा ने नयी परिष्कृत एवं अत्यधिक प्रभावशाली तकनीक के द्वारा मानवजाति को सेवा का एक नया और विशाल अध्याय लिखा है ।

सर्व शिक्षा अभियान

पिछले चार दशकों से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए एवं संविधान के अध्यादेश को पूरा करने के लिए बहुत कठिन श्रम किया गया है । 1986 और 1992 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस तत्व की प्राथमिकता दी गयी । आज इस समय शिक्षा को मूल अधिकार के रूप में स्वीकार कर 6-14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य और नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान लागू कर दिया गया है । इसके लिए विधिवत एक क़ानून बनाया गया है ।

सर्व शिक्षा अभियान (SSA) के अंतर्गत 2010 तक 6-14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा दिये जाने का प्रावधान है । साथ ही इसका दूसरा लक्ष्य है कि स्कूल व्यवस्थापन में समुदाय की सक्रिय सहभागिता लेना और उससे ब्रिज स्कूल खोलना तथा क्षेत्रीय एवं लैंगिक असमानता को कम करना । सर्व शिक्षा अभियान के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निम्न उद्देश्य रखे गये हैं ।

(1) 2003 तक सभी बच्चों को स्कूल में दाख़िल किया जाए ।

(2) 2007 तक सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा मिल जानी चाहिए ।

(3) 2010 तक सभी बच्चों को आठ वर्ष की प्रारंभिक शिक्षा पूरी हो जानी चाहिए ।

शिक्षा का निजीकरण

शिक्षा एक कल्याणकारी राज्य का राष्ट्रीय उद्देश्य है यह सरकार का कर्तव्य है कि वह देश के प्रत्येक नागरिक के लिए शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करे । अब शिक्षा का अधिकार मूल अधिकार बन गया है एवं उदारीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से इसमें भी विदेशी विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति प्रदान की जाने लगी है । इसका तात्पर्य यह होगा कि शिक्षण संस्थाओं का प्रशासन एवं प्रबंधन पूर्णतया व्यक्तिगत उद्यमियों या निजी संस्थाओं के हाथ में

हो इससे शिक्षा के सर्वव्यापीकरण करने एवं गुणवक्ता सुधारने में मदद मिलेगी । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अब सभी बच्चों को जो 06-14 वर्ष तक के हो गये हैं उनको शिक्षा दिलाना राज्य के कर्तव्य के साथ-साथ यह माता-पिता का भी कर्तव्य बना दिया गया है ।

अत: निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में साक्षर और साक्षरता अभियान के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा की भी अत्यावश्यकता है ताकि स्वरोज़गार एवं रोज़गार में मदद मिल सके । देश का सर्वांगीण विकास तब ही संभव है जब शिक्षा रूपी दीप हर घर में जले । शिक्षा का अलख घरों को उजियारा करें । बिहार सरकार ने इस दिशा में रचनात्मक कार्य किया है । मुख्यमंत्री बालक/बालिका सायकिल योजना से भी काफ़ी बच्चें विद्यालय की ओर आने लगे हैं ।

वर्तमान सर्वेक्षण के आधार पर 99 प्रतिशत बच्चे स्कूल आते हैं । मात्र एक प्रतिशत अभी स्कूल से दूर हैं । उसे भी विद्यालय लाने हेतु मुख्यमंत्री बालक/बालिका पोशाक योजना के माध्यम से भी बच्चे की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है । केन्द्र सरकार द्वारा मध्याह्न भोजन योजना भी सराहनीय क़दम है । यह कार्यक्रम भी बच्चों को विद्यालय लाने में सहायक है ।

प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण मैट्रिक के सभी कोटि छात्र-छात्रा को 10000.00 रुपये दिया जाता है । उच्च शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग को सरल बनाता है, वही द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र/छात्रा को 8000.00 रुपये भी दिया जाता है । उच्च शिक्षा हेतु बैंक से ऋण लेने की सुविधा भी निर्धन छात्र/छात्रा के लिए लाभदायक सिद्ध होता है, भारत साक्षर मिशन द्वारा अनपढ़ महिलाओं को पढ़ना-लिखना सिखाया जा रहा है तथा यह कहा जा रहा है कि "पढ़ी लिखी बहिना घर की गहना" किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि बच्चे की प्रथम शिक्षिका मां ही होती है ।"

'हुनर' कार्यक्रम के तहत तालीमी मर्कज़ क़ायम कर महिलाओं को सिलाई, बुनाई, कंताई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है । शिक्षा जीवन से मरण तक प्राप्त करने की अनोखी क्रिया है । शिक्षा से ही अंधकार को समाप्त कर प्रकाश फैलाया जा सकता है । शिक्षित मानव ही भ्रष्टाचार, घूसख़ोरी, दहेज प्रथा, भ्रूण-हत्या जैसे ग़लत रीति-रिवाज के समाप्त कर सकता है । अत: शिक्षा से ही हम अपने परिवार, गांव, राज्य देश को विकास के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं बिना शिक्षा के मानव ऐसा है जैसे बिना सुगंध का पुष्प । अतएव हमें शिक्षित मानव बनकर समाज से कुरीतियों को मिटाना पड़ेगा । तभी हमारे समाज का वातावरण स्वच्छ हो सकता है ।

रोज़े के सामाजिक प्रभाव

(पृष्ठ 34 का शेष)

आज हम पश्चिमी सभ्यता के पेरूकार हैं । आज हम अपने बच्चों को पश्चिमी सभ्यता का पाठ पढ़ा रहे हैं । उसके बदले में हमें क्या मिल रहा है ? बेहयाई, बेशर्मी, लालच, हवस हमारी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गये हैं । सारी तहज़ीबें ख़त्म होती जा रही हैं । मां-बाप व गुरुओं का आदर-सम्मान व रिश्तेदारों की वैल्यू ख़त्म होती जा रही है । हर मनुष्य तरक़्क़ी के पीछे कुछ भी करने को तैयार है । तरक़्क़ी की हवस के पीछे भागता चला जा रहा है ।

पश्चिमी सभ्यता की वर्तमान जीवनशैली से स्वयं लोग तंग हैं । और इस समय सबसे ज़्यादा ख़ुदकुशी, क़त्ल, अस्मतदरी, अपहरण, बस धमाके, हमजिंसी (समलैंगिकता) परस्ती, साम्प्रदायिकता, लूटमार, ख़ुदगर्ज़ी, लोगों की ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुके हैं । कोई भी धर्म इन्सान को इन्सान से प्यार करना जो मनुष्य के लिए ही लाभदायक होता है । अनुशासनात्मक तरीक़े से जीवन-यापन का तरीक़ा सिखाता है ।

रमज़ान शरीफ़ के रोज़े में जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने मनुष्य को जीवन-यापन व जीने का जो तरीक़ा सिखाया है, जिसमें मनुष्य के जीवन से जुड़ी हर चीज़ है ।

अगर इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारना शुरू कर दे तो हर जगह अमन, शांति रहे । न कोई साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, बलात्कार जितनी बुराइयां हैं सब समाप्त हो जाए । इसलिए हमें चाहिए कि हमें इस्लाम को गहराई से पढ़ना होगा और अपने बच्चों को सिखाना होगा तब जाकर हमारी खोई हुई इज़्ज़त वापस आ सकती हैं । एक ज़माना था जब सारे मज़हब के लोग इस्लाम की इज़्ज़त करते थे । रसूल (सल्ल०) की जीवनशैली को पढ़कर, देखकर दूसरे लोग ईमान ले आये हैं । इतिहास जिसका गवाह है । इस्लाम ने दूसरे मज़हब के लोगों के साथ अच्छा सलूक, इज़्ज़त करना सिखाया है ।

मुमताज़ महल

मुमताज़ महल (जन्म : 6 अप्रैल, 1593-मृत्यु : 17 जून 1631) का वास्तविक नाम 'अर्जुमंद बानो बेगम था। मुमताज़, नूरजहां के भाई आसफ़ ख़ां की पुत्री जिसका निकाह मुग़ल सम्राट जहांगीर के पुत्र ख़ुर्रम (शाहजहां) से हुआ।

19 वर्ष की उम्र में मुमताज़ का निकाह शाहजहां से 10 मई, 1912 को हुआ। मुमताज़, शाहजहां की तीसरी पत्नी थी लेकिन शीघ्र ही वह उनकी सबसे पसंदीदा पत्नी बन गयीं।

शाहजहां और मुमताज़ के 14 संतानें हुईं, जिनमें दारा शिकोह, शाह शुजा, औरंगज़ेब और मुराद बख़्श नामक चार पुत्र थे। मुमताज़ का निधन बुरहानपुर में 17 जून 1631 को 14वीं संतान, बेटी गौहारा बेगम को जन्म देते वक़्त हुआ। बाद में उसका शव आगरा लाया गया जहां शाहजहां ने उसकी क़ब्र पर विश्वविख्यात स्मारक ताजमहल बनवाया।

शाहजहां और मुमताज़ की संतानें

- शहज़ादी हुरलनिसा बेगम (जन्म : 30 मार्च 1613-मृत्यु : 14 जून, 1616)
- शहज़ादी (शाही राजकुमारी) जहांआरा बेगम (जन्म : 2 अप्रैल, 1614-मृत्यु : 16 सितम्बर 1681)
- शहज़ादा (शाही राजकुमार) दारा शिकोह (जन्म : 30 मार्च, 1615-मृत्यु : 8 सितम्बर 1659)
- शहज़ादा सुल्तान शाह शुजा बहादुर (जन्म : 3 जुलाई 1616-मृत्यु : 1660)
- शहज़ादी रोशनआरा बेगम (जन्म : 3 सितम्बर 1617-मृत्यु : 1671)
- बादशाह औरंगज़ेब (जन्म : 4 नवम्बर 1618-मृत्यु : 21 फ़रवरी, 1707)
- शहज़ादा सुल्तान उम्मीद बख़्श (जन्म : 18 दिसम्बर 1619-मृत्यु : मार्च 1622)
- शहज़ादी सुरैया बानो बेगम (जन्म : 10 जून, 1621-मृत्यु : 28 अप्रैल 1628)



- शहज़ादा सुल्तान मुराद बख़्श (जन्म : 8 सितम्बर 1624-मृत्यु : 14 दिसम्बर 1661)
- शहज़ादा सुल्तान लुत्फ़ुल्लाह (जन्म : 4 नवम्बर 1626-मृत्यु : 14 मई 1628)
- शहज़ादा सुल्तान दौलत अफ़ज़ा (जन्म : 9 मई 1628-मृत्यु : ?)
- शहज़ादी हुस्न आरा बेगम (जन्म : 23 अप्रैल 1630-मृत्यु : ?)
- शहज़ादी गौहरआरा बेगम (जन्म : 17 जून 1631-मृत्यु : 1706)

शाहजहां को अपनी पत्नी मुमताज़ पर ज़्यादा और दूसरी पत्नियों पर कम प्रेम था। शाहजहां ने दूसरी पत्नियों को कम और मुमताज़ को ज़्यादा अधिकार दे रखे थे। शाहजहां, मुमताज़ से बेइन्तिहा मुहब्बत करने लगे थे और वे मुमताज़ को ही अपनी बेगम के रूप में देखना पसन्द करते थे।

मुमताज़ महल ने अपनी मुहब्बत के चलते शाहजहां से निकाह किया था। मुमताज़ की सुन्दरता को कई कवियों, लेखकों ने अपनी कविताओं और लेख में निखारा है।

शाहजहां अपने पूरे मुग़ल साम्राज्य की यात्रा मुमताज़ के साथ ही किया करते थे । शाहजहां को मुमताज़ पर इतना भरोसा हो गया था कि उन्होंने मुमताज़ को शाही मुहर लगाने के अधिकार भी दे रखे थे । मुमताज़ ने बाद में बताया भी था कि उन्हें कभी किसी प्रकार के राजनैतिक ताक़त की कोई चाह थी ही नहीं । लेकिन फिर भी मुमताज़ पर महारानी नूरजहां का काफ़ी प्रभाव पड़ा, मुमताज़ को हमेशा से ही मैदान में होने वाले हाथियों की लड़ाई बहुत पसन्द थी । मुमताज़ को अपने साम्राज्य की साधारण महिलाओं से मिलना, उनके साथ खेलना और बाते करना भी काफ़ी पसन्द था इसीलिए कई बार आगरा के गार्डन में भी टहलने जाया करती थीं ।

10 से भी ज़्यादा बार गर्भवती होने के बावजूद मुमताज़ शाहजहां के साथ यात्रा पर जाती थीं । यात्रा पर जाते समय वह पूरे मुग़ल साम्राज्य का भ्रमण करना पसन्द करती थीं, जिनमें उन्हें शाहजहां की सैन्य शक्ति को देखना काफ़ी पसन्द था । उन्हें कुल 14 बच्चे हुए थे, जिनमें से 7 जन्मपूर्व ही मर गये या किशोरावस्था में ही मारे गये ।

मुमताज़ महल की मृत्यु 1631 में अपने चौदहवें बच्चे को जन्म देते समय हुई थी । मुमताज़ के शव को उस समय शाहजहां के चाचा दानियाल द्वारा तापी नदी के तट पर जैनाबाद गार्डन में दफ़नाया गया था । शाहजहां को इस बात से काफ़ी दुख हुआ था । परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु के बाद शाहजहां एक वर्ष के लिए शोक मनाते हुए एकांत मे रहने के लिए चले गये ।

उनके शव को दिसम्बर 1631 में निकाला गया और सोने से बनी शवपेटी में आगरा के पीछे दफ़नाया गया । आगरा के ही पीछे यमुना नदी के तट पर एक छोटे घर में उनके शव को रखा गया था । और शाहजहां बुरहानपुर के पीछे ही अपने सैन्य दल के साथ रहने लगे थे । और वहीं रहते हुए उन्होंने मुमताज़ की याद में एक विशाल महल बनाने की योजना बनायी । और उनके सपने को साकार होने में पूरे 22 साल लगे, मुमताज़ की याद में बने उस महल को "ताजमहल" के नाम से जाना जाता है ।

तक से लेकर आज तक ताजमहल की मुहब्बत की निशानी माना जाता है । और दुनिया भर के लोग मुमताज़ की याद में शाहजहां द्वारा बनाए ताजमहल को देखने आते हैं ।

आगरा का ताजमहल भारत की शान और प्रेम का प्रतीक चिह्न माना जाता है । उत्तर प्रदेश का तीसरा बड़ा ज़िला आगरा ऐतिहासिक दृष्टि से काफ़ी महत्वपूर्ण है ।

मुग़लों का सबसे पसंदीदा शहर होने के कारण ही उन्होंने दिल्ली से पहले आगरा को अपनी राजधानी बनाया । इतिहास के अनुसार इब्राहीम लोदी ने इस शहर को सन 1504 में बसाया था । जिस समय इस शहर की स्थापना की गयी, उस समय किसी ने यह कल्पना नहीं की होगी कि यह शहर पूरे विश्व में अपनी ख़ूबसूरती के लिए परचम लहराएगा । जिसे आज भी दुनिया के सात अजूबों में शुमार किया जाता है ।

स्थापत्य कला की जीती-जागती तस्वीर आगरा शहर दिल्ली से क़रीब 200 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । जिसे बनाने के लिए बग़दाद से एक कारीगर बुलवाया गया जो पत्थर पर घुमावदार अक्षरों को तराश सकता था । इसी तरह बुख़ारा शहर, जो मध्य एशिया में स्थित है, वहां से जिस कारीगर को बुलवाया गया वह संगमरमर के पत्थर पर फूलों को तराशने में दक्ष था । विराट क़द के गुंबदों का निर्माण करने के लिए तुर्की के इस्तम्बुल में रहने वाले दक्ष कारीगरों को बुलाया गया तथा मिनारों का निर्माण करने के लिए समरकंद से दक्ष कारीगरों को बुलवाया गया ।

इस प्रकार ताजमहल के निर्माण से पूर्व छह महीनों में कुशल कारीगरों को तलाश कर उनमें से 37 दक्ष कारीगर इकट्ठे किये गये, जिनकी देखरेख में बीस हज़ार मज़दूरों के साथ कार्य किया गया । इसी प्रकार ताज निर्माण में लगायी गयी सामग्री संगमरमर पत्थर राजस्थान के मकराणा से, अन्य कई प्रकार के क़ीमती पत्थर एवं रत्न बग़दाद, अफ़ग़ानिस्तान, तिब्बत, इजिप्त, रूस, ईरान आदि कई देशों से इकट्ठा कर उन्हें भारी क़ीमतों पर ख़रीद कर ताजमहल का निर्माण करवाया गया ।

1630 ई॰ में शुरू हुआ इसका निर्माण कार्य क़रीब 22 वर्षों में पूर्ण हुआ, जिसमें लगभग बीस हज़ार मज़दूरों का योगदान माना जाता है । इसका मुख्य गुंबद 60 फ़ीट ऊंचा और 80 फ़ीट चौड़ा है ।

मुग़ल बादशाह की मुहब्बत और शिद्दत का परिणाम ही है 'ताजमहल' जिसे ख़ूबसूरती का नायाब हीरा कहा जाता है । गुंबदनुमा इस इमारत को जब आप सिर उठाकर ऊपर देखते हैं तो इसकी नक्काशीदार छतें और दीवारें किसी आश्चर्य से कम नहीं लगतीं । इसका यह इतिहास तो

बच्चे-बड़े सभी की ज़ुबान पर है कि मुग़ल बादशाह शाहजहां ने अपनी दूसरी पत्नी मुमताज़ महल की याद में ताजमहल का निर्माण करवाया था ।

यमुना नदी के किनारे सफ़ेद पत्थरों से निर्मित सुंदरता की तस्वीर 'ताजमहल' न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुका है । प्यार की इस निशानी को देखने के लिए दूर देशों से हज़ारों सैलानी यहां आते हैं । दूधिया चांदनी में नहा रहे ताजमहल की ख़ूबसूरती को निहारने के बाद आप कितनी भी उपमाएं दें, वह सारी फ़ीकी लगती हैं ।

आगरा में ताजमहल के अलावा भी कई चीज़ें देखने लायक़ हैं–

जैसे : 1. आगरा फोर्ट (रेड फोर्ट) । आगरा फोर्ट यहां के महत्वपूर्ण इमारतों में से एक है । इसका निर्माण 1565 ई॰ में मुग़ल सम्राट अकबर ने करवाया था । स्थापत्य कला का यह बेजोड़ नमूना लाल पत्थरों से निर्मित है । इसमें जहांगीर महल (दीवाने-ए-ख़ास) भी बना है, जो ख़ूबसूरत शीशमहल के रूप में प्रचलित है । 2. फ़तेहपुर सीकरी । आगरा से लगभग 35 किलोमीटर दूर स्थित इस स्थान को अकबर ने अपनी राजधानी बनाया था, जो स्थापत्य की बेजोड़ कलाओं से परिपूर्ण है । 3. मेहताब बाग़ । यमुना नदी की विपरीत दिशा में ताजमहल के पास ही बना हुआ है मेहताब बाग़ । कई तरह के फूलों और अनेक पेड़-पौधों से सुसज्जित होने के कारण विदेशी सैलानियों को काफ़ी लुभाता है । 4. रामबाग़ । रामबाग़ को बाबर ने 1528 ई॰ बनवाया था । यह ताजमहल के उत्तरी भाग में ढाई किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसे मुग़लों द्वारा निर्मित सबसे पुराने बाग़ों में से एक माना जाता है । 5. जामा मस्जिद ।

शाहजहां की बेटी जहांआरा बेगम की याद में सन 1648 ई॰ में बनायी गयी थी यह जामा मस्जिद । बड़ी ही ख़ूबसूरत से इसके गुंबद भी तराशे गये हैं । इतने वर्षों बाद भी इसकी ख़ूबसूरती जस-की-तस बनी हुई है ।

मुमताज़ महल और शाहजहां की क़ब्र ताजमहल के निचले हिस्से में आमने-सामने बनी हुई है । आज भी आगरा शहर देशी-विदेशी सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है । ख़ूबसूरत स्थापत्य कला में निर्मित होने की वजह यहां गर्मी हो या ठंड, हर मौसम में पर्यटकों की भीड़ देखी जा सकती है । पर्यटन विभाग की ओर से प्रतिवर्ष 'ताज महोत्सव' का आयोजन किया जाता है । (संकलित)

जब कभी उनसे कहा गया कि
ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो, तो उन्होंने
यही कहा कि "हम तो सुधार करने वाले
हैं–सावधान वास्तव में यही लोग बिगाड़
करते हैं मगर इन्हें समझ नहीं है ।
(क़ुरआन)

A Well Wisher

Iqbal A. Masalawala, Nagpada, Mumbai

Regd. No. 200041100133
Prop. Md. Aslam

06546-321302
9931579552

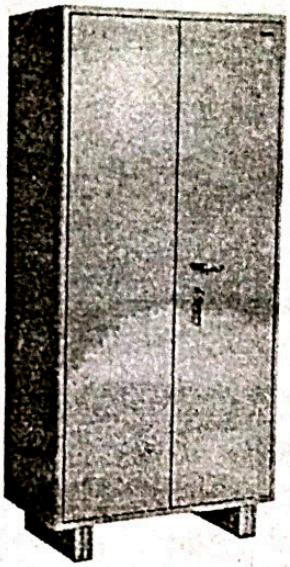

M/s SONU ENTERPRISES

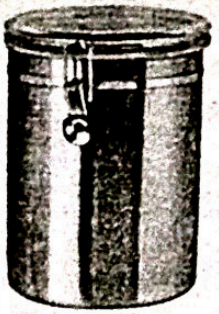

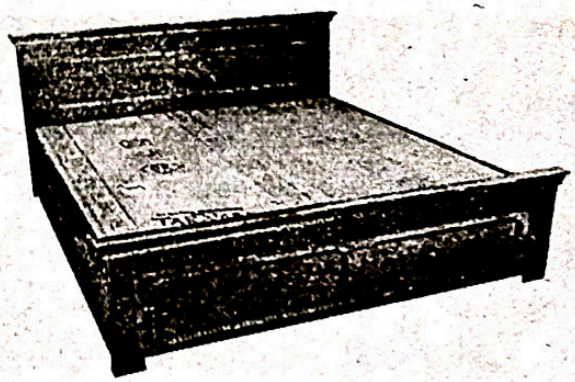

Manufacturer & Supplier :

STEEL ALMIRAH
Steel Box & Steel/Wooden Furniture

Ansar Nagar, Pugmil, Hazaribagh (Jharkhand)

ओलम्पिक खेलों का इतिहास

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

हर चार साल बाद आयोजित होने वाले ओलम्पिक खेल को दुनिया का सबसे बड़ा खेल मेला माना जाता है । इसमें दुनिया भर के खिलाड़ी विभिन्न खेलों में शरीक होते हैं । हमारा देश भारत भी इसमें शरीक होता है मगर दूसरे कई देशों के मुक़ाबले भारत का प्रदर्शन कोई बहुत बेहतर नहीं होता । इस बार इन खेलों का आयोजन अगस्त में होना है । चूंकि यह खेलों का सबसे बड़ा आयोजन है इसलिए इस अवसर पर ज़रूरी है कि इसका संक्षिप्त इतिहास जान लिया जाए ।

प्राचीन ओलम्पिक खेलों का आयोजन 1200 साल पूर्व योद्धा-खिलाड़ियों के बीच हुआ था । पुराने समय में शांतिपूर्ण समय अंतराल के दौरान योद्धाओं के बीच प्रतिस्पर्धा के साथ खेलों का विकास हुआ । शुरुआती दौर में दौड़, मुक्केबाज़ी, कुश्ती और रथों की दौड़ सैनिक प्रशिक्षण का हिस्सा हुआ करते थे । इनमें से सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाले योद्धा प्रतिस्पर्धी खेलों में अपना दमखम दिखाते थे ।

1896 में पहले ओलम्पिक का आयोजन यूनान की राजधानी एथेंस में 6 अप्रैल से 15 अप्रैल 1896 के बीच हुआ । 14 भाग लेने वाले देशों में से दस ने पदक जीतें, इसके अलावा तीन पदक मिश्रित टीमों द्वारा जीते गये, अर्थात वो टीमें जो कई देशों के एथलीटों को मिला के बनी थीं । संयुक्त राज्य अमेरिका ने सबसे अधिक स्वर्ण पदक (11) जीते, जबकि मेजबान देश ग्रीस ने समग्र तौर पर सबसे अधिक पदक (46) के साथ-साथ सबसे अधिक रजत (17) और कांस्य पदक (19) भी जीते । संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में एक स्वर्ण पदक कम अर्जित करने के कारण ग्रीस पदक तालिका में दूसरे स्थान पर रहा । तीसरे स्थान पर रहा जर्मनी जिसने छह स्वर्ण पदकों सहित कुल 13 पदक जीते ।

1900 में दूसरे ओलंपिक का आयोजन फ्रांस के शहर पेरिस में हुआ । प्रतियोगिताओं की शुरुआत 14 मई को और समापन 28 अक्तूबर को हुआ । एक हज़ार से अधिक प्रतियोगियों ने 19 विभिन्न खेलों में भाग लिया । इन खेलों में महिलाओं ने भी हिस्सा लिया और शार्लट कॉपर पहली महिला ओलम्पिक चैंपियन बनी । बहुत से विजेताओं को मेडल नहीं मिला उन्हें केवल कप्स और ट्रॉफ़ीज से ही संतोष करना पड़ा ।

1904 में तीसरे ओलम्पिक का आयोजन अमेरिका में हुआ । पहली बार ऐसा हुआ जब ओलम्पिक का आयोजन यूरोप से बाहर हुआ । इसमें 12 देशों के 651 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया । अमेरिका ने सबसे अधिक 239 पदक जीते जिनमें 78 स्वर्ण, 82 सिल्वर, और 79 कांस्य पदक थे । जर्मनी दूसरे नंबर पर रहा ।

1906 के ओलम्पिक खेलों का आयोजन ग्रीस में हुआ । यह आयोजन चूंकि दो साल बाद ही हो गया इसलिए खिलाड़ियों को मैडल दिये जाने के बाद भी इसे मान्यता नहीं मिली । इन खेलों में 20 टीमों ने हिस्सा लिया ।

1908 में आधिकारिक तौर पर चौथे ओलम्पिक खेलों का आयोजन लंदन में हुआ । इसे रोम में होना था, मगर लंदन में हुआ । इसमें 22 देशों के 2008 खिलाड़ियों ने भाग लिया जिनमें 1971 पुरुष और 37 महिलाएं थी । मेज़बान इंग्लैण्ड पहले नंबर पर रहा जिसने 146 पदक जीते जिनमें 56 स्वर्ण, 51 रजत और 39 कांस्य पदक थे । अमेरिका दूसरे नंबर पर रहा ।

1912 में ओलम्पिक खेलों का आयोजन स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में हुआ । इसमें 28 देशों के 2606 खिलाड़ी शरीक हुए । इनमें 14 खेलों के 102 मुक़ाबले हुए । वैसे तो स्वीडन ने पहले नंबर पर रहने वाले अमेरिका से अधिक मेडल जीता लेकिन चूंकि अमेरिका ने अधिक स्वर्ण पदक जीते इसलिए उसे पहला स्थान मिला । अमेरिका को 25 जबकि स्वीडन को 24 स्वर्ण पदक मिले ।

1916 के ओलम्पिक खेलों का आयोजन बर्लिन में होना था मगर प्रथम विश्व युद्ध की वज़ह से इसका आयोजन रद्द हो गया ।

1920 में इन खेलों का आयोजन बेल्जियम में हुआ ।

इसमें 29 देशों के 2626 खिलाड़ियों ने भाग लिया । इन खिलाड़ियों में 65 महिलाएं भी थीं । इन खेलों में अमेरिका ने 41 स्वर्ण, 27 रजत और 27 कांस्य पदक के साथ पहली पोज़ीशन हासिल की थी । स्वीडन को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ था ।

1924 के ओलम्पिक खेलों का आयोजन फ्रांस की राजधानी पेरिस में हुआ । इनमें 44 देशों के 3089 खिलाड़ियों ने शिरकत की जिनमें महिला खिलाड़ियों की संख्या 135 थी । यहां भी 99 पदक के साथ अमेरिका पहले नंबर पर रहा । फिनलैंड को दूसरी जबकि फ्रांस को तीसरी पोज़ीशन हासिल हुई ।

1928 के ओलम्पिक गेम नीदरलैंड के शहर एम्स्टर्डम में हुए जहां 46 देशों के 2883 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया । इन खेलों में 277 महिलाएं भी थीं । अमेरिका ने सबसे अधिक पदक जीता जबकि जर्मनी दूसरे और फिनलैंड तीसरे नंबर पर रहा ।

1932 में ओलम्पिक खेल अमेरिका में आयोजित हुए । इस बार 37 देशों के 1332 खिलाड़ी इसमें शामिल हुए । इन खिलाड़ियों में 126 महिलाएं थीं । अमेरिका ने 41 स्वर्ण पदक के साथ कुल 103 पदक जीते और पहले नम्बर पर रहा । इटली को दूसरी और फ्रांस को तीसरी पोज़ीशन हासिल हुई ।

1936 का ओलम्पिक जर्मनी के शहर बर्लिन में हुआ जिसमें 49 देशों के 3963 खिलाड़ियों ने भाग लिया । इसमें 19 खेलों के 119 मुक़ाबले हुए । 89 पदक के साथ मेज़बान जर्मनी ने पहली पोज़ीशन हासिल की, जबकि अमेरिका को दूसरी और हंगरी को तीसरी पोज़ीशन हासिल हुई ।

1940 में ओलम्पिक खेलों का आयोजन जापान की राजधानी टोक्यो में होना था, लेकिन दूसरे विश्व युद्ध की वजह से इसका आयोजन संभव नहीं हो सका । 1944 के ओलम्पिक खेलों की मेज़बानी इंग्लैण्ड के शहर लंदन को मिली थी, मगर दूसरे विश्व युद्ध की वजह से इसका आयोजन भी नहीं हुआ ।

1948 में यह खेल लंदन में आयोजित हुए जिनमें 59 देशों के 4104 खिलाड़ियों ने शिरकत की जिनमें 390 महिला खिलाड़ी थीं । 84 पदकों के साथ अमेरिका को पहली पोज़ीशन हासिल हुई जबकि स्वीडन और फ्रांस तीसरे नंबर पर रहे । 1952 के ओलम्पिक खेल फ़िनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में हुए । 69 देशों के 4955 खिलाड़ी इसमें शामिल हुए जिनमें महिलाओं की संख्या 519 थी । अमेरिका ने 40 स्वर्ण, 19 रजत और 17 कांस्य पदक के साथ पहली पोज़ीशन प्राप्त की जबकि सोवियत संघ और हंगरी क्रमशः दूसरे और तीसरे नंबर पर रहे ।

1956 में खेलों का यह मेला ऑस्ट्रेलिया के नगर मेलबोर्न में आयोजित हुआ । इस बार इसमें 72 देशों के 3314 खिलाड़ी शामिल हुए । 98 पदक के साथ सोवियत संघ पहले नंबर पर रहा, जबकि अमेरिका को दूसरी और ऑस्ट्रेलिया को तीसरी पोज़ीशन हासिल हुई ।

1960 में ओलम्पिक का आयोजन इटली की राजधानी रोम में हुआ जिसमें 83 देशों के 5338 खिलाड़ियों ने भाग लिया । 103 पदकों के साथ सोवियत संघ पहले नंबर पर रहा, जबकि अमेरिका को दूसरी और मेज़बान इटली को तीसरी पोज़िशन हासिल हुई ।

1964 के ओलम्पिक का आयोजन जापान की राजधानी टोक्यो में हुआ । यहां 93 देशों के 5151 खिलाड़ियों ने भागीदारी की । कुल मिलाकर सोवियत संघ ने अधिक पदक जीते, मगर चूंकि अमेरिका ने सोवियत संघ से अधिक स्वर्ण पदक जीते इसलिए पहली पोज़ीशन अमेरिका को मिली ।

1968 में इन खेलों का आयोजन मेक्सिको सिटी में हुआ । इनमें 112 देशों के 5,516 खिलाड़ियों ने शिरकत की । अमेरिका 45 स्वर्ण, 28 रजत और 34 कांस्य पदक के साथ पहले नंबर पर रहा । सोवियत संघ दूसरे और जापान तीसरे नंबर पर रहा । 1972 के ओलम्पिक गेम जर्मनी के शहर म्यूनिख में हुए । इस बार इन खेलों में 121 देशों के 7134 खिलाड़ियों ने शिरकत की । सोवियत संघ, अमेरिका और ईस्ट जर्मनी ने क्रमशः पहली, दूसरी और तीसरी पोज़ीशन हासिल की ।

1976 के ओलम्पिक कनाडा में आयोजित हुए जहां 92 देशों के 6,084 खिलाड़ियों ने शिरकत की जिनमें महिलाओं की संख्या 1260 थी । कनाडा में सोवियत संघ को सबसे अधिक मेडल मिले, जबकि ईस्ट जर्मनी दूसरे और अमेरिका तीसरे नंबर पर रहा ।

1980 के ओलम्पिक गेम मास्को में आयोजित हुए जहां 80 देशों के 5,179 खिलाड़ी शामिल हुए । 195 पदकों के

साथ सोवियत संघ पहले नंबर पर रहा, जबकि ईस्ट जर्मनी और बुल्गारिया को क्रमशः दूसरी और तीसरी पोज़ीशन हासिल हुई ।

1984 में ओलम्पिक खेल अमेरिका में आयोजित हुए । यहां 140 देशों के 6,829 खिलाड़ियों ने विभिन्न मुक़ाबलों में भाग लिया । मेज़बान होने की वजह से अमेरिका ने कमाल का प्रदर्शन किया और 174 पदकों के साथ पहली पोज़ीशन हासिल की । रोमानिया को दूसरी जबकि वेस्ट जर्मनी को तीसरी पोज़ीशन प्राप्त हुई ।

1988 के ओलम्पिक गेम दक्षिण कोरिया के सियोल में आयोजित हुए । यहां 159 देशों के 8,391 खिलाड़ियों ने विभिन प्रतियोगिताओं में भाग लिया । 132 पदकों के साथ सोवियत संघ पहले नंबर पर रहा, जबकि ईस्ट जर्मनी और अमेरिका तो दूसरी और तीसरी पोज़ीशन मिली ।

1992 में 25वें ओलम्पिक का आयोजन स्पेन के बार्सेलोना में हुआ जिसमें 161 देशों के 9,356 खिलाड़ियों ने शिरकत की । इस बार सोवियत संघ से लगे हुए देशों ने मिलकर शिरकत की और उन्हीं देशों ने सबसे अधिक 112 पदक जीते । अमेरिका दूसरे नंबर पर रहा, जबकि जर्मनी को तीसरी पोज़ीशन मिली ।

1996 के ओलम्पिक गेम अटलांटा में आयोजित हुए जिनमें 197 देशों के 10,320 खिलाड़ियों ने शिरकत की । 101 पदक के साथ मेज़बान अमेरिका पहले नंबर पर रहा जबकि रूस और जर्मनी को क्रमशः दूसरी और तीसरी पोज़िशन मिली ।

2000 में ओलम्पिक का आयोजन ऑस्ट्रेलिया के शहर सिडनी में हुआ । इसमें 199 देशों के 10,651 खिलाड़ियों ने शिरकत की जिनमें महिला खिलाड़ियों की संख्या 4,069 थी । 93 पदकों के साथ अमेरिका को पहली पोज़ीशन मिली, जबकि रूस और चीन क्रमशः दूसरे और तीसरे नंबर पर रहे ।

2004 के ओलम्पिक गेम यूनान के एथेंस में हुए जिनमें 201 देशों के 10,625 खिलाड़ी शरीक हुए । अमेरिका ने 36 स्वर्ण, 39 रजत और 26 कांस्य पदक के साथ पहली पोज़ीशन हासिल की, जबकि चीन और रूस दूसरे नंबर पर रहे ।

2008 के ओलम्पिक खेलों का आयोजन चीन की राजधानी बीजिंग में हुआ । यहां 204 देशों के 10,942 खिलाड़ी शामिल हुए । हालांकि अमेरिका को सबसे अधिक 110 मेडल मिले लेकिन चूंकि चीन ने अमेरिका से अधिक स्वर्ण पदक जीते इसलिए पहले नंबर पर वही रहा । दूसरा स्थान अमेरिका को जबकि तीसरा स्थान रूस को मिला ।

2012 में अब तक के अंतिम ओलम्पिक खेल इंग्लैण्ड की राजधानी लंदन में हुए जिनमें 204 देशों के 10,768 खिलाड़ियों ने शिरकत की । अमेरिका पदक तालिका में पहले नम्बर पर रहा । चीन दूसरे नम्बर पर रहा, जबकि इंग्लैण्ड को तीसरी पोज़ीशन हासिल हुई ।

2016 के ओलम्पिक खेल ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरो में होने हैं जिसमें लगभग 206 देश भाग लेंगे और खिलाड़ियों की संख्या 10500 से अधिक होगी । देखना यह होगा कि इस बार कौन-सा देश सबसे अधिक पदक जीतता है ।

बाल श्रम

संबंधित सरकारी विभाग
समय-समय पर जागते हैं
बाल श्रम के विरुद्ध अचानक
जैसा-तैसा अभियान चलाते हैं
ढाबों हलवाई की दुकानों घरों
दुकानों पंचर लगाने वालों आदि
के यहां से बाल मज़दूरों को
धूमधाम के साथ मुक्त कराते हैं !
वे मुक्त हुए बालक उसके बाद
कहां जाते क्या करते हैं
इसका पता लगाने का कष्ट
विभाग शायद नहीं लगाते हैं !
बाल श्रम नहीं होना चाहिए
इसमें दो राय नहीं है
पर उन परिवारों का क्या हो
जहां रोटी कमाने वाला नहीं रहा
विधवा मां और छोटी बहनों का
पेट पालने के लिए घर में उस
नाबालिग़ बच्चे के सिवा कोई नहीं ?

ओमप्रकाश बजाज
इन्दौर, म०प्र०

शीतल पेय लें मगर संभलकर

■ विद्या प्रकाश

इस समय उमस के चलते घर में सकून से रह तथा तपन की वजह से बाहर निकल सकना दुश्वार हो गया है। ग्रीष्म ऋतु में उमस तथा तपन का समावेश होने के साथ ही नगर के विभिन्न मुहल्लों, बाज़ारों तथा ग्रामीण क़स्बों में भांति-भांति के शीतल पेय पदार्थों की बहार छा गयी है। इनमें से अधिकतर शीतल पेय ऐसें हैं जिनके सेवन से व्यक्ति तत्काल शीतलता तथा तृप्ति की अनुभूति तो करता है मगर वे आगे चलकर मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तथा रोगकारक साबित होते हैं।

आजकल बाज़ारों में विशेषकर विद्यालयों के आसपास ठेलों पर आइसगोला तथा रंगीन शरबत की बिक्री ख़ूब की जाती है जिनमें बर्फ़ के महीन चूर्ण के साथ सैक्रीन तथा आर्टिफिशियल कलर का मिश्रण रहता है। इसके अलावा आजकल कोल्ड ड्रिंक के नाम पर कोका कोला, आरेंज, लीची तथा मैंगो के फ्लेवर में विभिन्न रंगों में 5 रुपये प्रति प्लास्टिक ग्लास में शीतल पेय बिक रहा है। इनमें मिश्रित कृत्रिम रंग तथा केमिकल इन्सानी सेहत के लिए ख़तरनाक और नुक़सानदेह होता है।

इसी प्रकार आजकल तपती दुपहरिया में बाज़ारों में चौराहों पर, क़ॉलेज गेट के इर्द-गिर्द गन्ने के रस, बेल के शरबत, लेमोनेड, ठंडई तथा आम के खट्टे पने की शक्ल में शीतल पेय की बिक्री काफ़ी बढ़ गयी है। गन्ने का रस, कच्चे आम के पने तथा बेल का शरबत स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होते हैं मगर विक्रेता आर्थिक लाभ के लिए इनकी जिस तरीक़े से बेहिचक बिक्री करते हैं, वह स्वास्थ्य घातक होता है तथा उनका सेवन किसी भी दृष्टि से ख़तरे से ख़ाली नहीं कहा जा सकता।

विक्रेता ग्राहक की नज़र बचाकर लाल चकत्तीदार रुग्ण गन्ने के पौधे को मशीन में पेर कर रस निकालते हैं जो हानिकारक होता है। सफ़ाई का भी ध्यान नहीं रखा जाता। ठेले के एक तरफ़ पेरकर रखी गयी गन्ने की खोइया पर भिनभिनाती मक्खियां प्लास्टिक के छोटे-बड़े गिलास पर



गन्दगी फैलाती है तथा ग्राहक को उसी में रस डालकर सर्व किया जाता है। ठेले पर बेल का शरबत तथा आम का पना बेचने वालों द्वारा सफ़ाई नहीं की जाती है। जूठे गिलास को मामूली तौर पर पानी से साफ़ कर उसी में दूसरे ग्राहक को सर्व किया जाता है जिसका स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़े बग़ैर नहीं रहता तथा संक्रामक रोग फैलने की आशंका रहती है।

हम बाज़ार में बिकने वाले शीतल पेय पदार्थों का सेवन करें मगर संभलकर।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

रोज़गार साइबर विंडो

कहते हैं, एक से भले दो और जब मसला नौकरी ढूंढ़ने का हो तो यह जुमला 'दो से भला ग्रुप' में बदल जाता है । एक जैसी नौकरी तलाश रहे लोग अगर एक ग्रुप में शामिल हो जाएं और इस ग्रुप में कुछ नौकरी देने वाले लोग भी आ जाएं, तो राह काफ़ी आसान हो जाती है । सोशल मीडिया के 'जॉब सर्च ग्रुप' के ताज़ा तरीन चलन को आज हम आपको बता रहे हैं ।

उस रोज़ मैं नौकरी बांटने का दावा करने वाली तमाम वेबसाइट्स पर मगजमारी करने के बाद फेसबुक पर दूसरों के पोस्ट लाइक करके टाइम पास कर रहा था । अचानक मेरी नज़र एक दोस्त की वॉल पर दिख रहे 'फ्रेशर जॉब सीकर ग्रुप' पर ठिठकी । ग्रुप का होमपेज खोला तो अपने जैसे कई नौकरी ढूंढ़ रहे लोग नज़र आये । कुछ सोचकर मैंने भी वह ग्रुप ज्वाइन कर लिया । ग्रुप में हम सबका एक ही दर्द था, सो हम बातें भी एक-सी करते ।

इंटरव्यू में नियोक्ताओं के अच्छे-बुरे लगने वाले सवालों से लेकर सैलरी के मोलभाव करने जैसी हर वो बात जो हम सबके दिमाग़ में घूमती रहती थी । नौकरी तो नहीं, लेकिन काफ़ी भावनात्मक बल मिला उस ग्रुप से जुड़ने के बाद । आज मैं एक अच्छी कंपनी में नौकरी कर रहा हूं, पर अभी भी उस ग्रुप का एक्टिव मेंबर हूं ।' यह अनुभव अस्ल में नौकरी तलाश रहे युवाओं के लिए एक उम्मीद की किरण जैसा है । फिर चाहे वे फ्रेशर हों, ब्रेक के बाद वापसी कर रहे प्रोफेशनल्स हों या फिर पार्ट टाइम नौकरी तलाश रहे युवा ही क्यों न हों ।

परखना है ज़रूरी

कोई जॉब सर्च ग्रुप आपके लिए उपयोगी है या नहीं, इस बात को परखना आपके लिए बेहद ज़रूरी है । सबसे पहले जिस तरह की जॉब आप तलाश रहे हैं, उसके कीवर्ड्स टाइप करके उसे सोशल साइट्स में सर्च करें । अमूमन होमपेज पर किये गये पोस्ट्स को देखकर यह अंदाज़ा लग जाता है कि इस ग्रुप से वाक़ई में संजीदा लोग जुड़े हैं या नहीं । अगर किसी ग्रुप पर आपके सेक्टर से जुड़ी स्तरीय कंपनियों की रिक्तियों के पोस्ट हैं और बड़ी संख्या में उनके जवाब भी हैं, तो यह आपके काम का ग्रुप को सकता है । इसके अलावा कुछ ग्रुप्स में वेकेंसी के लिंक भी दिये होते हैं, जो किसी स्थापित कंपनियों की वेबसाइट्स के होते हैं । उनकी विश्वसनीयता भी होती है । वहीं जिन ग्रुप्स में बेहद कम पोस्ट हों, विषय से इतर चर्चाएं हो रही हों, उनसे दूर ही रहना बेहतर है ।

क़िस्म-क़िस्म के ग्रुप इन दिनों आई॰टी॰, टेलीकम्युनिकेशन, इंटरटेनमेंट, आर्ट बैंकिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग अपने ग्रुप बना लेते हैं और इनमें आने वाली रिक्तियों के बारे में जानकारियां पोस्ट करते रहते हैं । कई बार ये ग्रुप वरिष्ठता के स्तर के आधार पर भी बनाए जाते हैं । उदाहरण के तौर पर अगर आई॰टी॰ क्षेत्र के फ्रेशर्स का कोई ग्रुप बनाया जाता है तो वह मध्यम और उच्च स्तर की रिक्तियां तलाशने वाले लोगों के लिए उपयोगी नहीं होगा । इसके अलावा कई बार लोग अपने मुख्य काम के अलावा अतिरिक्त बाय के लिए पार्ट टाइम जॉब भी तलाशते हैं । ऐसे में वे अपनी रुचि के पार्ट टाइम जॉब से संबंधित ग्रुप ज्वाइन कर सकतै हैं । इतना ही नहीं, सोशल साइट्स पर लोकेशन के आधार पर भी बहुत सारे ग्रुप बने हुए हैं । अगर आप किसी ख़ास शहर में ही नौकरी की तलाश कर रहे हैं, तो उस शहर की रिक्तियों से संबंधित ग्रुप ज्वाइन कर सकते हैं । बहुत सारे जॉब सीकर ग्रुप्स में एम्प्लॉयर यानी नौकरी देने वाले भी जुड़े होते हैं, जो नौकरी तलाशने में मददगार होते हैं ।

बनाएं अपना ख़ुद का जॉब सर्च ग्रुप

दूसरे जॉब सर्च ग्रुप्स से जुड़ने के साथ ही अपना ख़ुदका जॉब सर्च ग्रुप भी बना सकते हैं । ग्रुप का नाम ऐसा रखें, जिसे पढ़कर ही उनके फीचर्स के बारे में अंदाज़ा लग जाए, जैसे 'वेबसाइट डेवलपर जॉब्स इन दिल्ली एन॰सी॰ आर॰ ।' इस तरह के किसी सटीक नाम से ग्रुप का पेज बनाने के बाद अगला क़दम होगा अपनी जैसी जॉब तलाश रहे दूसरे लोगों को इस ग्रुप से जोड़ना । सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट फेसबुक में आप अपनी पसन्द और सुविधा के

अनुसार अपने ग्रुप को ओपन या क्लोज्ड रख सकते हैं। ओपन यानी कोई मेंबर जन सकता है, जबकि क्लोज्ड में एडमिल इजाज़त की ज़रूरत होती है। चुनिंदा लोगों के जॉब सर्च के लिए क्लोज्ड ग्रुप बेहतर रहता है, वहीं अगर आप अपना नेटवर्क का बढ़ाना चाहते हैं तो आप इसे ओपन रख सकते हैं। कुछ समय बाद आप चाहें तो ग्रुप के सभी सदस्यों की एक मीटिंग भी आयोजित कर सकते हैं। अगर आपके इलाक़े में 'रेज्यूमे ट्रेनिंग वर्कशॉप जैसी कोई गतिविधि हो रही है तो आप इसके बारे में अपने ग्रुप के दूसरे सदस्यों को बता सकते हैं। ग्रुप के सदस्य किसी विषय पर एक साथ ऑन लाइन आकर चर्चा भी कर सकते हैं।

जानें लिंक्डइन ग्रुप्स को

आज अधिकतर प्रोफेशनल्स का लिंक्डइन एकाउंट है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर लोग इसके ग्रुप्स नामक फीचर के बारे में नहीं जानते हैं। इन ग्रुप्स से कोई भी व्यक्ति बिना कोई शुल्क अदा किये जुड़ सकता है। ये ग्रुप आपको ऐसे लोगों से जुड़ने का प्लेटफार्म देते हैं, जो भविष्य में आपके एम्प्लॉयी निवेशक, पार्टनर या ग्राहक बन सकते हैं। इसके अलावा इन ग्रुप्स में डिस्कशन बोर्ड और न्यूज़ सेक्शन आदि भी हैं, जो नेटवर्किंग के बेहतरीन मौक़े देते हैं। ग्रुप में होने वाली चर्चाओं का हिस्सा बनकर आप अपनी विशेषज्ञता के अनुरूप अपने विचार कमेंट्स के ज़रिये दूसरों के सामने रख सकते हैं। आप अपने कॉलेज, कंपनी या किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित जॉब सीकर ग्रुप ज्वाइन कर सकते हैं।

सोशल मीडिया से परखे जाते हैं तथ्य

आजकल एच॰आर॰ सोशल मीडिया का काफ़ी इस्तेमाल करने लगा है। यह उम्मीदवारों को तलाशने का एक अच्छा ज़रिया है। इनमें आजकल कोई वेकेंसी पोस्ट करने पर बहुत से उम्मीदवार अपना सी॰वी॰ भेजते हैं। अगर किसी उम्मीदवार के सी॰वी॰ और इंटरव्यू में कही गयी कोई बात संदिग्ध लगती है, तो हम उसके सोशल मीडिया प्रोफाइल की मदद से तथ्यों को परखते हैं। वॉट्सएप पर भी आजकल लोग जॉब सर्च ग्रुप बनाते हैं। कोई परिचित ऐसे ग्रुप्स से जोड़ते हैं।

अपनी इंडस्ट्री के अनुभवी लोगों से मिलते-जुलते रहें

'अपने क्षेत्र के ज़्यादा से ज़्यादा प्रबुद्ध लोगों से मिलें। फिर चाहे वह ऑन लाइन हो या व्यक्तिगत रूप से। ऐसे लोग आपको इंडस्ट्री में मौजूद रिक्तियों के बारे में सूचना दे सकते हैं। अगर उन्हें समस्या न हो तो उन्हें अपने जॉब सर्च ग्रुप में जोड़ें। ग्रुप के दूसरे सदस्यों से भी ऐसा ही करने को कहें।

खुद सकारात्मक रहें और दूसरों को भी सकारात्मक रहने के लिए प्रोत्साहित करें। नकारात्मक विचारों को खुद पर बिल्कुल भी न हावी होने दें।

'ग्रुप के सदस्यों से बातचीत करने का समय निकालें। बहुत दिनों तक ग्रुप पर कोई एक्टिविटी न होने पर उसके सदस्यों की सक्रियता घट सकती है। इससे ग्रुप अपने उद्देश्य से भटक सकता है।

'ग्रुप के सदस्यों को सक्रिय बनाए रखने के लिए ग्रुप की गतिविधियों को दिलचस्प बनाएं। हर एक या दो महीने पर ऑन लाइन या व्यक्तिगत मीटिंग रख सकते हैं। हर बार अलग-अलग सदस्यों को मीटिंग लेने की ज़िम्मेदारी दें। मीटिंग का समय तय करते समय सबकी सुविधा और उपलब्धता का ध्यान रखें। 'अगर ग्रुप के किसी सदस्य को कोई सफलता मिलती है तो उसे ग्रुप में सेलिब्रेट करें। सफल होने वाला सदस्य अपने अनुभव सबके साथ बांटे, ताकि बाक़ी सदस्य भी उनका फ़ायदा उठा सकें। नौकरी पाने के बाद भी वे सदस्य ग्रुप से जुड़े रहें, जो अच्छा होगा। वे बाक़ी सदस्यों को प्रेरित करने और नौकरी तलाशने में मददगार साबित हो सकते हैं।

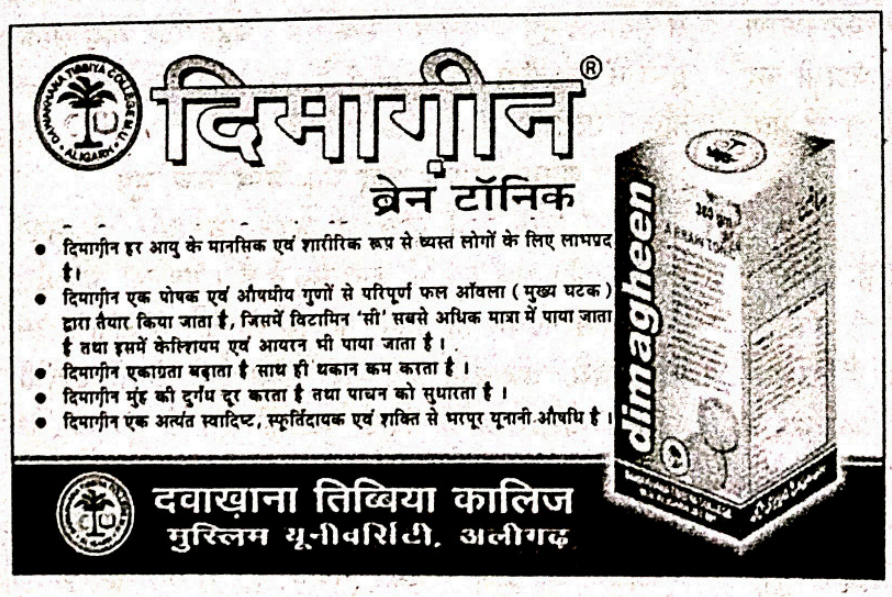

शोर के ख़िलाफ़ समाज और सरकार को खड़े होने की ज़रूरत

■ शबाना अली

यूं तो देश में समस्याओं की कोई कमी नहीं है । यूं कहिए कि हमारा देश कृषि नहीं बल्कि समस्या प्रधान है । लेकिन आजकल एक ऐसी समस्या बहुत समय तेज़ी से बढ़ रही है जिसका राष्ट्रीय स्तर पर समाधान होना ज़रूरी है वरना इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे । यह समस्या है शोर । गांव-क़स्बों से लेकर शहरों तक यह समस्या गंभीर रूप धारण कर रही है । जिधर देखो उधर शोर । सबसे ज़्यादा ख़तरनाक स्थिति महानगरों की है । दस अप्रैल 2016 को केरल प्रदेश के कोल्लम शहर के पुत्तिंगल मंदिर में आतिशबाज़ी की प्रतियोगिता हुई जहां आग लगने से 110 लोगों की मौत हो गयी । शोर का एक भयानक सच यह भी सामने आया । हर साल दीवाली पर करोड़ों रुपये की संपत्ति स्वाहा हो जाती है लेकिन हम धर्म और पर्व के नाम पर उसे बर्दाश्त करते हैं । मंदिर में शायद शोर और आग की प्रतियोगिता हो रही थी शांति की नहीं । जबकि धार्मिक स्थान शांति के लिए जाने जाते हैं । शोर के ख़िलाफ़ लेख लिखने की बात मन में तब आयी जब एक अस्पताल में कान का इलाज कराने पहुंचे लोगों की भारी भीड़ देखने को मिली । डॉक्टरों का मानना है कि व्यक्ति की शोर से श्रवण शक्ति क्षीण होती है । इससे बहरापन बढ़ रहा है लेकिन सरकार और समाज इससे बेख़बर है ।

> ऐसा लगता है कि अगर प्रेशर हॉर्न न बजा तो उन्हें रास्ता नहीं मिलेगा । या फिर उसके बजाने से लोग रोड ख़ाली कर देंगे । हर विज्ञापन में शोर का यह आलम है कि लोगों को विज्ञापन के समय टी॰वी॰ का वॉल्यूम कम करना पड़ता है । विज्ञापन आते ही अचानक टी॰वी॰ से तीन गुना आवाज़ निकलनी शुरू हो जाती है । हर साल दीवाली पर करोड़ों रुपये की संपत्ति स्वाहा हो जाती है लेकिन हम धर्म और पर्व के नाम पर उसे बर्दाश्त करते हैं ।

आज महानगरों से लेकर गांवों तक की बाइकों, स्कूटर सबमें प्रेशर हॉर्न लगे दिखायी दे रहे हैं । हालात यह है कि कोई भी गली, सड़क, मुहल्ला, नगर, कालोनी, बाज़ार इससे अछूता नहीं है, जिधर देखो उधर प्रेशर हॉर्न बज रहा है । ऐसा बहुत बार देखने में आता है कि बिना ज़रूरत लोग बजाए चले जा रहे हैं । कुछ लोग तो सिर्फ़ इसलिए हॉर्न बजाते देखे गये कि लोग उन्हें देखें । यानी ये वे लोग हैं जो दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हॉर्न बजाते हैं । कुछ जगहों और कालोनियों में इन लोगों ने नाक में दम कर दिया है । सरकारी गाड़ियों के चालक भी किसी से कम नहीं है । बसों का आलम यह कि सड़क पर चलता आदमी गिरने की स्थिति में आ जाता है । कमज़ोर दिल के आदमी की क्या स्थिति होगी अनुमान लगाना कठिन नहीं है । कम से कम सरकारी बसों के चालकों से यह उम्मीद की ही जा सकती है कि उनके हॉर्न की आवाज़ बहुत तीखी नहीं हो, लेकिन ऐसा नहीं है । यू॰पी॰ रोडवेज हो, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान की सभी सरकारी बसों की यही हाल है । दिल्ली में भी सरकारी काम कर रहे वाहनों में भी यही हॉर्न बजते सुनायी देते हैं, यहां तक कि स्कूली बच्चों को लाने ले जाने वाली वैनों में भी यही चीखते हॉर्न

सुनायी देते हैं ।

ट्रक चालक तो ख़ैर बहुत पहले से इस मामले में बहुत बदनाम हैं । शायद ही कोई ट्रक ऐसा हो जिसमें बेहद तेज़ आवाज़ का हॉर्न न हो । टैक्सी हो, टेम्पो हो, तिपहिया हो सब प्रेशर हॉर्न के दीवाने हैं । ऐसा लगता है कि अगर प्रेशर हॉर्न न बजा तो उन्हें रास्ता नहीं मिलेगा । या फिर उसके बजाने से लोग रोड ख़ाली कर देंगे । शोर के मामले में हम किसी भी तरह पीछे नहीं हैं । मामला सिर्फ़ वाहनों तक सीमित नहीं है । जब तक पूरी रात जागरण न हो तो भगवान ख़ुश नहीं होंगे । जागरण में लाउडस्पीकर की आवाज़ की कोई सीमा नहीं होती । जो सुने तो ठीक नहीं सुने तो ज़बरदस्ती सुनो । इसी तरह जब तक रिस्पेशन पार्टी में आधी रात मक डीजे न बजे तो समझो वह शादी या पार्टी हुई ही नहीं । मैं व्यक्तिगत तौर पर अज़ान की तेज़ आवाज़ के पक्ष में भी नहीं हूं क्योंकि जिसने नमाज़ पढ़नी है वह अपने समय से आ ही जाएगा । इस तरह देखा जाए तो कोई भी धार्मिक कार्यक्रम बिना शोर के अधूरा है ।

इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया और उसके विज्ञापनों का तो कहना ही क्या । शायद ही कोई चैनल ऐसा हो जो अपना लोगो चलाते समय आवाज़ नियंत्रण में रखता हो । विज्ञापनों ने तो ख़ैर सिर में दर्द करने का ठेका ही ले रखा है । यह ठेका सरकार ने दे रखा है । कोई माई का लाल एक विज्ञापन का नाम बताए जिसका म्यूजिक सामान्य स्केल पर हो । ह्यून्दई कार का विज्ञापन हो, आई॰पी॰एल॰ (क्रिकेट), रसना पेय, हीरो स्कूटी, ट्रम्प स्कूल शू, एम॰एस॰जी॰ मसाले हों, नव नल तेल हो, संतूर साबुन हो, कॉलस्टोन बेडरूम हो, फ्लाइट चप्पल हो, महेन्द्रा की कार हो, हीरो की बाइक हो, सेट वेट हो या फिर व्हिस्पर का विज्ञापन हो, सबका म्यूजिक स्केल सामान्य से तीन गुना सुना गया है । यह तो कुछ नाम लिए जा रहे हैं वरना तो हर विज्ञापन में शोर का यह आलम है कि लोगों को विज्ञापन के समय टी॰वी॰ का वॉल्यूम कम करना पड़ता है । विज्ञापन आते ही अचानक टी॰वी॰ से तीन गुना आवाज़ निकलनी शुरू हो जाती है । दरअस्ल विज्ञापन बनाते समय सामान्य से तीन गुना ज़्यादा म्यूजिक स्केल रखा जाता है । शायद विज्ञापन देने वाली कंपनियों को ऐसा लगता है कि तेज़ आवाज़ से उनका उत्पाद ज़्यादा बिक जाएगा और सामान्य स्केल पर म्यूजिक रखा तो उत्पाद बिकेगा नहीं ।

सिर्फ़ विज्ञापन ही नहीं यही हाल सीरियलों का है । सीरियलों के विज्ञापन में मधुरता नहीं बल्कि कानों को तकलीफ़ पहुंचाने वाले शोर सुनायी पड़ता है । सीरियल और फ़िल्मों में संगीत प्रभाव पैदा करने के लिए होता है जो लोगों को रोचक लगता है लेकिन जब यही संगीत शोर के रूप में सामने आता है तो सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है । कुछ सीरियलों को देखकर ऐसा लगता है कि उसके निर्माता यह मान रहे हैं कि कहानी, अभिनय या पटकथा के कारण नहीं उनका सीरियल शोरनुमा संगीत के कारण देखा जा रहा है । दरअस्ल ऐसी स्थिति शायद इसलिए आयी है कि हमने शोर को संगीत मान लिया है । युवा पीढ़ी की यह बदक़िस्मती है कि उसने आंख खोलते ही संगीत के नाम पर शोर सुना है इसलिए उसने शोर को ही संगीत के रूप में एक्सेप्ट कर लिया है ।

हम ख़ुद शांत रहने के बजाय चीख-पुकार करने लगे हैं । इसलिए अब समय आ गया है कि सरकार शोर के ख़िलाफ़ राष्ट्रव्यापी अभियान चलाए । ऐसा नहीं है कि शोर के ख़िलाफ़ क़ानून नहीं है । क़ानून तो है लेकिन उसे लागू करने की विदेशों की तरह इच्छाशक्ति नहीं है । पुलिस खड़ी देखती रहती है और लोग प्रेशर हॉर्न बजाते रहते हैं । अकेले सरकार के बलबूते इस समस्या का समाधान संभव नहीं है । इसके लिए पूरे समाज को आगे आना होगा । क़ानून का सहारा तो हम इसलिए लेंगे क्योंकि बिना डंडे के हम कोई बात मानने को तैयार नहीं होते । जैसे ही क़ानून का डंडा चलने लगता है हम शराफ़त दिखाने लगते हैं ।

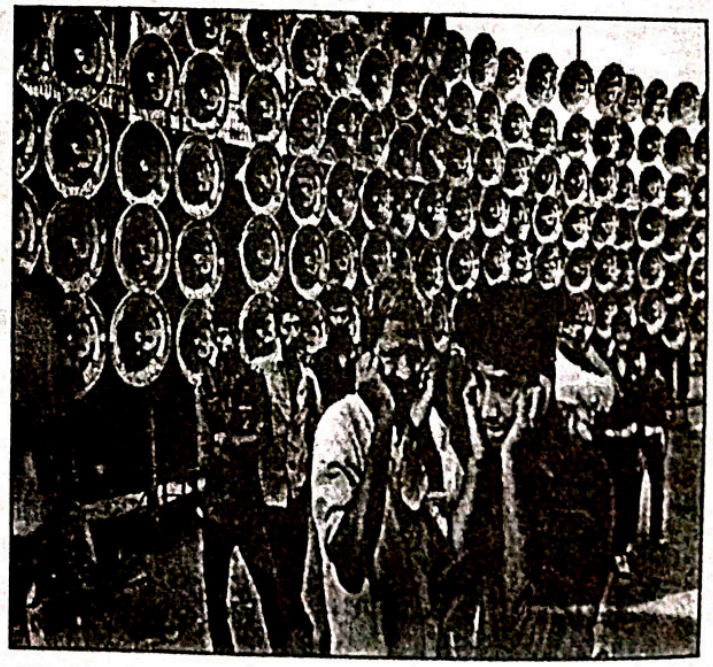

ज़िम्मेदारी

कुछ लोग अपनी ज़िम्मेदारी को बोझ समझते हैं तथा कुछ लोग इसे अपने जीवन का उद्देश्य तथा अपनी ज़िम्मेदारी को अपना कर्म और कर्तव्य मानते हैं । यहां सवाल यह नहीं है कि कौन इसे क्या समझता है, बल्कि सवाल यह है कि आख़िर एक ही बात के लिए भिन्न-भिन्न नज़रिया अपनाने से क्या प्रभाव पड़ता है ।

बोझ या जीने का उद्देश्य हर काम के साथ ही ज़िम्मेदारी जुड़ी रहती है । अगर कहें कि ज़िम्मेदारी को ढंग से पूरा किये बिना किसी भी कार्य की सफलता की उम्मीद ही बेमानी है, तो यह ग़लत नहीं होगा । ज़िम्मेदारी को यदि स्वयं समझ कर पूरा किया जाये तो आत्म संतुष्टि, आनन्द और उल्लास महसूस होगा और ज़िम्मेदारी यदि पूरी करनी पड़ती है तो 'चलो यह काम भी पूरा हुआ' का एहसास हाथ आएगा । अब यह बात तो स्वयं विचार करने की है कि काम ज़िम्मेदारी से होना चाहिए या बोझ समझ कर । और काम करने के बाद आप कैसा महसूस करना चाहते हैं ।

जिस तरह किसी व्यक्ति की चर्चा के समय उसकी छवि ध्यान में आती है जिसमें उस व्यक्ति के आकार प्रकार उसके व्यवहार और उसके आचरण व परस्पर संबंध इन सभी बातों का एहसास होता है ।

जब चर्चा किसी बच्चे की हो तो उसकी मासूमियत उसकी शरारतें उसका भोलापन इत्यादि स्मरण हो आता है । बात किसी मित्र या सज्जन की हो तो उसकी सज्जनता उसका आचरण उसका व्यवहार ध्यान में आता है और चर्चा अगर किसी शत्रु की हो तो उसकी ताक़त और उसकी शत्रुता की बात ध्यान में आती है । उसी प्रकार जब भी किसी कामयाबी के बारे में या किसी कामयाब व्यक्ति के बारे में चर्चा की जाए तो समझ लीजिए इसके पीछे ज़िम्मेदारी का हाथ है कामयाबी का सपना ज़िम्मेदारी को ढंग से पूरा किये बिना देखना बेमानी है । जब जब देश की स्वतंत्रता की चर्चा की जाती है तो उसमें जिन क्रांतिकारियों के नाम बच्चे-बच्चे की जुबान पर होते हैं वह केवल इसलिए कि उन्होंने भी जो ज़िम्मेदारी ली उसको बख़ूबी समझा और पूरे तन, मन व जान न्योछावर करने के लिए भी वे अपनी ज़िम्मेदारी से कभी पीछे नहीं हटे ।

ज़िम्मेदारी से करें अपने स्वप्नों को साकार । काम चाहे छोटा हो या बड़ा उसे ज़िम्मेदारी से करने का मज़ा ही कुछ और होता है ज़िम्मेदारी से काम करने वालों में ही विवेकशीलता, आत्मविश्वास व सकारात्मक सोच की अमूल्य धरोहर उनका मार्ग प्रशस्त करते हुए स्वयं उनके कार्य में कामयाबी की मिसाल बनकर सदैव उनका मनोबल ऊंचा रखती है । पूरे मन से किये गये कार्य ही सही परिणाम पाने का माध्यम बनते हैं और सदा नये से नये आयाम मन से किये जाने वाले कामों में ही सामने आये हैं । जितने भी आविष्कार आज हमारे सामने हैं उनको करने वाले भी साधारण इन्सान थे पत्थर को पहाड़ से लुढ़कते देखकर पहिए की सोच व नया रास्ता तलाश करने वाला भी इस बात से एक नया विकल्प खोजने में जब जुट गया तो ही परिवहन के लिए यह सशक्त माध्यम सामने आया । नयी-नयी तकनीकें नये-नये आविष्कार और हर तरफ़ से दिनों दिन प्रगति के नये रास्ते आज तभी सामने आ रहे हैं क्योंकि आज हमें ज़िम्मेदारी की समझ का एहसास है । यदि अपनी ज़िम्मेदारी को पूर्ण किये बिना किसी चमत्कार की उम्मीद करें तो यक़ीनन बेमानी और निरर्थक होगी ।

आज कोई भी व्यक्ति संस्था समाज या देश अपनी ज़िम्मेदारी को समझे बिना कुछ भी हासिल नहीं कर पायेगा । एक छोटा-सा देश जापान जिसे पूरी तरह से तहस नहस करने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी गयी, वह फिर और पहले से भी कहीं अधिक उन्नत रूप में विश्व भर में अपना स्थान बनाये हुए है, किस दम पर ? यक़ीनन अपनी ज़िम्मेदारी को उद्देश्य समझ कर ही तो । दूसरी और ऐसे बहुत से उदाहरण भी आये दिन सामने आते रहते हैं जहां ज़िम्मेदारी की बात ही नज़र नहीं आती उनको गिनवाने से आपको कुछ हासिल नहीं होने वाला इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि आप अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी करने में कोई कसर बाक़ी न रहने दें ।

● पी॰जे॰ सिंह

दिल्ली का गुड़ियाघर

बच्चों क्या आपने दिल्ली का गुड़ियाघर देखा है ? दिल्ली के नेहरू भवन में स्थापित यह विशाल गुड़ियाघर आप बच्चों को चाचा नेहरू का उपहार है । इस गुड़ियाघर की शुरुआत तो प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट के शंकर पिल्लै ने की थी, उनकी कोशिशों के बिना गुड़ियाघर नहीं बन सकता था, पर चाचा नेहरू के भी प्रयासों के बाद आज ये संसार के मशहूर संग्रहालयों में गिना जाता है ।

कार्टूनिस्ट शंकर नेहरू जी के साथ रहने वाले पत्रकारों के समूह में थे जब नेहरू जी प्रधानमंत्री थे । वे चाचा नेहरू के साथ देश विदेश जाते और वहां से तरह तरह की गुड़ियां इकट्ठी करते । जब उनके पास 500 गुड़ियां इकट्ठी हो गयीं तब उन्होंने उन्हें देश भर के बच्चों को दिखाना चाहा और उन्होंने देश के कई स्थानों पर बच्चों के चित्रों के साथ इन गुड़ियों की प्रदर्शनियां भी आयोजित कीं । लेकिन इस प्रयास में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था । बार बार बांधने, खोलने और यहां से वहां ले जाने में उन गुड़ियों की टूट-फूट हो जाती जिससे शंकर को बहुत दुख पहुंचता ।

ऐसे ही एक बार चाचा नेहरू दिल्ली में उनकी प्रदर्शनी देखने अपनी बेटी इंदिरा के साथ पहुंचे । तब शंकर ने गुड़ियों को हुए नुक़सान के बारे में उन्हें बताया । तब चाचा नेहरू ने उन्हें सुझाव दिया कि क्यों न इन गुड़ियों का कोई स्थायी संग्रहालय बना दिया जाए । तब इसके बाद जब दिल्ली में चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट के भवन का निर्माण हुआ तब उसका एक भाग गुड़ियाघर के लिये सुरक्षित कर दिया गया ।

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग पर बने इस भवन के एक हिस्से में इंग्लैण्ड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अन्य यूरोपीय देशों की गुड़ियां प्रदर्शित की गयी हैं, वहीं दूसरे हिस्से में ऐशियाई देशों, मध्यपूर्व, अफ्रीका तथा भारत की गुडियां सजा कर रखी गयी हैं । यहां देश-विदेश की 6500 गुड़ियों का संग्रह है । ● गरिमा

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



Asian Optics
a multibrand showroom
SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184
Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

"इल्म की शम्मा रौशन करें, जन्नत के हक़दार बनें"

तआवुन की अपील

दर्सगाह इस्लामी

इस्लाम नगर रसूलपुर पो॰ : डी॰ एम॰ सी॰ दरभंगा-846003 (बिहार)
E-mail : darsgahislami01@gmail.com

दर्सगाह इस्लामी इस्लामनगर दरभंगा उत्तरी बिहार का पुराना तालीमी इदारा है जो जमात-ए-इस्लामी हिन्द की तालीमी पॉलिसी के तहत 1951 ई॰ में क़ायम हुआ था। यह सूबा बिहार की पहली दर्सगाह है जहां दीनी व दुनियावी तालीम दी जाती है। ग़रीब बच्चों को मुफ़्त तालीम दी जाती है। इसके अलावा शोबा-ए-हिफ़्ज़ भी क़ायम है। दर्सगाह के अख़राजात साहिब-ए-ख़ैर हज़रात के तआवुन से पूरे होते हैं।

-दर्सगाह को तआवुन की शक्लें-

1. अपने मरहूम वालिदैन या किसी रिश्तेदार के नाम से बिल्डिंग फ़ंड में एक कमरे की तामीर के लिए रु॰ 500000/ देकर सदक़ा-ए-जारिया के काम में शरीक हों।
2. ग़रीब बच्चों की तालीम और किफ़ालत पर फ़ी बच्चा रु॰ 2500 माहाना इनायत करें।
3. एक उस्ताद की माहाना तन्ख़ाह रु 6000 इनायत करें।

मालूम हो कि यह वही जगह है जहां मौलाना मौदूदी (रह॰) 1943 ई॰ में तशरीफ़ लाए थे। आप से भरपूर तआवुन की गुज़ारिश है।

अपीलकर्ता

एस॰ एम॰ रिज़वानुल्लाह
(सेक्रेटरी)
मोबाइल नं॰ : 09470730300

मुहम्मद मोहीउद्दीन ख़ां
(प्रिंसिपल)
मोबाइल नं॰ : 09122466196

चेक या ड्राफ़्ट के लिए :

DARSGAH ISLAMI DARBHANGA
A/C NO- 10436672087
SBI- D.M.C BRANCH DARBHANGA
IFS CODE- 0003025

Posted on 20-21 May 2016
June 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.05.2016
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी क्रान्तिकारी की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

Estd : 1969 Regd No. 13263/2010

درسگاہ اسلامی

پرانی منصفی، دربھنگہ۔ ۸۴۶۰۰۴ (بہار)

दर्सगाह इस्लामी

पुरानी मुंसिफ़ी, दरभंगा, बिहार



Mob : 9204316287 (Office) Principal, 9709477529 (Secretary)

इस्लामी माहौल में सी॰ बी॰ एस॰ सी॰ (अंग्रेज़ी मीडियम)
निसाब पर मुश्तमिल असरी उलूम का वाहिद मर्कज़

ज़ेर सरपरस्ती : एम॰ ए॰ जौहर एजूकेशनल सोशल सर्विस ट्रस्ट

इम्तियाज़ी ख़ुसूसियात

1- दीनी व असरी उलूम का हसीन संगम
2- बासलाहियत और तजरिबेकार असातिज़ा की ख़िदमात
3- सोम व सलात और अख़लाक़ी आदाब की अमली तरबियत
4- कमज़ोर तलबा पर अलग से ख़ुसूसी तवज्जोह

अल-मुलतमिस
सद्र जनाब डॉ॰ अब्दुल वहाब
सेक्रेट्री जनाब असद अहमद